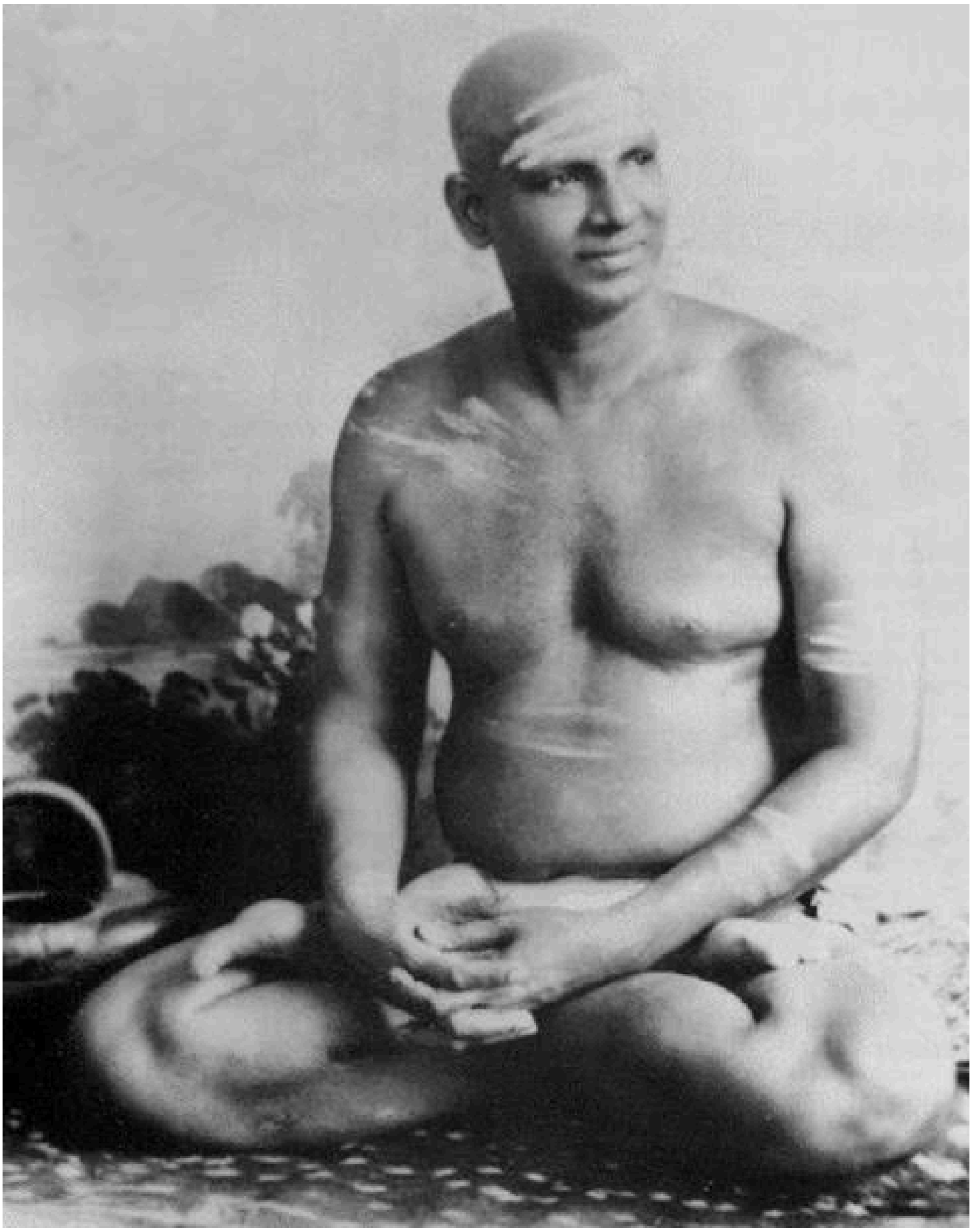




डॉ. एस. राधाकृष्णन

हिंदू-दर्शन

प्रभात

ह दिंू–ूदर्नश

डॉ. एस. राधाकृष्णन

प्रभात

पेपरबैक्स

www.prabhatbooks.com

प्रकार्क

प्रभात पेपरबैक्स

प्रभात प्रकार्न प्रा. लि. का उपक्रम

4/19 आसफ अिी रोड, नई हदल्ली-110002

फोन : 23289777 ेल्पिाइन निं.:7827007777

इ-मेि : prabhatbooks@gmail.com वेब हिकाना :www.prabhatbooks.com

सस्किरण 2022

अनुवाद

श्री आनदिं अभय

मूल्य

दो सौ रुपए

मुद्रक

नरिा प्प्रटिंस,श हदल्ली

HINDU-DARSHAN
by Dr. S Radhakrishnan

Published by PRABHATPAPERBACKS
An imprint of PrabhatPrakashan Pvt. Ltd.
4/19 Asaf Ali Road,New Delhi-110002
by Arrangementwith Niyogi Books

ISBN 978-93-5266-363-7

₹200.00

अनुक्रम

ह दिंू–दर्नश 4
ह दिंू ूधमश.. 15
इसिामऔरभारतीयप्वचार 29
ह दिंू ूप्वचारऔरईसाईधमशलसदधातिं 38
बौदध धमश 54
भारतीय-दर्नश 58
डॉ. एस.राधाकृष्णन 67

ह दिंू–दूर्नश

इस अध्यायमें में ह दिंू ूप्वश्वास के मिू कारकों का पि िनेके बजाय उनकी प्ववेचेना प्रस्तुत कर र ा ूँ ताकक इसके दार्नशनक लसदधातिं, धालमकश अनुभवों, नैनतक चररत्र और पारिंपररक प्वश्वास को प्रस्तुत ककया जा सके।

दार्नशिक आधार

ह दिंू ूधम शएक उत्कृष्ट युक्क्तसगिंत चररत्र के रूप में जाना जाता ै। अपनी सपिूंण शस्वप्नदर्ी आर्ाओंकी बेचैन भिू-भिुैया, व्याव ाररक आत्मत्याग, सकिंीण शधम शलसदधातिं तथा अप्वचारी सा लसकता के साथ एव िंचार या पाचूँ स स्त्राक्धधयों के आध्याक्त्मक व ईश्वर मीमासिंा के अथक प्रयासों के पश्चात् ्ह दिंू ूप्वचारकों ने इसकी समस्याओ िंके साथ-साथ सत्य की प्वश्वसनीयता व वास्तप्वकता की अनुभूनत के साथ इसे ेसमझनेका प्रयास ककया ै। चूँकक इसका हदर्-ननदेर् ब्राह्मण प्वचारकों के दवारा ककया गया ै, इसलिए इसे ेतथाकधथत ब्राह्मणवादी सभ्यता के रूप में भी जाना जाता ै और उन् ें मुददों को भौनतक अनुभवों के पररणामों के आधार पर बबना ककसी भावनात्मकता के समझनेके लिए प्रलर्क्षित ककया गया ै।

ह दिंू ूप्वचारकों के अनुसार य ससिंार नश्वर ै। य ससिंार स्वतः ी एक अतिं ीन गनतमान प्रकक्रया के रूप में ै। व पूछते ैं, "क्या य स्वतः ी नष्ट ो र ा ै या कफर ननयनत इसे ेसमाप्त कर देगी ?" और कफर जवाब भी देते े ैं, "इस ससिंार में कुछ ऐसा भी ै, जो कक नश्वर न ी िं ै और व ै ब्रह्म !" अनतिं की य अनुभूनत सभी को कभी-न- कभी ोती ै, खासतौर से तब जब म सवर्शक्क्तमान की झिक या कफर उसकी प्वचारमग्न अनुभूनत म सूस करते े ैं, जो कक में भव्यता के एक आवरण सेढक िती ै। य ूँतक कक जीवन के पीडादायक पिों में भी, यानी जब म ननधनश या अनाथ ोते े ैं, तब भी ममें मौजूद सवर्शक्क्तमान ईश्वर में म सूस कराता ै कक इस ससिंार का दुःख या त्रुहटयाँ लसफश एक बडेनाटक के घटनाक्रम ैं और इनका अतिं एक क्र्क्त, भव्यता एव िंप्रेमे के रूप में ी ोगा।

उपननषदों के अनुसार-"यहद इस ब्रह्माडिं में आनदिं न ो, तब इस ससिंार में कौन जी सकता ै या सासँू िे सकता ै ?" दार्नशनक रूप सेसत्य एक आत्म समरूप ब्रह्म ै, जो कक सभी में पररिक्षित ोता ै और ससिंार की रचना की पृष्ठभूलम बनाता र ता ै। धालमकश रूप से इसे ेईश्वरीय आत्मचेतना क ा जाता ै, क्जसके गभ शमें सपिूंण श सृक्ष्ट का प्वकास और अतिंविशन समाह त र ता ै। इस रूप में ह दिंू ूधम शके सचिंानि का आदर् शअनिंतम सत्य का एकत्व ी र ा ै। ऋग्वेद सवर्शक्क्तमान वास्तप्वकता यानी एकात्मता पर ी प्वरे्ष बि देते े ैं। उपननषदों के अनुसार, एक ब्रह्म को ी उसके कायों के आधार पर कई नामों से पुकारा गया ै। बत्रमूनत शकी अवधारणा म ाकाव्य कािं में ी उत्पन्न ुई थी और पुराणों के समय तक पूणरूशपेण स्थाप्पत भी ो चुकी थी। मानव चेतना की अनुरूपता, क्जसेबत्रआयामी कक्रयार्ीिता यानी बोध, भावना एव िंइच्छा को सवर्शक्क्तमान यानी सत्,् धचत

ह दिंू–दर्नश 5 और आनदिं जैसे ेवास्तप्वकता, बुदधधमानी और प्रसन्नता के रूप में व्यक्त ककया गया ै। सत्त्व या समधचत्तता से

आर्य बुदधध, रजस या ऊजा शका सबिंधिं ओजपूण शभावना और तमस से आर्य ज्ञान और ननयत्रिंण के अभाव से ै तथा ये तीनों ी सभी तर के अक्स्तत्व के प ि ू ैं। य ाूँ तक कक ईश्वर का अक्स्तत्व भी इन बत्र-ननयमों का अपवाद न िीं ै। सृकृष्ट के तीनों काय शजैसे ेननमाणश, क्स्थनत और िय यानी प्वनार् को इन तीनों गुणों-रजस, सत्त्व

और तमस-के रूप में धचक्ह्नत ककया गया ै। प्वष्णु, क्जन् ें इस ब्रह्माडिं का सरिंकि माना गया ै, वे ी रजस और

सत् ्गुणों के स्वामी क े गए ैं तथा ब्रह्मा, जो कक सृकृष्ट के रचनयता के रूप में ैं, व रजस तथा लर्व सृकृष्ट का प्वनार् करनेविो गुणों के स्वामी ैं। य ाूँएक सवर्शक्क्तमान के इन तीन गुणों को अिग-अिग व्यक्क्तत्वों में बाटूँा गया ैऔर इनमें से प्रत्येक अपनी ऊजा शया र्क्क्त के अनुसार काय शकरता ै। इस प्रकार ब्रह्मा, प्वष्णु ्और लर्व की र्क्क्तयाूँक्रमर्: सरस्वती, िक्ष्मी और किी बताई गई ैं। स्पष्ट रूप से क ा जाए, तब ये सभी गुण और इनके काय शएक सवर्शक्क्तमान के अतिंगतश इतनेसतिंुलित ढिंग से समाह त ैं कक पूरी तर से ककसी एक ी गुण को न िीं रखा जा सकता ै।

1. व अबोधगम्य ईश्वर, जो कक सवव्शयापी, सवर्शक्क्तमान और सवज्ञश ै तथा य प्रत्येक मन में अिग-अिग रूपों में प्वदयमान ै।
2. आहदकिीन ग्रथिंों के अनुसार सवर्शक्क्तमान ईश्वर के ननराकार रूप का आकार क्जज्ञासुओ िंकी स ायता के लिए प्रस्तुत ककया गया ै।

दार्नशनक मनःक्स्थनत में खिुपन की सोच के साथ देखें, तब ह दिंुओिंका प्वश्वास एव िंधम शकी सापिेता का सबिंधिं िोगों के आम चररत्र सेजुडा ुआ ै। इनके अनुसार धम शएक दैवीय लसदधातिं मात्र न िीं ै, क्जसेम अपनी इच्छानुसार छोड या पकड सकते े ैं। य तो एक प्रजानत का आध्याक्त्मक अनुभव एविं इसके सामाक्जक प्वकास का िेखा-जोखा तथा समाज का एक आतिंररक तत्त्व ै। प्वश्वासों की य लभन्नता अप्राकृनतक न िीं ै। इसका सबिंधिं रुधच और मानलसकता से ै यानी रुधचनाम वैधचबत्रयात ।

जब आयों का सपिंकश य ाूँके मिू ननवालसयों से ुआ, जो कक सभी तर के देवताओिं की पूजा करते ेथे, तब उन् ें अपने प्वश्वासों के पररवनततश ककए जानेकी भावना एकाएक म सूस न िीं ुई थी। आखखरकार सभी िोग एक ी सवर्शक्क्तमान को मानतें। भगवदगीता के अनुसार, ईश्वर अपनेक्जज्ञासुओ िंकी इच्छाओिंको लसफश इसीलिए मना न ी िंकरता ै कक व उसकी सवोच्च सत्ता में प्वश्वास न िींकरते े ैं। एक ननयमों के समू से दूसूरे समू की तरफ तेजी से जानेके प्रयास में अतीत के साथ एक तीव्र असबिंदधता तथा ननरिंतर भ्रम की क्स्थनत उत्पन्न ोती ै। इस दुननया के म ान् ्लर्क, क्जनके पास पयाप्शत ऐनत ालसक समझ र ी ै, उन् ोंने इस दुननया की अपनी पीढी के उन िोगों पर अपने प्वचारों का दबाव देकर बचाने की कोलर्र् न िींकी थी, जो िोग उनकी बातों को समझ न ी िंसके या कफर उन् ोंने उनका समथनश न िींककया था। य ाूँतक कक नैनतक लर्क ईसा ने भी तिाक के मसिे पर उच्च आदर्वशाद के बजाय मूसा की य ूहदयों से कानूनी माूगँ पर ररयायत की बात क ी थी। इस सदिंभ श में िधमी मत के लिए माक्स शx11ff और ल्यूक svi. 18 तथा मैथ्यू v.32, viv9.

हिंदू-दर्शन 6 हिंदू प्रचारकों ने अपने स्वयं के जीवन में आदर्शवादी मानदंडों का पालन तो किया था, पर वे लोगों को

इसके लिए बहुत इच्छुक नहीं पा रहे थे, इसलिए उन्होंने इसके लिए बलपूर्वक बाध्य करने के बजाय सावधानी से प्रेरित किया। वे मानते थे कि जन समूह अज्ञानतावश निचले दर्जे के भगवानों को पूजता है और इसीलिए उनका अनुरोध था कि ये सभी एक सर्वशक्तिमान के अधीन हैं। कुछ लोग अपने भगवानों को जल में, कुछ स्वर्ग में और अन्य अलग-अलग चीजों में देखते थे, जबकि बुद्धिमान जानते थे कि वास्तविक ईश्वर सर्वव्यापी है तथा प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। कमजोर मन के लोग ईश्वर को मूर्तियों में तथा सुदृढ़ मन ईश्वर को सभी जगह पाता है।

हिंदू-दर्शन और धर्म इस संसार में निरंतर विकास और अंतर्विलयन को एक ब्रह्मांडीय स्पंदन के रूप में लेता है, जिसमें इसकी स्थिति मेरा विश्राम और क्रियाशीलता के रूप में रहती है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड ईश्वर की अभिव्यक्ति है। सायन के अनुसार, सभी चीजें सर्वशक्तिमान ईश्वर की ही अभिव्यक्ति हैं। ये सभी जीव अलग-अलग स्तरों में नजर आते हैं। इनमें से जो साँस लेते हैं, वे उच्च स्तर पर हैं तथा कुछ ने अपने मस्तिष्क को विकसित किया है और उनके पास ज्ञान है तथा इनमें से सर्वोच्च वे हैं, जो सभी जीवों में ब्रह्म का बोध महसूस करते हैं। इन सभी भिन्न-भिन्न रूपों के मूल में एक ही आत्मा विद्यमान है।

मानव में विद्यमान असीमित स्थितियाँ संसार की समाप्ति होने वाली सीमित स्थिति से संतुष्ट नहीं होती हैं। हमारी समस्या इस वास्तविकता की है कि हम स्वयं में विद्यमान ईश्वर को नहीं महसूस करते हैं। यदि हम स्वयं में विद्यमान सीमित और नश्वर से बच जाते हैं, तब स्वतंत्रता हमारे अधिकार क्षेत्र में रहती है। हम अपने जीवन में जितना अधिक असीम को शामिल करते हैं, हमारा स्तर उतना ही ऊपर उठता है। इसी स्थिति की उच्चतम ईश्वर-अभिव्यक्ति को ईश्वरीय अवतारों के नाम से भी जाना जाता है। यह कुछ अलग चमत्कारिक प्रदर्शन नहीं, बल्कि आम स्थिति से अलग सर्वोच्च सिद्धांतों की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। गीता के अनुसार-" यद्यपि ईश्वर सर्वव्यापी और सभी में विद्यमान होता है, पर स्वयं को विशेष स्तर तक उन्हीं में अभिव्यक्त करता है, जो भव्य होते हैं। ऋषियों, बुद्धों, पैगंबरों या मसीहाओं में ब्रह्मांडीय आत्मा की तीव्र अभिव्यक्ति होती है। गीता यह दावा करती है कि वह आवश्यकता पड़ने पर प्रकट भी होंगे।" जब निम्न स्तर का भौतिक स्वभाव जीवन पर अपना प्रभुत्व बनाएगा, तब राम या कृष्ण, बुद्ध या ईसा जैसे महान धर्म की रक्षा के लिए उत्पन्न होंगे।

ऐसे व्यक्तियों में जो हमारी बोध-शक्ति से बाहर हैं तथा प्रेमयुक्त हृदय के स्वामी हैं, वह में प्रेम और सदाचार के लिए प्रेरित करते हैं, उन्हें हम ईश्वर के रूप में देखते हैं। वह में सत्य और जीवन के मार्ग दिखाते हैं। वह स्वयं की अंध उपासना का निषेध भी करते हैं, क्योंकि इसके उस आत्म महानता के एहसास में कमी महसूस होती है। राम ने स्वयं को एक व्यक्ति के पुत्र से अधिक कुछ नहीं समझा था। एक हिंदू जिसे अपने धर्म पर थोड़ा भी विश्वास है, वह मानवता की सहायता करने वाले सभी लोगों का सम्मान करने के लिए तैयार रहता है। उसे यकीन होता है कि ईश्वर किसी भी शरीर में अवतार ले सकता है जैसे ईसा या बुद्ध के रूप में भी। यदि ईसाई

ह दिं–ूदर्नश 7 प्वचारक य स्वीकार करें कक ईसा की मध्यस्थता के बबना भी ईश्वर से सपिंकश और उदधार ो सकता ै

ै, तब ह दिं ू
ईसा के धम शके आवश्यक कारकों को प्रसन्नतापूवकश स्वीकार कर िंगे। ईश्वरीय अलभव्यक्क्त मानव व्यक्क्तत्व का अनतक्रमण न िीं ै, बक्ल्क य मानव की वास्तप्वक आत्म-अलभव्यक्क्त का उच्चतम स्तर ै, क्योंकक मानव का वास्तप्वक चररत्र दैवीय ै।

ममें मानवीय राश्वत अक्स्तत्व का ननरिंतर प्रकटीकरण ी जीवन का उददेश्य ोता ै। इसकी सामान्य प्रकक्रया कम शया नैनतक कारणत्व से ी सचिंालित ोती ै। ह दिं ूधम शइस तर के एक ईश्वर में यकीन न िींकरता ै कक व अपनेन्याय के आसन पर बैिकर प्रत्येक मामिे का उसकी गुणवत्ता के आधार पर फैसिा करता ै। व अपनी इच्छा सेन्याय करते ुए दिंड को बढाता या उससे मुक्क्त हददिाता ै। चूँकक ईश्वर प्रत्येक व्यक्क्त में प्वदयमान ै, इसलिए व्यक्क्त की प्रकृनत के अनुसार कम शका ननयम िागू ोता ै। प्रत्येक पि मनुष्य अपनी स्वय िंकी पडतिा पर र ता ै तथा उसका प्रत्येक ईमानदार कम शउसके राश्वत प्रयास में बे तर लसदध ोगा। जब तक मनुष्य ईश्वर की एकात्मकता के साथ स्वय िंको समाह त न कर िें, मारा य चररत्र-ननमाणश जारी र ेगा। ईश्वर की सतिंानें, क्जनकी आखूँों में जारों सिा एक हदन के समान ै, व यहद एक जीवन में पूणतशा के अपने िक्ष्य को ालसि न िींकर पाते ैं, तब भी उन् ें तार् ोनेकी जरूरत न िीं ै। सभी ह दिं ूपुनजन्शम की अवधारणा को स्वीकार करते ैं।

य ससिंार मारी त्रुहटयों सेभरा ुआ ै। मारा खडिंडत जीवन ी सृकूष्ट की रचना में समाह त ोता ै और इसे ेपुनव्यवशक्स्थत करने की जरूरत ै। य ब्रह्माडिं एक िबिंसमय से बार-बार प्रकट और िुप्त ोता र ा ै तथा य ननरिंतर रूप सेएक अकल्पनीय अनतिंकिा के आने तक ोता भी र ेगा।

धार्मकश अिुभव

धम शलसफश एक प्रस्ताव या सूत्र न िीं ै, बक्ल्क इसका उददेश्य व्यक्क्त को इस योग्य बनाना ै कक व स्वय िंमें ईश्वर की अनुभूनत कर सके तथा स्वय िंको उसकी एकात्मकता के साथ प्वकलसत करे। इस धालमकश अनुभूनत तक प ुँचने का माग शन िींननधारशरत ककया जा सका ै। मनुष्य की आत्मा की प्रकृनत अनतिं ै तथा इसमें असीलमत सभिंावनाए ूँभी ैं एव िंक्जस ईश्वर की उसे ेतिार् ै, व अनतिं और अपररलमत ै। इस अनतिं आत्मा और अनतिं वातावरण की आपसी प्रनतकक्रया को एक सीलमत आकार में सकिुंधचत न िींककया जा सकता ै। ह दिं ू प्वचारकों के अनुसार, जीवन की इस कभी न थकनेवािी क्स्थनत को एक स्थायी मापदिंड में न िींसीलमत ककया जा सकता ै। एक प्रचलित सूक्क्त के अनुसार क्जस तर से एक धचडडया आकार् में उडती ै या कफर मछिी समुद्र में तैरते ेसमय अपनेपीछे ननरा्न न िींछोडती ै, िीक इसी प्रकार क्जज्ञासुओ िंदवारा ईश्वर को प्राप्त करने का माग श भी नजर न िींआता ै। उपननषदों के ऋप्षयों, य ूदी पैगबिंरों और धमों के सस्िंथापकों ने भी ईश्वर की वाणी सुनी ै और उनकी उपक्स्थनत भी म सूस की ै। ईश्वर अपनेभक्तों के प्रनत पूरी तर से ननष्पि ै, चा े व क्जस भी माग शसे उसके पास प ुँचे। गीता में भगवान् ्क ते ैं कक 'कोई भी, ककसी भी रूप में मेरे पास आए, म ैंउस तक प ुँचूँगा।'

मानव चेतना की बत्रआयामी कक्रयार्ी्ता को तीन आधारों- ज्ञानमाग,श भक्क्तमाग शऔर कममशाग शमें प्वभक्त ककया गया ै। प्वचार, भावना और इच्छा अिग-अिग गुण न ीिं ैं, बक्ल्क अनुभव के नजर आनेवािे प ि ू ैं। इनमें सेप्रत्येक का सपूिंणतशा के लिए अपना स योग ोता ै और य दूसूरों के दवारा प्रभाप्वत भी ोता ै। स ी ज्ञान, स ी इच्छा और स ी कम शसाथ-साथ चिते। ैं इनमें से प्रथम में सत्य से अवगत कराता ै तथा दूसूरा इसके लिए प्रेम उत्पन्न करता ै और तीसरा जीवन को आकार प्रदान करता ै। सविंदनाप्व ीन ज्ञान में किोर हृदय विाा बनाता ै तथा बबना ज्ञान की भावना एक उन्माद की भानूँत ै तथा प्ववेके ीन कम,श क्जसमें प्रेम न ो, व एक बेचैनी और अथ शीन परिंपरा मात्र ै। य तीनों ी एक पूण शजीवन के समग्र अनुभव के लिए म त्त्वपूण श ैं। जब अिग-अिग िोगों में इन तीनों ी क्स्थनतयों में पररवतनश आनेगता ै, तब उनके जीवन में अिग-अिग रास्तों सेसमस्याएूँभी आनेगती ैं। गीता के अनुसार, शुदधीकरण के लिए ज्ञान या बुदधधमानी से बे तर और कुछ भी न ीिं ै। उपननषदों में प्वदवान् मुनन नारद और क्जज्ञासु सनत कुमार के बीच वाता शके प्रमुख वाक्य में बताया गया ै कक ज्ञान लसफश ताकककशक लरि् न ीिं ै, क्जसे मात्र र्धदों में ी व्यक्त ककया जा सके।" मनुष्य की प्रकृनत स्वतत्रिं और बुदधधमान ै, परिंतु मारी सीमाएूँमें मारी वास्तप्वकता से दूरू करके में त्रुहटयों में डाि देती ैं। ताकककशक प्रश्न य न ीिं ै कक व्यक्क्त इसेक्यों जानता ै, बक्ल्क व क्यों और कैसे इसे जाननेमें

सारीसीमाऍबौदधकताकी मूि व जब में वास्तप्वकता का अनुभव ोता ै, तब मारा बौदधधक प्वकास इन सीमाओं को तोड देता ै। ज्ञान की य क्स्थनत, बोध और प्रतीकों से मुक्त तथा वास्तप्वकता के नजदीक ोती ै। सकिंल्पनात्मक अवधारणा और ताकककशक लरि् में वास्तप्वक बुदधधमानी की तरफ िे जाने में स ायक ोती ै। गीता ज्ञानम् प्वज्ञान सह तम् यानी अतिंः प्रज्ञा के साथ ताकककशक िमता पर भी बि देती ै। बबना ताकककशक स योग, य अिंत:प्रेरणा लसफश भावना के ी रूप में र ती ै। गीता के अनुसार सत्य की चेतना सवव्शयापक ै तथा म इस अनुभव को अपनेप्राथनशामय दृक्ष्टकोण से प्राप्त कर सकते ैं। जब म अपने बौदधधक अ िं को समाप्त करके अपनी मानलसकता को ग्र णर्ी् बनाते ैं, तब म स्वग शसे आनेवािी समीर के लिए स्वय िंको तैयार करते ैं। अनुर्ालसत योग मारे मक्स्तष्क को ननःर्धदता में सवर्शक्क्तमान की वाणी सुनने के लिए प्रलर्क्षित करता ै, तत्पश्चात् म स्वय िंमें आत्मा की प चान म सूस करते ैं।

ईश्वर की सक्रिंनात्मक तिार् का माग शधीमा और कष्टप्रद ोता ै। इस सृक्ष्ट के परमप्पता एव िंरचनयता की तिार् कहिन ै। मारा जीवन ब ुत ी छोटा और तिार् ब ुत ी धीमी ोती ै। मारे लिए इसका इिंतजार मुक्श्कि ै। में उसको देखने की ब ुत ी जल्दी र ती ै। म कुछ ऐसेमतों को अपनाना चा ते ैं, जो कक में जीवन में क्स्थरता प्रदान करें और कुछ करने और पानेके सदिं ों से मुक्त करें। ईश्वर तक प ूँचने में िोगों की अधीरता उन धूत शिोगों के लिए ऐसा अवसर प्रदान करती ै, जो र्ीघ्र मिो की तिार् में र ते ैं और ऐसेिोगों में यकीन भी करते ैं। अिंधप्वश्वास और चमत्कार आम िोगों के जीवन का एक ह स्सा बन जाते ैं। ब्राह्मणवादी परिंपरा में तकश पूरी तर से त्याज्य न ीिंथा। सत्य की समझ िोगों के जीवन को ननयबिंत्रत करती ै। दर्नश के उत्कृष्ट सत्य को आम िोगों की समझ के लिए िघु कथाओंऔर कथाओंके माध्यम से बताया गया ै, ताकक सभी िोग जीवन के कहिन एव िंजोखखम भरे माग शको सुरक्षित पार कर सकें तथा सभी जग आनदिंपूवकश र ते ुए

स ी ज्ञान प्राप्त कर सकें। पुराणों की क ाननयाँूकमजोर मन के िोगों को बे तर क्स्थनत में िाते े ुए उनकी आतिंररक भावना को सुदृढ बनाती ै।

ह दिं ूप्रवचारकों ने देर् भर में व्याप्त आराधना के सभी रूपों को स्वीकार करते े ुए दैवीय आराधना के रूप में इन् ें उत्कृष्ट रूप हदया ै और य ी ईश्वर की प्रवदयमानता भी ै। लर्वपुराण में वखणतश एक श्िोक के अनुसार- "ईश्वर की प्रवदयमानता की वास्तप्वक अनुभूनत ी उत्तम क्स्थनत ै। दूसूरा दजाश ध्यान और धचतिंन का ै तथा तीसरा स्तर प्रतीकों की आराधना का ै, क्जससे ेसवर्शक्क्तमान का स्मरण ोता ै तथा बौधा स्तर परिंपराओ िंऔर पप्वत्र स्थानों की तीथयशात्राओिंका ोता ै।"

ऋग्वेद में मूनतपूशजा का उल्िेख न ीिं ै। इसका प्रचिन बाद में आया ै। इसे ेअपूण शप्वकास के स्तर के साथ जोडकर देखा जाता र ा ै। मानव का रुझान सभी चीजों में ईश्वर को देखनेका र ा ै तथा व ईश्वर को सधचत्र रूप में समझता ै। व प्रतीक और चिन्ह के अिावा अपने मानलसक दृक्ष्टकोण को व्यक्त न ीिंकर सकता ै। िािाँकक अपयाप्शत प्रतीक भी वास्तप्वकता की अलभव्यक्क्त ो सकते ैं तथा जब तक वे ईश्वर की प्राक्प्त ेतु मानव प्रयासों में स ायक ोते े ैं, वे सह्य भी ोते े ैं। य प्रतीक तब तक न ीिंिंते, जब तक इनसे ेउधचत दृक्ष्टकोण लमिता र ता ै।

मूनतपूशजा के सदिंभ शमें प्रो. धगिबटश मरे के फोर स्टेजेज ऑफ ग्रीक ररीजन से उदधरण ैं, जो कक प्रतीक उपासना में ह दिंओु िंके दृक्ष्टकोण का समथनश करते े ैं। "परमप्पता ईश्वर जो कक सूय शऔर आकार् से भी पुराना ै तथा समय और दीघकशिा से भी बडा ै तथा इसके प्रवा का कोई नाम न ीिं ै एव िंइसेन तो ककसी आखूँ से देखा जा सकता ै और न ी ककसी आवाज सेइसका उच्चारण ी ो सकता ै। ककिंतु म, जो कक उसकी प्रवदयमानता को समझने में असमथ श ैं, इसलिए इसके लिए ध्वनन, नाम और धचत्रों के रूप में सोना, चाँदी, ाथीदाँत, पेडों, नहदयों, प ाडों की चोहटयों और मूसिधार वषा शका स ारा िेते े ैं। म अपनी कमजोररयों के कारण एक सािंसाररक प्रेमी की भााँनत इस सिंसार में जो कुछ भी सुदिंर ै, उसकी प्रकृनत के रूप में उसका नाम दे देते े ैं। इनके लिए अनतसुदिंर दृश्य उनके परमप्पता की वास्तप्वक प्वर्ेषता ै, परिंतु स्मृनत के लिए वे वीणा, छोटी बरछी, लस िंासन, खेि का मैदान या इस सिंसार की ऐसी और भी चीजेंअपनाते े ैं, क्जससे ेउनके परमप्पता की स्मृनत बनती ो। इन छप्वयों के बारे में मुझे धारणा बनाने की क्या आवश्यकता ै? िोगों को समझनेदें कक ईश्वर क्या ै? इन छप्वयों के बारे में मुझे ेफैसिदेने की क्या आवश्यकता ै? यहद ग्रीस के िोग ईश्वर को फीडडअस की कृति में देखते े ैं, लमस्र के िोग परुओ िंकी आराधना करते े ैं तथा कोई नहदयों या अक्ग्न में ईश्वर को देखता ै, तब भी मुझे ेइस अतिंर से नाराजगी न ीिं ै; उन् ें ईश्वर को याद करने दो, उससे ेप्रेम करने दो और उसे ेजानने दो।" य र्ब्द ककतने सच्चे और सह्य ैं तथा मारे कानों में अपना असर हदखाते े ैं, जो कक कट्टर लमथ्या मतों एव िंनीरस धम श लसदधाितों को सुनने के आदी भी ैं। यहद मूनत शके प्रतीकात्मक काय शकी अनदेखी ोती ै या इसके रूपक को इस रूप में देखा जाता ै कक इसका अक्स्तत्व ी न ीिं ै, तब भी ह दिं ूप्रवचारक मूनतपूशजा के प्रभावी चररत्र को न ी िं भूिता ै। योगी ईश्वर को छप्वयों में न देखकर स्वय िंमें देखते े ैं। वे मूनतपूशजा को उपासना के ननचिे ेस्तर पर वैसे

ी ितैं जैसे ेदूधू बच्चों के लिए और मीट बडों के लिए ोता ै। ह दिंू्वाद ने उन्नत दार्नशनक समझदारी के साथ-साथ प्रतीक आराधना का भी धालमकश वातावरण बनाया ै, क्जसमें भव्य कि‍ा भी समाह त ै। इसमें सभी धालमकश भावनाओ िंऔर सास्कृि‍नतक स्तर के व्यक्क्तयों के लिए स्थान ै। ह दिं ूधम शमें समान छत के नीचे ेर नेविो प्वकलसत ोते ेयुवाओ िंके लिए भी अनत रु्दध उपासना की व्यवस्था ै, क्जसमें खखिौनेतोडकर बच्चों की भावनाओ िंका इसलिए दमन न िीं ै कक म बडैं और में उनकी जरूरत न िीं ै।

भावनात्मक स्वभाव के व्यक्क्त ईश्वर को पूण शसौंदय शया प्रेमे के रूप में ी देखते े ैं और उसी के आनदिं में खो जाना चा ते ैं। कृष्ण इसी तर के प्रेमे और सौंदय शके देवता ैंऔर पुरुषों तथा मुख्यतः क्स्त्रयों में उनका आकषणश ब ुत ै और उनके प्रनत इन सभी की भावना और भक्क्त म ान् ् ै। एक ममस्शपर्ी िोकगीत की पक्क्तिया ूँ क ती ैं, "उनकी बासूँरी की पुकार ै और म ैंजरूर जाऊँगी, िााकूँक रास्ता घने जगिंसे ोकर ै, पर म ैंजरूर जाऊँगी। जब उनकी सम्मो क पुकार आती ै, तब कोई रुक न िींसकता। सौंदय शबोध रखनेविो ेके लिए भावनात्मक तीव्रता ी उसे पूण शसतिुंक्ष्ट प्रदान करती ै। सुदिंरता का ोना अपने आप में उसके लिए एक मिाप्राथनशा ै। भक्त ईश्वर के चरणों सेलिपट जाता ै और पृथ्वी की ककसी भी चीज के बदिेउन् ें छोडने से मना कर देता ै। तुकाराम क तैं, "मनैंतुम् ारे पावूँ पकड लिये ैं और अब म ैंउन् ें जाने न िींदूँगा। मुझे इसके अिावा और कुछ न िींचाह ए, म ैंउन् ें न ी िंजानेदूँगा।" चैतैन्य क ते े ैं, "मुझे धन की, आदलमयों की, सुदिंर औरतों की और न ी काव्य-प्वदवानों की िािसा ै। े परमप्पता ईश्वर, मेरी िािसा ै कक मेरे प्रत्येक जन्म में आपकी तरफ मेरी भक्क्त बढती जाए।" ह दिं ूप्वचारकों नेसत्य के प्रनत प्रेम और अच्छाई के साथ धालमकश भक्क्त को बढाने की प्रकृनत के लिए सघिंष शककया ै। वे अच्छी तर जानते ेथेकक भावनाए ूँअकिे काम न िींकरती ै। व स्वय िंमें नैनतक रूप से रिंग ीन ोंगी। भावनाओिंका म त्त्व उस स्रोत से ै, क्जससे ेव पनपती ैं, चा े व भक्क्त ो या कफर ननम्नस्तरीय ऐहिंद्रक लिप्तता। भक्क्त का मत य न िींदरर्ाता ै कक सभी तर की भावनाए ूँपप्वत्र ोती ैं। ऐसी भावनाए,ूँ क्जनमें प्वचारर्ी प्वनम्रता के साथ ईश्वर पर अटूट ननभरशता का बोध ो, व ी सच्ची धालमकश भावना या भक्क्त ै। व्यक्क्त के कम शमें समपणश के रूप में ऐसी भावनाए ूँअलभव्यक्त ोती ैं। आराधना, सगिंीत, कि‍ा, धम शकी भावना को बढाते े ैं।

व्याव ाररक मनःक्स्थनत के व्यक्क्त ईश्वर की तिार् कतव्शय, कम,श समाजसेवा और यज्ञ में ी करते े ैं। स्वतत्रिंता मानव की प्रकृनत ै; मारे बधिंन की मिू वज प्रनतबधिं ै, जो कक में स्वय िंमें ी कैद करते े ैं। मारी दासता तभी पूरी ो जाती ै, जब म इसे ेजकडना रुरू कर देते े ैं और जब म अपने चारों तरफ खडी की गई स्वाथ शकी दीवार को तोडकर स्वय िंको प चानतैं, तब भयमुक्त ोकर प्रेम करते े ैं और अपनी कटुता को लमटाकर सभी तर की घृणा को दूरू कर देते े ैं। लसफश याबित्रक नैनतकता में पार न िींप ुूँचा सकती ै, इसके लिए ईश्वर के साथ एक जुडाव भी आवश्यक ै। इस क्स्थनत के बाद ी में म सूस ोगा कक प्रत्येक व्यक्क्त में सूय शके केंद्र से आनेविोर्ाश्वत प्रकार् की ककरणें मौजूद ैं। जब म व्यक्क्त से प्रेम करते े ैं, तब मारी चेतन आत्मा के स्तर पर उसके साथ एकात्मकता म सूस करती ै और म अपनेजीवन में इस चेतना का प्रभाव डितैं। ह दिं ू धम शका नैनतक चररत्र ी मारा अगिा प्वषय भी ै।

ैनिक चररत्र

नैनतक अनुर्ासन, जो कक जीवन के लसदधातिं का एक कतव्शय ै तथा य व्यक्क्त की िमताओिं से उसे े पररधचत भी कराता ै, ताकक व अपनेअतीत की जकडन और भप्वष्य के भय से मुक्त ोकर अपनी आत्मा के साथ सुरक्षित रूप से र सके। नैनतकता के साथ जीवन जीने में म अपनेजीवन के प्रत्येक फि एव िंअपनी चेतना का मधुर सबिंधिं ईश्वर के साथ बनाए रखते े ैं। एक आदर् शव्यक्क्त मेर्ा दैवीय प्रकार् में र ता ै और उसका जीवन सत्य, र्ुदधता, प्रेम और त्याग के गुणों से युक्त र ता ै। व्यक्क्त की नैनतक प्रगनत का मानक प्राकृनतक बिों पर उसकी ताकत से न िीं ोता ै, बक्ल्क उसके मन की दीवानगी पर उसके ननयत्रिंण से ोता ै। गोलियों की बौछार के बीच भी सत्य बोिना, प्रनतर्ोध की भावना का न ोना, मानव और पर्ुओ िंका सम्मान, दूसूरों के लिए पररश्रम और स्वय िंपर ननयत्रिंण ी मानव का प्रमुख कतव्शय ै। मारे आधुननक सुधारक इन सभी को ब ुत ऊँचा मानकर नकार सकते ैंऔर इसे ेमानव स्वभाव के दैननक भोजन के लिए अनुपयुक्त भी मानते े ैं। य उत्कृष्ट आदर् शभारत के कमजोर मनों की सतिुंक्ष्ट के लिए या कफर गिंगीी के मछुआरों के लिए तो िीक ै, पर इनका पूरा ोना असभिंव ै। ह दिंू ूप्वचारकों ने मानव स्वभाव की वास्तप्वक क्स्थनत और इस पूण शआदर् शसे दूरूी को समझते े ुए व्यक्क्त को उसकी ननयनत के लिए प्रलर्क्षित करने ेतु एक सस्कृिंनत और अनुर्ासन की रचना की थी। इन सस्थिानों और इसके प्रभावों की जहटिता, क्जसने िोगों की नैनतक भावना और चररत्र को आकार हदया था, इसे े ी धम शक ा गया और य ी ह दिंू ूधम शके मूि कारक ैं। ह दिंूवाद का यकीन बिपूवकश पथिं की वकाित करने में न िीं ै, बक्ल्क य सभी ह दिंओु िंको इसके अनुर्ासन पर यकीन करनेके लिए आमबिंत्रत करता ै। य एक पथिं के बजाय एक सस्कृिंनत ै। यहद तुम धम शपर र ोगे,े तब सत्य के लसदधातिं को समझ जाओगे। धम शउस अक्ग्न को सुिगाने में स ायक ै, जो कक प्रत्येक व्यक्क्त में िपट बनाने के लिए मौजूद र ती ै।

धम शिोगों की आत्मचेतना के दवारा प्रस्तुत आचार सहिं ता ै। य ककसी एक व्यक्क्त की चेतना दवारा प्रस्तुत न िीं ै तथा न ी ककसी कानून के दवारा बिपूवकश िागू ी ककया गया ै। य व्यव ार की ऐसी पदधनत ै, क्जसेआम स मनत या िोगों का स योग प्राप्त ै। इस क्स्थनत को जमनशी के िोगों ने 'लसहटलिर्ेककट' क ा ै और इसके अनुसार - "व्यव ार के लसदधातिं िोगों के आपसी सबिंधिों को ननयबिंत्रत करते े ैं और उनकी आदतें बनकर सस्कृिंनत के स्तर तक प ुँचते ैं तथा क्जनके बारे में में स्पष्ट रूप से पूरी समझ भी न िीं ै।" धम शिोगों को बिपूवकश सदगुणों की तरफ न िींिे जाता ै, बक्ल्क उन् ें इसके लिए प्रलर्क्षित भी करता ै। य याबिंत्रक ननयमों की स्थायी सहिं ता न ी िं ै, बक्ल्क एक ऐसी जीप्वत आत्मा ै, जो कक समाज के प्वकास के अनुरूप प्वकलसत ोती ै। य ा ूँतक कक भारत में धम शकी क्स्थनत सेवक के रूप में थी तथा य नैनतकता से ऊपर न िींथी। इसका काय श पररवतनश करना या वाष्पकश धम शन िींथा, बक्ल्क लसफश सचिंानि करना था। य िोगों के जीवन में स्तिेप न िीं करता था।

कई तर के धालमकश पथिों, राजवर्ों के युदधों, राजनीनतक त्रुता के बावजूद चार जार सािों से धम शया सामाक्जक जीवन का लसदधातिं समान बना र ा। भारतीय जीवन की जाग्रत् ्ननरिंतरता इसके इनत ास में न

ह दिं–दूर्नश 12 हदखकर इसकी सस्किृनत और सामाक्जक जीवन में नजर आती ै। प्ासिी के युदध के बाद से ी

भारत राजनीनतक
मो से ग्रस्त ो गया था। आज राजनीनत जीवन में समाह त ो चुकी ै। राज्य समाज पर ावी ै और रवीद्रिंनाथ टैगोर के अनुसार, भारत पक्श्चमी समझ के अनुरूप अपने सभी गुणों और कलमयों के साथ एक राष्र बनने के लिए सघिंष शकर र ा ै।

धम शके दो पि ोतैं - वैयक्क्तक और सामाक्जक। ये दोनों आपस में एक-दूसूरे पर ननभरश भी र ते े ैं। वैयक्क्तक चेतना को मागदशर्नश की आवश्यकता ोती ै और उसे ेउसके उददेश्य को समझने का तरीका लसखाया जाता ै तथा उसे ेअपनी समझ के साथ न ीिं, बक्ल्क आत्मा के साथ र ना पडता ै। समाज के ह त में दोनों पर ी ध्यान देनेकी जरूरत पडती ै। धम श ी सभी जीवों को व्यवक्स्थत ढिंग के साथ लमिाए रखता ै। सामाक्जक कल्याण के लिए सदगुण स योग प्रदान करता ै, जबकक दुगुणश इसका प्वपरीत ोता ै। बार-बार इस तथ्य पर बि हदया गया ै कक उत्कृष्ट सद्गुणों का समावेर् ी ननत्य कम शक ा जाता ै, क्जसमें स्वच्छता, नेक व्यव ार, समाज-सेवा और प्राथनशा र्ालमि ै। वण शआश्रम धम-शसमाज के वगों और व्यक्क्तगत जीवन के स्तर को दरर्ाता ै।

पृथूवी पर व्यक्क्त का अिंत ककसी आनदिं की सुननक्श्चतता न ीिंकरता ै, जैसे ेकक कोई लमर्न पूरा ो गया ो। इसकी प्राक्प्त के लिए व्यक्क्त की लरि् आवश्यक ै, क्जसमें सयिंम और कष्ट र्ालमि ैं। प्रत्येक मानव के जीवन में चार स्तरों की प्ववेचेना की गई ै। प्रथम चरण ब्रह्मचय श ै, क्जसमें युवा मक्स्तष्क के आत्मसयिंम, र्ीनता, ब्रह्मचय शऔर समाज सेवा के लिए तैयार ोना पडता ै। चा े व्यक्क्त धनी ो या ननधनश या कफर ककसी भी वण शया वग शका ो, उसे इस अनुर्ासन सेगुजरना ी पडता ै। व्यक्क्त का दूसूरा स्तर गृ ृस्थ का ै, क्जसमें उसे ेपरवार की क्जम्मेदारी ननभानी पडती ै। इसमें व्यक्क्त समाज का एक सदस्य बनता ै और इसके अधधकार एव िंक्जम्मेदाररया ूँभी सभूँालिा ै। इस क्स्थनत में मानवीय समाज की मधुर आदतें भी प्वकलसत ोती ैं और इनकी स ायता सेम अपने साथ के िोगों से सबिंधिं भी बनाते े ैं। इस स्तर में स्वय िंस योग, लमतव्यनयता और अनतधथ सत्कार भी र्ालमि ै। गृ ृस्थ का सम्मान ब ुत अधधक ोता ै, क्योंकक व अन्य तीनों स्तरों का स योग करता ै। तीसरा स्तर वानप्रस्थ का ै, क्जसमें व्यक्क्त से आर्ा की जाती ै कक व सासािंररक वस्तुओ िंसे अपनेिगाव पर ननयत्रिंण रखे ेऔर गृ ृस्थ आश्रम के घटनाक्रमों से उत्पन्न अपने लमथ्यालभमान पर सयिंम रखे, जैसे ेजन्म या सपिंक्त्त का दिंभ या कफर सौभाग्य या प्वदवत्ता का अ िं आहद । वानप्रस्थ आश्रम आत्मत्याग की भावना के लिए भी जाना जाता ै। सन्यािस की क्स्थनत में व्यक्क्त उच्च स्तर के जीवन के लिए पूणरूशपेण अनुर्ालसत ोकर मानवता की सेवा के मुक्त भाव से आत्मा की क्र्क्त में ी र्ानिंत प्राप्त करता ै। इस क्स्थनत में अनाहद अनतिं के साथ पूण शसामजिंस्य स्थाप्पत ो जाता ै और मानवीय लरि् का अिंत ो जाता ै। ऐसेसन्यािसी

सहिंदू धर्म, राष्ट्र... स्वय िंको ससािंर से अिग- थिग न ीिंकर िेते
और ब ुत से सन्यािसी इसी वग शमें आते े ैं, क्जन् ोंने अपने धम शकी आधारलरि् रखी ै। इनका नाम आज मारे राष्र की प्वरासत का ह स्सा ै।

जानत के ननयमों का सबिंधिं व्यक्क्तयों के सामाक्जक कायों से ै। सामाक्जक व्यवस्था में एक खास बबदिंु ु पर मानव व्यक्क्तत्व को केंहद्रत करके ी इसके स्वभाव को बनाया जा सकता ै। चूँकक मानव में मानलसक जीवन के तीनों प िुओ िंमें सेएक या और अधधक नजर आते े ैं, जैसै ेप्वचारों के व्यक्क्त, भावनाओिं के व्यक्क्त और कम श के व्यक्क्त। क्जन व्यक्क्तयों में इन तीनों ी गुणों का अभाव ोता ै, वे रूद्र ैं। इनसे ेबौदधधक, युदधप्रय, उदयमी और अकुरि् श्रलमकों का पता चिता ै, जो कक एक जैवीय सपूिंण शके सदस्य ैं। अतः ऋग्वेद के कि में जैवीय प्रकृनत को लसर, ाथ, धड और पैरों के माध्यम से समाज के चारों वगों को व्यक्त ककया गया था। इस क्स्थनत में प्रत्येक वग शअपना स्थान, अधधकार और कतव्शय रखता ै। चूँकक सभी कम शम त्त्वपूण श ैं, इसलिए जानत के अ िं को प्रोत्साह त न िंीिंककया गया ै। जानतयों सेअधधकार न िंीिं, बक्ल्क क्जम्मेदाररयों का पता चिता ै। ऐसा कोई व्यक्क्त न िंीिं ै, क्जसमें कोई गुण न ो, िााकूँक अिग-अिग िोगों में अिग-अिग गुणों की प्रभुता ोती ै। मारे कायों की पूणतशा, लसफश सपूिंणतशा में स योग न िंीिं ै, बक्ल्क आत्म-अलभव्यक्क्त का माध्यम भी ै। प्रत्येक

व्यक्क्त के अपने कम शकी एक प्वर्ेषता ै, जो कक उसके कम शमें प्रकट ोती ै और य ी स्वधम श ै।

ह दिंू ूधम शका आदर् शसभी व्यक्क्तयों को ब्राह्मण व सतिं बनाना ै, ताकक व आतिंररक मुक्क्त और आध्याक्त्मक सविंाद का आनदिं प्राप्त कर सके, साथ- ी-साथ बुराइयों से भी बचेर ें, जैसेह सिंा-प्रनतह सिंा और यहद कोई उन् ें चोट प ुुँचाए, तब भी धैय शऔर प्रेम बनाए रखें। इनमें घृणा का भाव न ोकर आनदिं का भाव र े। ब्राह्मणत्व को मानव स्वभाव का उच्चतम स्तर माना गया ै। आध्याक्त्मक आदर् शके आधार पर ी सामाक्जक ताने-बाने का गिन ककया गया ै। मानव के पास ऊँचा उडनेके लिए पखिं न ी िं ैं, इसलिए उसे ेकदम-दर-कदम प्रयासों और तप के माध्यम से सतिंुष्ट र ना पडेगा। ह दिंू ूसामाक्जक ढाचूँा इसे ेवग शमें प्वभक्त करता ै। म ैंइस बबदिंु ुको अह सिंा और गौरिा के माध्यम से समझाना चा ता ूँ। मनुष्यों और पर्ुओिं को मारो मत। य ऐसा ननयम ै, जो कक मानवों पर िागू ोता ै। प्रत्येक ब्राह्मण को इसका सम्मान करने के लिए क ा गया ै। िााकूँक य व्यवस्था ऐसे योदधा वग शको भी जन्म देती ै, क्जनका पेर्ा मरना और मारना ै। इस व्यवस्था को बनानेवािों ने आखूँ के बदिेआखूँ या दातूँ के बदिे ेदातूँ वािी मानव प्रनतकक्रया को म सूस ककया था और उन् ें गिा था कक इसकी जडेंमानव स्वभाव में ग राई से जमी ुई ैं। इसे ेएकाएक टाया न िंीिं जा सकता ै। जब बुराई के सम्मुख समपणश गित ो, तब ह सिंा से इसके प्वरोध की स्वीकृनत ै तथा योदधा वग शसे क ा गया ै कक बिपूवकश इसका प्वरोध उनका कतव्शय भी ै। िााकूँक मानव स्वभाव को एक तर की छूट प्रदान की गई ै और बित्रयों से क ा गया ै कक ब्राह्मणों के दवारा अपनाया गया प्रेम का भाव उनके दवारा अपनाए गए कूरूर भाव के ननयम से श्रे्ष्ि ै। इस प्रकार िबत्रय प्वकास के ननचिे ेस्तर का प्रनतननधधत्व करते े ैं, क्योंकक व मानव को ईश्वर के ज्योनतपुजिं के रूप में न देखकर ाड-मासिं के रूप में देखते ैं। िबत्रय से बबना घृणा, बबना ककसी प्रनतर्ोध, लसफश कतव्शय भाव सेभाईचारे की स्थापना के लिए युदध के लिए क ा गया ै। यहद िबत्रय मानवता की इस भावना के साथ व्यव ार करता ै, तब उसकी आध्याक्त्मक उन्ननत ोगी तथा व कूरूर कृ्त्यों पर कम ननभरश ोगा और अतिंतः व ब्राह्मणत्व को प्राप्त करता ुआ पृथ्वी के जीवों को ानन न िंीिंप ुुँचाएगा। िााकूँक ह सिंात्मक प्रनतर्ोध की स्वीकृनत ोनेके बावजूद इसका अिंत इससे दूरू ोने में ी ै। में प्रकृनत के ब ाव के साथ ब ते े ुए इसके परे प ुुँचना ै।

ह सिंा की खखिाफत का ननयम जानवरों के ससिंार में भी िागू ोता ै। इसका ताककशक अथ शय भी ै कक में पर्ु का आ ार करने से भी दूरू र ना चाह ए। चूँकक पर्ु भी ईश्वर की ी रचना ै। इसलिए इसके साथ भी दयािुता का व्यव ार ोना चाह ए। गाय पर्ु ससिंार का प्रतीक ै। ह दिंओु िंदवारा दैननक प्राथनशा में ब्राह्मण और गौरिा की मागँू की गई ै, क्योंकक य दोनों ी पर्ु और मानव ससिंार के प्रतीक ैं तथा इनसे े मारे र्रीर और आत्मा को पोषण प्राप्त ोता ै। गाधिंी लिखतैं- "गाय को देवत्व का दजाशहदए जाने का कारण स्पष्ट ै। गाय भारत के िोगों की सवश्रेेशष्ि स योगी थी। य प्रचुर मात्रा में भोजन प्रदान करती ै तथा य अस ायों की साथी तथा भारतीय मानवता की माता के रूप में ै। गौरिा का आर्य ईश्वर की मूक रचना की रिा ै।" ककिंतुभारत में ऐसेभी िोग थे, क्जनके मन में पर्ु-ससिंार के प्रनत दया न िींथी। उन् ें अपनी आदतों के खखिाफ ोनेके लिए प्रलर्क्षित ककया जाना था। ब्राह्मणों के आदर् शमें मासिं ार न िींथा तथा य आ ार या मनोरिंजन के लिए भी ककसी को कष्ट न िींप ुँचाते थे। इसके साथ ी उन् ें इसके प्रभाव में र ने के लिए प्रेररत भी ककया जाता र ा ै। योदधा और व्यापारी वग शभी मुख्यतः र्ाका ारी ी था। य ाँूतक कक र्ूद्र भी पप्वत्र हदनों में मासिं ार न िींकरते े ैं। अतः र्ाका ार के प्रनत य ननरिंतरता जारी ै। क्जन िोगों के मन में पर्ुओ िंको साथ ो र े व्यव ार को िेकेर पाप र्किं न िींोती ै, व पचिंम क े गए ैं तथा व ह दिं ूधम शके प्रभाव में भी न िींैं।

ह दिंवूाद पर िगा य आिोप कक इसनेसमाज के ननचिे ेवग शकी नैनतक और आध्याक्त्मक बेडडयों को तोडनेके लिए कुछ भी न िीं ककया ै, भारत में ह दिंवूाद के कायों की अनदेखी दरर्ाता ै। आज बुदधवाद और ईसायत ताक्धदयों के बाद जब एक सभ्य प्रजानत समाज के प्पछडेवग शके सपिंकश में आती ै, तब य उस प्पछडे समाज की मानलसकता को समझनेपर ध्यान न िींदेती ै, बक्ल्क उनपर प्वजय और उन् ें अधीन करने के कूरूर तरीके अपनाती ै। ज ा ँूतक उन प्पछडी जानतयों का प्रश्न ै, यहद उनकी आखँूों में आसँू ैं और व भगवान् ्को कोसते ुए बबना सोए अनत पररश्रमयुक्त जीवन जी र े ैं, तब इसकी वज य ी ै कक उन् ोंनेइन सभ्य जानतयों को अपनी भूलम पर आनेहदया था। भारत के आयों ने य ा ँूके ननवालसयों को अपनेमें लमिाया और उन् ें उनकी गिंदी आदतों एव िंर्राबखोरी से मुक्त हदिानेमें स ायता की तथा उन् ें साफ-सुथरा जीवन जीनेव एक जीप्वत ईश्वर की उपासना के लिए प्रेरेरत ककया। आयों ने जब य ाँू के मूि ननवालसयों को नागों की पूजा करते ेदेखा, तब उन् ें बताया कक ईश्वर सापँू से म ान् ् ै। व नागेश्वर या कृष्ण ै, जो कक कालिया नाग के फन पर नृतू्य करता ै। उन् ोंनेतथ्यों की प्रनतरोधात्मक क्र्क के सम्मुख समाज को बिपूवकश व्याव ाररकता के एक उन्नत स्तर पर प ुँचाने के लिए जल्दबाजी न िींकी, क्योंकक य ाँूबबना ककसी आतिंररक पुकार के न िींप ुँचा जा सकता था। जानतयों के माध्यम सेसभ्यता का ननरिंतर प्वकास मु म्मद के आगमन तक जारी र ा। भारत जैसे ेबडेदेर् में ज ा ँूसिंवाद का आसान माध्यम न िींथा, इस काय शको सपिंाहदत करना वाकई एक बडा काम था।

लम. जेम्स कैनेडी लिखतैं-"ह दिंओु िंका आहद जानतयों या प्वदेर्ी समू ों के साथ समायोजन ह दिंवूाद का एक नया काय शथा। य काय शमुख्यतः सातवी िंया ग्यार वी िंसदी में ुआ था। य काय शइस पूणतशा के साथ ुआ कक सपिंूण शउत्तर भारत में अब ह दिं ूजनसखि्या के रक्त, सस्क्रिनत एव िंधम शमें समरूपता नजर आती ै तथा य उन

ननचिी जनजानतयों सेपृथृक् हदखती ै, जो कक सभ्यता के बा री िेत्रों में अभी प्वचरण करती र ती ै।" बा र के गिगों का प्रवा ह दिंओु िंके बीच आसानी से ोता र ा और धम शउन्नत जीवन के तत्त्वों के साथ प्वजातीय िोगों का समायोजन करने और इसके लिए उन् ें प्रेररत करता र ा, ककिंतु सभ्यता के इस काम के लिए भारत में इस सख्ं या से पाचूँ गुना अधधक, यानी तकरीबन पाचूँ करोड अछूत ोंगे। राजनीनतक परतत्रिंता के समय से ह दिंओुंके दवारा इस काय शकी प्रभावर्िता कम ुई ै। इस समय तक ह दिं ूसमाज रूहढवादी बन चुका था और इसनेभारत के एक बडेवग शको म त्त्व ीन बना हदया था और य ी गैर-ह दिं ूधमों के लिए जमीन की वज भी बना था।

परंपरा

ह दिंओुंने वेद को सवोच्च धालमकश ग्रथिं के रूप में स्वीकार ककया ै। व जीवन के लसदधातिंों और ब्रह्माडिं को मूतरूशप मानते े ैं। उपननषद वेदों के म त्त्वपूण शभाग ैं, क्जन् ोंने वेदों के अपररष्कृत प िुओ िंको स्पष्ट रूप से

स्थाप्पत ककया ै। उपननषदों में सत्य ी क ा गया ै कक ह दिं ूप्वश्वास के बाद का इनत ास स्थायी आधार बनता

र ा। िााकूँक धालमकश प्वचारों की यात्राओ िंमें कई क्रानितयाँूआईं और बडी प्वजय भी ुईं, पर तकरीबन पचास र्ताक्धदयों से इनका मिू प्वचार अपररवनततश ी र ा। जब कभी धालमकश िधलमतशा के इन प्वश्वासों को अपनी जकडन में िेनेमें सफिता प्राप्त ुई, तब सच्चे सतिंों का उदय ुआ और इन् ोंनेआध्याक्त्मक पुनरुत्थान के लिए गिगों का आह्वान ककया। जब उपननषदों का आदर्िंनि धमाधांता के प्ववादों में रुरू ो गया और धम शकी आत्मा बोलियों के तकश-प्वतकश में गुम ो गई, तब बुदध ने सत्य की सरिता और नैनतक ननयमों के म त्त्व पर बि हदया था। सभिंवतः उसी समय, िााकूँक देर् के दूसूरे ह स्से ेमें जब धम शवैधाननक सस्ंकृनत और धम शकी लरि ने इसे अमानवीय तकशवादी बना हदया तथा उन प्वदवानों में बेतुका अ ं भी भर हदया था, तब गीता के रचनयता ने सभी रुदध हृदय वािों के लिए स्वग शका दवार खोि हदया था। ह दिं ूधम शमें र्किंर का धम-शसुधार अभी भी बीता ुआ कि न ीं ै। ह दिं ूमत पर रामानुज, माधव, कबीर और नानक के स्थायी धचह्न मौजूदू ैं। य भी स्पष्ट ै कक ह दिंवूाद एक पररणाम न ोकर एक प्रकक्रया ै; य एक स्थायी प्रकटन न ोकर एक प्वकलसत ोती परिंपरा ै। य क ी सि भी बिपूवकश बुदधधमत्ता से बदिं न ीं ै क्योंकक आत्मा के पररेत्र में मेरा और तेरा का भेदेभाव न ीं ै।

ह दिं ूधम श

भारत में आयों की रुरुआत से िेकर आज तक य भारत का भादुभुाग्शय या क्स्थनत ऐसी र ी ै कक इसे े गभीर धालमकश सर्किंका सामना करना पडा ै। एक प्वर्ेष अथ शमें, भारत दुननया भर के जीवों के िघु रूप की एक प्रयोगर्िा की तर र ा ै, ज ा ँूजातीय और धालमकश सयिंोजन के प्रयोगों का सबिंधिं दुननया भर की जिुडी गई समस्याओ िंके समाधान के रूप में ुआ ै। यहद य सत्य ै कक प्रत्येक व्यक्क्त का अपना गुण ोता ै और ईश्वरीय अलभव्यक्क्त का व अपना एक खास प िू रखता ै, तब भी ऐसा िगता ै कक जातीय और धालमकश दवदिंवों के समाधान के लिए भारत का चयन ककया जाता र ा ै।

ह दिंू ूधम शके एक िबिंइनत ास में इसकी तीव्र धारा और प्वस्तृत मरुस्थि के बावजूद इसमें एक आध्याक्त्मक हदर्ा की प्रकृनत नजर आती ै, जो कक प्वषमताओंके बावजूद अपनी ननरिंतरता बनाए ुए ै। आहदकािीन ह दिंू ूधम शके मूि लसदधातिं मृतप्राय न िीं ै, बक्ल्क य जीप्वत एव िंक्क्रयािीि ोनेके साथ-साथ परामर्दशाता भी ै। यहद ऐसा न िीं ोता तो ह दिंू ूप्वश्वास के लसदधातिं में रुधच रखे बबना इसे ेसमझा न गया ोता, क्जसके आज बीस करोड से अधधक समथकश ैं।

'धम'श र्दद स्वय िंमें थोडी जहटिता लिये ुए ै। धम शसे आर्य उन आदर्ों, उददेश्यों, प्रभावों और सस्थिाओ िंसे ै, जो कक व्यक्क्त के ननजी एव िंसामाक्जक चररत्र को आकार देते े ैं। धम शन्यायोधचत जीवन जीनेका ननयम ै तथा य पृथ्वी पर प्रसन्नता और मिो को सुननक्श्चत करता ै। इसमें धम शऔर नैनतकता सक्म्मलित ै। ह दिंओु िंका जीवन काफी द तक धम शके ननयम से सचिंालित ोता ै। इनके उपवास, उत्सव, सामाक्जक और पाररवाररक सबिंधिं, वैयक्क्तक आदतें तथा रुधचया ूँसभी का इससे सबिंधिं ै।

मानव जीवन का उददेश्य मिो या आध्याक्त्मक स्वतत्रिंता ी ै। मनुष्य की ननयनत आत्मा का लमिन और अमरत्व को प्राप्त करना ै। म ईश्वर की सतिंान ैं। आत्मा का स्वय िंको प चानना ी मानव हृदय का र्ाश्वत स्वप्न तथा ह दिंू ूधम शका आधार ै। ऐसा माना जाता ै कक मानव की आत्मा ी मौलिक वास्तप्वकता ै। मन की सभी इच्छाए ूँव पूव शअनुमाननत तकों की चचाएश ूँ ी आत्मा की वास्तप्वकता ै, य तकों से लसदध ोनेवािी चीज न िीं ै, क्योंकक इनके अिावा अन्य साक्ष्य भी सभिंव न िीं ैं। इसका आर्य लसफश प्वश्वास से ी न िीं ै, जबकक य प्वश्वास ी ै, जो कक सभी तकों का आधार ै। यहद व्यक्क्त का आत्म सदिं ों से भरा ै, तब पृथ्वी की कोई भी चीज इससे मुक्त न िीं ै। आत्म ी सबकुछ ै। य अनिंतम सत्य ी ै, जो कक सभी पररवतनशों से ऊपर ै तथा य अदृश्य वास्तप्वकता ी जीवन का आधार और तकश ै। य ऐसा र स्य ै, जो कक चुपचाप स्वय िंकी ी पुक्ष्ट करता ै। मारा मक्स्तष्क जो सोचता ै, व म त्त्वपूण शन िीं ै, बक्ल्क म जो ैं, व अधधक म त्त्वपूण श ै। व्यक्क्त के भय की वज उसकी व अपूणतशा ै, क्जसनेउसकी ननयनत से उसे ेदूरू कर हदया ै तथा इस अधिंकार ने उसके भीतर के प्रकार् को ढक लिया ै। यहद म आत्म का आश्रय िेते ैं, जो कक मारे अक्स्तत्व

क्ात्रएकमात्र स्थायी बबदिंु ु ोगा, ज ा ूँ म जानेंगे ेकक म जीवन के इस अतिं ीन माग शपर अकिे ेन िीं ैं। म ससिंार पर प्वजय प्राप्त कर सकते े ैं तथा मृत्यु को चुनौती भी दे सकते ैं। "ससिंार में जो ै, उससेम ान् ्व ै, जो तुम् ारे भीतर ै।"

क्योंकक व्यक्क्त के सभी गुणों का उददेश्य आध्याक्त्मक पूणतशा की प्राक्प्त के लिए ी ै, पर ह दिंू ूधम श ककसी तर के धालमकश प्वश्वास या अध्यात्म पर बि न िीं देता ै। इसकी अधधकतम गुजिंाइर् सवर्शक्क्तमान के पास प ुूँचने और इसके सबिंोधन तक ी ै। ह दिंू ूप्वचारक दर्नश और समाजर्ास्त्र के अच्छे प्वदयाथी थे ेतथा य धालमकश प्वश्वासों को बिपूवकश मनवाए जाने के पिधर न िीं थे। जब म ईश्वर के बारे में अपने स्वय िंके प्वचारों का अनतवाद पूण शदावा करते े ैं, तब धालमकश मामिों में गितफ लमयाूँ और प्वरोध उत्पन्न ोते े ैं। धम शस्वतत्रिंता की ह मायत करता ै, पर य तब सबसे अधधक नुकसान करता ै, जब म व्यक्क्त पर जबरदस्ती व थोपनेकी

कोलर्् करते े ैं, जो व समझ न ी िंसकता ै। ईश्वर की प्राक्प्त के लिए व्यक्क्त के तरीकों का वगीकरण भी कहिन ोता ै। ईश्वर की प्राक्प्त का माग शव्यक्क्त के हृदय में उसके रक्त से लिखा ोता ै। सस्ृकित के श्ृकि के अनुसार, क्जस प्रकार आकार्् में धचडडया के उडनेऔर समुद्र में मछलियों के तैरनेके ननर्ान न िंीं ोते,े वैसी आध्याक्त्मक यात्राओ िंके मागधशचह्न भी न िंीहदखाई पडते े ैं। ईसा ने दैवीय जीवन के र स्य के बारे में क ा था कक य सीमाबदध आत्मा में स्वय िं ी प्रकट ोता ै। ईश्वर स्वय िंको बबजिी की चमक और आत्मा के किंपन में भी स्पष्ट करता ै। ह दिंू धम शकी आत्मा को समझनेवािा ह दिंू जानता ै कक सभी धम शपप्वत्र ैं। बोिपुर में रवीद्रिंनाथ टैगोर के स्कूि में लसफश एक ी अदृश्य ईश्वर की उपासना ोती ै। य ाूँअन्य धमों के अनादर की अनुमनत न ी िं ै। गाधिंी भी अपनेधालमकश दृक्ष्टकोण ब ुत ी स नर्ीिता के साथ रखते ेथे। ब्राह्मण प्वचारकों के अन्य धालमकश

दृक्ष्टकोण के बारे में प्वल्सन लिखते ैं, "ह दिंू धमों के ननयम को मानने वािे ब्राह्मण सभी तर की धालमकश उपासना को समान मान्यता देते े ैं।" मतों के प्वरोध और धालमकश प्वलभन्नता के बारे में व क ते े ैं कक य ननयनत का एक ह स्सा ै, जैसै ेएक धचत्रकार कई रिंगों सेएक सुदिंर धचत्र बनाता ै या एक मािी अपनेबगीचे को फूिों की झाडडयों से सजाता ै, इसी प्रकार ईश्वर ने प्रत्येक जनजानत को उसका अपना धम शप्रदान ककया ै, ताकक व्यक्क्त उसे ेकई रूपों में भव्यता प्रदान कर सके तथा इन सभी का उनकी दृक्ष्ट में समान म त्त्व ै।

इसका अथ शय न िंीं ै कक ह दिंू प्वचारकों का ईश्वर के बारे में कोई उधचत दृक्ष्टकोण न िंीं ै और वे सभी मतों को समान रूप सेसत्य मानते े ैं। उनकी सवोच्च सत्य के बारे में सुननक्श्चत धारणा ै, कफर भी वे इसकी वैक्श्वक स्वीकृनत के लिए जोर न िंीदेते े ैं। व मानते े ैं कक जब मक्स्तष्क जाग्रत् ् ो जाता ै, तब सत्य का बोध स्वतः ी ो जाएगा। प्रत्येक धम शउन िोगों के मानलसक और सामाक्जक प्वकास की अलभव्यक्क्त ै, जो इसे े अपनाते े ैं। इसलिए मौजूदा प्वश्वास पर नए मतों को अपनाने के लिए दबाव डािना अनुधचत ै। ताककशक प्रनतकक्रयाओ िंके सामने अनगढ बोध धरार्ायी ो जाएगेंूऔर सच्चा सुधारक व्यक्क्तयों की मानलसक एव िंनैनतक प्रकृनत को सुधारने का प्रयास करता ै। एक गभिंीर नैनतक जीवन के अनुभव के अनुसार सत्य धालमकश प्वश्वासों का लसफश पररणाम न िंीं ै। इसलिए ह दिंू प्वचारकों ने धम शलसदधाितों की तुिना में अनुर्ासन पर अधधक ध्यान हदया ै। ह दिंओु िंका धम शएक धमशर्ास्त्र न ोकर जीवन जीने की एक पदधनत ै। इसमें चा े व रूहढवादी ह दिंू ो या न ो या कफर व ककसी भी ईश्वर को मानता ो या कफर चा े व धम शको स्वीकार करे या न करे।

धम शके दवारा प्रस्तुत उन्नत जीवन व ी ै, क्जसमें ईश्वर की वास्तप्वकता का स्वाभाप्वक प्वश्वास ोता ै। यहद मानव में ईश्वर का ननवास सवोच्च सत्य ै, तब उसका व्यव ार ी आदर्् शव्यव ार ोगा। उसके सद्गुण ी सत्य का एक रूप ै। सत्य, सुदिंरता और अच्छाई एक आदर्् शव्यक्क्त के जीवन का ह स्सा ोते े ैं। व र्ुदधता, भाईचारे, प्वनम्रता और आत्मत्याग जैसे ेगुणों की प्रनतमूनत श ोगा। अपनेप्ववेक पर ननयत्रिंण के दवारा व घृणा के बादि एव िंजुनून की धुिंध को टाकर र्ानिंत से भरा ोगा तथा व्यक्क्तगत व सामाक्जक सकिंटों के समय भी पूरी तर र्ातिं बना र ेगा। अपनी र्ातिं आत्मा, क्स्थर धडकन और स्पष्ट दृक्ष्ट से व उधचत समय पर उधचत काय श ी करेगा तथा उसका सबिंधिं ककसी एक देर्् से न िंीं, बक्ल्क सारी दुननया से ोगा। इनमें आनदिं और प्ेरेमयुक्त सत्य, क्र्क्त और दिंभ की िािसा वािे ेरजस व नीरसता और जडता वािे तमस पर अपना प्रभुत्व रखता ै। पररपूण श

व्यक्क्तयों के लिए धम शएक स्वतः प्रेरणा ै तथा अन्य िोगों के लिए उस बाह्य ननदेर् की भानूँत ै, जो परिंपराए ूँया गिग चा ते ैं।

जो िोग पाप और पीडा की आधँी से ोकर गुजर र े ों, उनके लिए एक ऐसेआदर् शको अपनाना ककतना कहिन ै, जो में क्रोध एविं िोभ से दूरू रखे तथा रुदधता और प्वचारों में प्रेमे बनाए। जीवन की आवश्यकताओ िं को देखते े ुए ऐसा ि गता ै कक र्ायद य उन् ें पूरा न ीं कर सकेगा। य जीवन की सभी अगिंभूत पररक्स्थनतयों को समाप्त कर देगा। यहद मिो के लिए त्याग इतना आवश्यक ोता, तब ब ुत से िोग इस पर ध्यान न देते। य सिंसार इतना व्यवक्स्थत ै कक व िोग, जो कक दैवीय ननयमों के अभ्यासी ैं, उनके पास इससे बचनेकी अधधक सभिंावना न ीं ै। म इस तथ्य से भी पररधचत ैं कक 'सरमन ऑन द माउिंट' को असभिंव आदर्वशाद क कर नकार हदया गया था। म उस प्र ार करनेवािे के सामने अपना गाि न ीं कर सकते, जो कक मारे दोनों गािों पर चोट करने के लिए उतावािा ै। ऐसा ो सकता ै कक इस कष्ट में ईश्वरीय आनिंद ो, परिंतु इसके लिए र्रीर की अपनी कमजोररया ूँभी ैं। ईसाई धम शने भी कुछ इसी रूप में अपने भाव व्यक्त ककए ैं, य ाूँ तक कक ईसा ने भी इस पर अपनी स मनत हदखाई ै। " े ईश्वर ! यहद सभिंव ो, तब इस प्यािो को मुझसे आगे ेबढाओ, मेरे प्रभु तुमने मुझे क्यों माफ कर हदया ?" व िोग, जो अपनी व्याव ाररक क्स्थनत पर दिंभ करते े ैं, वे सामान्य मानव की प्रकृनत के स्तर के लिए आदर्ों को कम करते े ैं, क्जसका सबिंधिं क्र्क्त और िाभ के िोभ तथा र्रीर और बुराई से ै। आधुननक सािंसाररक सुधारक बताते े ैं कक पुराने समय में आपनेसुना ोगा कक "तुम् ें त्या न ीं करनी चाह ए,' पर म ैंतुमसे क ता ूँ कक भोजन के लिए पर्ुओं, खेि के लिए धचडडया और युदध में आदलमयों के अिावा त्या न ीं करनी चाह ए।" य भी क ा गया ै, "तुम िोभी मत बनो।' परिंतु म ैंतुमसे क ता ूँ व्यापार और साम्राज्यवाद पर बडेस्तर के अनतररक्त तुम् ें िोभ न ीं करना चाह ए।" "तुम घृणा मत करो, पर म ैंतुमसे क ता ूँ कक तुम प्पछडी जानतयों, दुश्मन राष्रों और सिंसार के कमजोर िोगों के अनतररक्त ककसी से भी घृणा मत करो।" धालमकश जीवन में त्याग पर दी गई चेतावनी में बताती ै कक प्रसन्नता लसफश क्र्क्त या सपिंदा पर ी ननभरश न ी ि ै, बक्ल्क प्रेमे और र्ानिंत पर ननभरश ै। मारे आधुननक सुधारकों ने ईश्वरीय ननयमों पर ब ुत से प्रनतबधिं िगाए ैं, ताकक के ह सिं, त्वप्ि-सप्िं और धश्यारों को न्यायोधचत ि रा सकें, जो कक मानव जीवन की अनिंतम आवश्यकता ै। य िोग आसानी सेमारे उस लमत्र की क ानी भि चुके ैं, क्जसनेएक बडेगोदाम को बनाने की योजना बनाई थी, क्जससेवषों तक में सप्िधा प्राप्त ोती र े, परिंतु दभाशग्य से अपिी हदन अचानक आई उसकी मौत ने उसे ेधोखा दे हदया था।

ह दिंू व्यिचाररक मानव की वास्तप्विक प्रकृनत, जो कक बुरी ै और आदर्् के बीच की बडी खाई के प्रनत सजग ै, क्जन् ें पूरी तर से अपनाना तकरीबन असभिंव सा प्रतीत ोता ै। वास्तप्विकता और आदर्् शके बीच की दूरी के प्रनत उनकी सजगता उन् ें आदर्ों को प्वकृत करने के लिए प्रोत्साहित न ीं करती ै। य मारे भीतर मौजूद मारी आत्मा के प्वरुदध एक इननादिा जैसी चीज ोगी और इसिमा न ीं ककया जा सकता। इसलिए व मारे जीवन के प्रत्यितः ि ी ेतत्त्वों के प्वरुदध अनतिंमयी ब ुमूल्य आदर् शदेनेका प्रयास करते े ैं। व्यक्क्त के स्वभाव और उसकी आदतों में पररवतनश ब ुत ी धीमी गनत से ोता ै। पूण शकुर्िता प्राप्त करने के लिए ममें धैय शकी

आवश्यकता ोती ै। कमों पर आधाररत ननयमों से में पता चिता ै कक पूणतशा के जीवन की प्राक्प्त से प िे े म ैं।खिमें जीवन की चुनौतीके लिए में योजना बनानी पडती ै तथा पररश्रम करना और कष्ट स ना पडता ै। अपने हृदय में आनदिं की धडकन के लिए पीडा के दवारा अनेक हृदय की धडकनों की आ ुनत देनी पडती ै। एक पप्वत्र चररत्र की उत्पप्त्त के लिए त्याग और कष्ट उिाना पडता ै, अधधकतर िोग आध्याक्त्मक ऊँचाई की सीहढयों का एक ी डडिं चढ पातैं, जबकक कुछ एक ी छिागँ में नीचे से ऊपर प ुँच जाते े ैं। मानव प्रकृनत में ननरिंतर सुधार के लिए वणाश्रशम धम शया वगों का प्वभाजन ह दिंू ूउपकरण के रूप में ककया गया ै। इसका उददेश्य ईश्वर के सभी िोगों को पैगबिंर बनाना ै। इसका लसदधातिं एक राष्रीय सगिंनि या नागररक राष्रमडिं पिर आधाररत न ोकर आत्मा के पररतेि्र में आता ै तथा प्ववेक दवारा थोपी गई नैनतकता और व ननयम, जो कक र्ासन िागू करता ै, दोनों ी धम शन िीं ै। य तो व्यक्क्तयों की अनधगनत पीहढयों के प्वश्वास दवारा स्थाप्पत परिंपरा ै, जो कक ममें सत्य की आत्मा ननलमतश करती ै। य जमनशवालसयों के 'लसहटलिरेट्' में व्यक्त ै तथा वैयक्क्तक प्ववेके और र्ासन के ननयमों से पृथक् ै। इसलिए राजर् ी त्रुतु और साम्राज्यवादी आक्रमण भी भारत के उस जीवन को स्पर् शन कर सके, जो कक तकरीबन पचास र्ताक्धदयों से अपनी ननरिंतरता बनाए ुए ै। क्जस तर सरकिंडों के ऊपर सेवा गुजर जाती ै, वैसे ी प्वजय की ननरिंतर आधूँधयाँअपररवतनशीय क्स्थनत के ऊपर से गुजरती चिी गईं।

मिो या मुक्क्त एक ऐसा आदर् श ै, क्जसकी तरफ मानवता को जाना ी पडता ै। सपिंूण शजीवन ी इस आदर् शके सगिंीत की तरफ जाता ै। सभी मनुष्य ईश्वर की सतिंान ैं, इसलिए व समान ैं। चूँकक उन् ें एक ी दैवीय क्स्थनत की तरफ जाना ै, इसलिए भी व समान ैं, ककिंतु उस आदर् शप्राक्प्त के लिए अपने वास्तप्वक उपकरण के मामिे ेमें वे लभन्न ोते े ैं। उनके अधिंकार और बुराई दूरू करने की अिग-अिग मात्राए ूँ ैं तथा अपने जीवन को प्रेम और प्रकार् सेप्रकालर्त करने के अिग-अिग प्रयास ैं। य ीूँप्रत्येक आत्मा की लरि् को आश्रम, वण शया व्यक्क्तयों के वगों की योजना के अनुसार व्यवक्स्थत ककया गया ै। य मानव प्रकृनत के प्वलभन्न प िुओ िको दरर्ाता ै। मानव का जीवन इच्छाओिंया काम से जुडा ुआ ै। मानव इच्छाओिं की एक पोटिी ै। मनु के अनुसार, य उधचत न िीं ै कक आत्मा को इच्छाओिं का दास ोना चाह ए, पर इच्छाप्व ीनता क ी िभी नजर न ी िआती ै। चूँकक मारी कक्रयार्ीिता मारी इच्छाओिंसे ी सचिंालित ोती ै, इसलिए इच्छाओिंका उधचत ननयमन भी धम शका एक ह स्सा ै। अतः काम या आनदिं को भी उधचत माना गया ै। य पर्ु भाव की सतिंुक्ष्ट मात्र न िीं ै, बक्ल्क आत्म की स्वतत्रिंता की अलभव्यक्क्त ै। जब तक म अपने सवेिंगों की ननरिंकुर्ता से न िींबचते,े य सभिंव न िीं ै। मानव का जीवन लसफश सवेिंगों की ननरिंतरता न ी ि ै, बक्ल्क एक र्ाश्वत प्वचार की अलभव्यक्क्त ै, जो कक िौककक रूपों के दवारा प्वकलसत ोती ै। मानव की इच्छाए ूँउसके पाररवाररक जीवन की धाराए ूँऔर िोक- कतव्शय के माध्यम सेननयबिंत्रत ोती ैं। व्यक्क्त का कित्मक और भावनात्मक जीवन, जीवन की आतिंररक नेकी का एक कक तकरीबन पचास र्ताक्धदयों से अपनी ननरिंतरता बनाए ुए ै। क्जस तर सरकिंडों के ऊपर से वा गुजर जाती ै, वैसी प्वजय की ननरिंतर आधूँधया ूँअपररवतनशीय क्स्थनत के ऊपर से गुजरती चिी गईं।

मिो या मुक्क्त एक ऐसा आदर् श ै, क्जसकी तरफ मानवता को जाना ी पडता ै। सपिूंण शजीवन ी इस आदर् शके सगीित की तरफ जाता ै। सभी मनुष्य ईश्वर की सतिांन ैं, इसलिए व समान ैं। चूँकक उन् ें एक ी दैवीय क्स्थनत की तरफ जाना ै, इसलिए भी व समान ै, ककिंतु उस आदर् शप्राक्प्त के लिए अपने वास्तप्वक उपकरण के मामिे ेमें वे लभन्न ोते े ैं। उनके अधिकार और बुराई दूरू करने की अिग-अिग मात्राए ूँ ैं तथा अपने जीवन को प्रेम और प्रकार् सेप्रकालर्त करने के अिग-अिग प्रयास ैं। य ाूँप्रत्येक आत्मा की लरि् को आश्रम, वण शया व्यक्क्तयों के वगों की योजना के अनुसार व्यवक्स्थत ककया गया ै। य मानव प्रकृनत के प्वलभन्न प िुओ िंको दरर्ाता ै। मानव का जीवन इच्छाओंीया काम से जुडा ुआ ै। मानव इच्छाओं की एक पोटिी ै। मनु के अनुसार, य उधचत न िीं ै कक आत्मा को इच्छाओं का दास ोना चाह ए, पर इच्छाप्व ीनता क ी िंभी नजर न ी िंआती ै। चूँकक मारी कक्रयािीिता मारी इच्छाओंसे ी सचिांलित ोती ै, इसलिए इच्छाओंका उधचत ननयमन भी धम शका एक ह स्सा ै। अतः काम या आनदिं को भी उधचत माना गया ै। य परुु भाव की सतिुंक्ष्ट मात्र न िीं ै, बक्ल्क आत्म की स्वतत्रिंता की अलभव्यक्क्त ै। जब तक म अपने सविेंगों की ननरिंकुर्ता से न िींबचते,े य सभिंव न िीं ै। मानव का जीवन लसफश सविेंगों की ननरिंतरता न ी िं ै, बक्ल्क एक र्ाश्वत प्वचार की अलभव्यक्क्त ै, जो कक िौकककक रूपों के दवारा प्वकलसत ोती ै। मानव की इच्छाए ूँउसके पाररवाररक जीवन की धाराए ूँऔर िोक- कतव्शय के माध्यम सेननयबिंत्रत ोती ैं। व्यक्क्त का कित्मक और भावनात्मक जीवन, जीवन की आतिंररक नेकी का एक ह स्सा ोता ै, ककिंतु कि वैराग्यवाद के वातावरण में न िीं प्वकलसत ो सकती ै। मारे पास सपिंप्त्त या अथ श ोना ी चाह ए। यहद उच्चतम सास्क्िृनतक जीवन के लिए मानव के सकक्रय आवेगों को स्वतत्रिं करना ै, तब समाज की आधथकश आवश्यकताएूँपूरी ोनी चाह ए। समाज के ह त में व्यक्क्तगत सदस्यों के दवारा अक्जतश सपिंप्त्त के सदिंभ शमें ननयम बनाए गए ैं। सभी की आवश्यकताओंके दवारा प्रत्येक की स्वतत्रिंता प्रनतबधिंधत की गई ै। सपिंप्त्त और आनदिं प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता आत्मत्याग का ी ै। धम शया कतव्शय, आनदिं और िाभ यानी काम और अथ शको ननयबिंत्रत करता ै। क्जनमें धम शप्रधान ोता ै, वे साक्त्त्वक प्रकृनत के ोते े ैं; सपिंप्त्त की िािसा वािे ेराजलसक तथा सुख की चा तवािे ेतामलसक प्रकृनत के ोते े ैं। ऐसेव्यक्क्त, जो स्वतः ी धम शके ननयमों का पािन करते े ैं, वे मिो प्राप्त करतें, अतः धम,श अथ,श काम और मिो जीवन के अित को आकार देते े ैं।

चा े क्जसने भी य दुननया बनाई ो या इस ब्रह्माडिं की जो भी सच्चाई ो, पर नैनतकता की सवोच्चता सभी को स्वीकाय श ै। ह दिंू ूप्वचारों के अनुसार, मानव की उत्पप्त्त दैवीय उददेश्य के लिए ुई ै। मारे नष्ट ो चुके जीवन की अतृपूत इच्छाए ूँपृथूवी पर मारे जन्म का कारण ैं। य पीडा ी ै, क्जसके माध्यम से मारी दुबुिशता मारी र्क्क्त तथा मारी अज्ञानता मारे ज्ञान में पररवनततश ो सकता ै। मारी कलमयों का प्रायक्श्चत्त केवि पीडा और आत्मसयिंम से ी ो सकता ै। तप के मिू से ी 'आश्रम' र्धद की उत्पप्त्त ुई ै। बबना तप कोई प्रगनत न िीं ै तथा बबना मृतूयु के पुनजन्शम सभिंव न िीं ै। आरिंभ से अित तक मारा जीवन मृतूयु की ी भानूँत ै, क्जसका अथ शएक बृ ृत् ्जीवन ै। म स्वय िंमें क्जतना अधधक मरते ैं, म ईश्वर के प्रनत उतना अधधक जीते े ैं। जीवन और मृतूयु आपस में गुँथे े ुए ैं और पूण शजीवन ी पूण शमृतूयु का ताज ै। प्रत्येक ह दिंू ूके जीवन में चारों स्तर नजर

ह दिूं–दूर्नश 21 आते ◌े ◌ैं, क्जसमें प्रथम दो स्तर ब्रह्मचारी या प्वदयाथी तथा गृ ◌ृस्थ ◌ैं एव ◌िंअनिंतम दो वे जीवन में सेवाननवृपूत्त ◌ै,

क्जसमें व्यक्क्त ईश्वर या मानवता के सेवक के रूप में जीवन व्यतीत करता ◌ै।

प्रथम आश्रम आध्याक्त्मक जीवन के सस्क्िार के प्रतीक के रूप में आरिंभ ◌ोता ◌ै। इसका उददेश्य व्यक्क्त की मनोर्ारीररक सरिंचना को ननलमतश करना ◌ै। इसका प्रमुख ◌िक्ष्य बिाक के मक्स्तष्क और रीर को प्रलक्षित करना ◌ै, ताकक प्वदयाथी स्वच्छता की आदत, ब्रह्मचय,श नेक व्यव ◌ार और धालमकशता सीख सके। सभी प्वदयाधथयशों में ननधनशता के प्रनत जागरूक ◌ोने के साथ उनमें सामाक्जक सविंदनर्ीता भी प्वकलसत कराई जाती ◌ै तथा इसमें उनके धनी या ननधनश ◌ोनेसेककसी तर का फकश न ◌िींपडता। इस क्स्थनत में प्रत्येक प्वदयाथी को अपनेभोजन के लिए लभिा का स ◌ारा ◌िेना पडता ◌ै और ननधनशता का य प्रलर्िण प्वदयाधथयशों के मक्स्तष्क में य भाव पैदा करता ◌ै कक नेक जीवन के लिए सपिंदा का ◌ोना अननवाय शन ◌िीं ◌ै। प्वदयाधथयशों को कट्टरता और अज्ञानता के वर्ीभूत ◌ोकर कानून को अपने ाथ में ◌िेने की अनुमनत न ◌िीं ◌ै तथा उन् ◌ें अपनी स्वय ◌िंकी कल्पना से वेदी या मूनत शबनाकर ककसी पथिं या सप्रिंदाय की उपासना करने का भी अधधकार न ◌ी ◌िं ◌ै। उन् ◌ें सत्यननष्ा और परिंपराओिंका सम्मान करना ◌ोगा। लर्ि का स्तर प्वदयाधथयशों की ◌िमता और आवश्यकता के आधार पर ◌ी तय ◌ोता था। आज की तर उनकी लर्ि जहटि न ◌िींथी, इसलिए बच्चों के पेर् ◌ेआसानी से तय ◌ो जाते ◌ेथे। लर्ि के कायक्रशम चा ◌े वे धालमकश ◌ी ◌ों, इनमें ◌िडके और ◌िडककयों का भेदभाव न ◌िींथा। इसमें केवि स्त्री-पुरुष स लर्ि को प्रोत्सा न न ◌िींहदया गया था।

जब लर्ि का य कािा समाप्त ◌ो जाता ◌ै, तब प्वदयाथी परिवार की क्जम्मेदारी सभूँिाने ◌िायक ◌ो जाता ◌ै। इस क्स्थनत में व्यक्क्त अकेिा ◌ी न ◌िींर ता ◌ै, बक्ल्क उसके साथ उसकी पत्नी और बच्चे भी ◌ोते ◌े ।◌ैं अब व्यक्क्त परिवार का कमानेवािा सदस्य बनकर समाज का आधार बनता ◌ै और उसका पाररवाररक जीवन एव ◌िंसामाक्जक कतव्शय उसके ◌िक्ष्य तक उसे ◌ेप ◌ूँचाने व आत्मसयिंम कराने में स ◌ायक ◌ोते ◌े ◌ैं। प्रत्येक व्यक्क्त से आर्ा की जाती ◌ै कक व ससिंार के लिए अपना काम करे। उसे ◌ेलसफश अपनेस्वाथपूणश शआनदिं के लिए समाज-सेवा से दूरू न ◌ी ◌िंर ना चाह ए। म आपस में एक-दूसूरे के पास एक तर से बधिंक ◌ैं, जैसेव्यक्क्त परिवार के लिए, परिवार समुदाय के लिए, समुदाय राष्ट्र के लिए और राष्ट्र ससिंार के लिए ◌ै। जानत-व्यवस्था गृ ◌ृस्थ के दप्वतीय चरण में आती ◌ै तथा य मानवता की आपसी ननभरशता और एकता दर्ाती ◌ै। इसका सबिंधिं समाज की आवश्यकता के साथ-साथ व्यक्क्तगत ◌िाभ के लिए भी ◌ै। य व्यक्क्तत्व का ननमाणश इस रूप में करती ◌ै कक व्यक्क्त को स्वय ◌िंसेपरे ◌िे जाकर ककसी चीज में समपणश के लिए स ◌ायता लमिती ◌ै। इसमें व्यक्क्त ककसी एक खास बबदिं ◌ुपर अपनी ऊजा शको केंहद्रत करके अपनी ◌िमताओिं को प चाननेकी कोलर्् करता ◌ै। य ◌ीगि के 'प्वषमताओिंमें सामजिंस्य' के लसदधातिं को दर्ाती ◌ै, क्जसमें व्यक्क्त और समाज के प्रनत दवदिंव का समाधान ◌ोता ◌ै। जानत-व्यवस्था के सचिंािन के लसदधातिं का सबिंधिं स्वय ◌िंके बे तर ◌ोनेया समाज के बे तर ◌ोनेसे न ◌ी ◌िं ◌ै, बक्ल्क उस उन्नत स्तर को बढाने से ◌ै, क्जसका आर्य आत्म सुधार की ननरिंतरता और समाज-सेवा ◌ै। मानव स्वभाव की लभन्नता को ध्यान में रखते ◌े ◌ुए य उन तरीकों की रचना करता ◌ै, क्जससे ◌ेव्यक्क्त पूण श आत्मालभव्यक्क्त ◌ालसि करता ◌ै। य वास्तप्वक अतिंर को समझते ◌े ◌ुए समानता के आदर् शके लिए काय शकरता

 ै। इसका काय शस्वभावों का उप ास न करके उनके साथ एक सामजिंस्य बनाना ै। जो िोग आधुननक ज्ञान के मचिं से सस्थािनों की आिोचना करते े ैं, उन् ें य स्मरण न िींर ता ै कक ऐसा कोई देर् न िीं ै, ज ा ूँअसमान मूल्यों विो िोग साथ र ते े ैं।

पूव-शवैहदक काि में य ाूँके िोगों के साथ जब आयों का मेि ुआ था, तब उनकी सभ्यता और सस्कृिनत ननचिे ेदजे की थी। इन िोगों को अप्वकलसत चतुथ शश्रेणी, यानी एक जानत में रखा गया था, क्जनमें बौदधधकता, भावना और इच्छा का प्वर्ेषे प्वकास न िींो सका था। दुबारा जनमे ेया प्वकलसत िोगों को तीन वगों में प्वभाक्जत ककया गया, ज ा ूँबौदधधकता, भावना और इच्छा की प्रधानता थी। क्जन िोगों में प्वचार और धचतिंन की क्क्त थी, व ब्राह्मण तथा क्जनमें ब ादुरी और प्रेम था, िबत्रय और क्जनका झुकाव जीवन की व्याव ाररकता की तरफ अधधक था, वे वैश्य क िाए। इस प्रकार बौदधधक, युदधप्रय, उदयमी और अकुर्ि काय शकरनेविाों के रूप में वगों का बटूँवारा ुआ। इस प्रकार य सभी अपनी िमताओिं, यानी ब्राह्मण आध्याक्त्मकता के दवारा बित्रय ब ादुरी से तथा वैश्य अपनी कुर्िता से तथा र्ूद्र अपनी सेवा के माध्यम से ईश्वर की रचना का काय श करते े ैं। इन सभी का स्थान वग शसे ऊपर उिकर नेकी का काय शकरने के लिए ै। य ाूँ अ िं और म त्त्वाकिांाए ूँ प्ववेक और न्याय की अधीनता में र ती ैं। जब प्वलभन्न वग शअपनेकायों को सपिंाहदत करता ै, तब समाज में न्याय या धम शकी अनुरूपता स्थाप्पत ोती ै।

अकुर्ि कम शकरनेविाों के सच्चे ह तों की अनदेखी न िींकी गई थी। वैश्य व्यापार, प्रेमे, सपिंप्त्त एव िं आराम के लिए कम शकरते े ैं। िााकूँक उनसे ेआर्ा की जाती ै कक वे कम शजीवन और कल्याण के लिए ी करेंगे। य जानत व्यापार और आधथकश गनतप्वधधयों के लिए व्यक्क्तयों का व समू ै, जो कक जीवन की सामधग्रयाूँप्रेमे के बधिंन के लिए इकट्िा करते े ैं। िबत्रयों का काय शसमाज के बा री आक्रमणकाररयों एव िंभीतरी अव्यवस्था से रिा करना ै। राज्य की सैन्ै य व्यवस्था इनके क्जम्मे ेर ती ै। व राजनीनतक व्यवस्था के स्वामी बनाए गए ैं। ह दिं ूधम शका उददेश्य िोगों की सेना बनाना न िींथा। सभी स्थानों में प्वर्ेषता के दवारा कुर्िता ालसि की गई थी। क्जन िोगों का काम गित कायों का बिपूवकश प्वरोध करना था, उन् ें इसके लिए प्रलर्क्षित करने की व्यवस्था थी। र्ासन की किा सभी के लिए न ी िं ो सकती थी। य भी देखा गया ै कक र्ौककया राजनीनतज्ञ अपनेननवाचशन िेत्रों में काफी उत्सुक र ने के बावजूद जल्दबाजी में ुए िोकप्प्रय चुनावों के माध्यम से बबना ककसी प्रलर्िण के ी प्रर्ासननक काय शकर पाने में आयोग्य भी र ते े ैं। सेना और र्ासन के लिए एक प्वर्ेष वग श समप्प्तश था तथा अधधकतर िोग र्ासन या सत्ता की दीवानगी न िींरखते ेथे। आज दुननया भर में नैनतक उत्थान या िोगों की भिाई के लिए समप्प्तश ोनेके बजाय बाजार के लिए बडी-बडी िडाइया ूँिडी जा र ी ैं। दुननया भर में राजनीनतक जुनून के लिए ी ग रा भ्रम उत्पन्न ो चुका ै। य भी क ा जा सकता ै कक जब एक पेर्े ेपर र्ासक वग श ोगा, तब भी इसकी सुननक्श्चतता न िीं ै कक र्ासन ननस्स्वाथ शभाव से ी ोगा या उन् ें क्जस लिए प्रलर्क्षित ककया गया ै, व उसका अपनेकतव्शय में इस्तेमाि करेंगे। इसके अिावा र्ासकों को धम शको पररवनततश करने या रदद करने की अनुमनत न िींथी। व लसफश इसका सचिंािन ी कर सकते ेथे। धम शमें पररवतनश

ह दिंू–दूर्नश 23 लसफश ब्राह्मण प्वचारक के अधधकार ित्र में था, जो कक ककसी भी तर की दुभ्ुावशना से परे थेतथा आवश्यक रूप से
ननधनशता का जीवन व्यतीत करतेथे। व सदैिं या कहिन पररक्स्थनतयों में धम शकी व्याख्या करते े ैं।

चूँकक दार्नशनक मनःक्स्थनत के अनासक्त िोगों ने इनके ननयम बनाए ैं, इसलिए समाज की व्यवस्था आवश्यक रूप सेकिुीन ै। इनके ननयम पुजाररयों ने ी बनाए थेऔर व य ूदी, ज्ञानी या केल्ट कोई भी ो सकते थे। सच्चे ब्राह्मणों का गुण उनकी बुदधधमत्ता, आत्मसयिंम, अनासक्त ी थी, क्जन् ोंने स्थायी ननयमों को कहिन बनाया था। ब्राह्मणों का जीवन ज्ञान की तिार् में लिप्त था और जीवन की सुदिंरता को प्रर्ासकों से अधधक म त्त्व हदया जाता था। व सासिंाररक िोभ और िौकककता के लिए आध्याक्त्मक मामिों की अधीनता से मुक्त थे। य व्यवस्था दरर्ाती ै कक सभी तर के भिे सुधार एक व्यक्क्त के मक्स्तष्क से ी आरिंभ ुए ैं और कफर दुननया भर में फैिे े ैं। यहद सभी कदम एक साथ ब ुमत प्राप्त करने का प्रयास करनिेंगें, तब समाज की प्रगनत न ी िं ो सकती। कक्रयार्ीि प्वचारकों की प्रगनत के लिए प्रथम र्त शउनका पूण शस्वतत्रिं ोना ी ै। बरैंड रसि् के अनुसार, "बबना स्वतत्रिंता के व्यक्क्त अपने समय से आगे े ो तो भी व ननक्ष्क्रय ी ोगा।" मनु लिखते े ैं, "एक बुदधधमान व्यक्क्त का प्वश्वास अनेक मूखी की राय से बे तर ोता ै।" नैनतक ननयम जीवन के प्वलभन्न स्तरों के लिए अपनाए गए ैं। एक व्यापारी सासिंाररक चीजों के लिए जीवन को सधिंचत करता ै तथा एक योदधा बुराई का प्वरोध करने और व्यवस्था बनाने के लिए इसेखच शकर देता ै। ब्राह्मण अह सिंा का पािन उत्सा और दृढता के साथ करता ै। उसकी अह सिंा कमजोरी या भय का प्रतीक न ीिं ै, बक्ल्क य ईश्वरीय प्रेम और आध्याक्त्मकता की स्वाभाप्वक अलभव्यक्क्त ै। व एक योदधा के स्तर से गुजर चुका ै और उसनेपाया ै कक ईश्वर की प्राक्प्त के लिए य अनुपयुक्त ै। र्ाक्न्तवादियों के पारिंपररक प्रलर्क्षण और वातावरण के प्रभाव ने ह दिंओु िं को थोडा कम आक्रामक व ध्यानकता शएव िंब्राह्मण सन्यिासी के आदर्ों का उपासक बना हदया ै। य ीूँतक कक आज भी व गाधिंी जैसे ेसतिं का प्रर्सिंक ै।

ब्राह्मण सेननचिे ेस्तर के क्रम के वगों के व्यावसानयक युदधों ने ह दिंवूाद के ब ुत से प्वदयाधथयशों को भ्रलमत कर हदया ै कक ह दिंू ूधम शका आधार अह सिंा न ीिं ै। य प्ववेचना कक में इस स्तर से आगे ेबढना ै, भिुाई जा चुकी ै। म क्जतना ऊपर उिते ैं, मारा जीवन उतना ी पप्वत्र ोता जाएगा। क्जस प्रकार सटें कक्रस्टोफर ने बच्चे ईसा को अपनेकिंधों पर बिैाकर नदी पार की थी, य म सभी पर िागू ोता ै। व क्जतने ग रे पानी में गए, उनका बोझ बढता ी गया। अपनी दीवानगी से सघिंष शकरते े ुए और ससिंार के आध्याक्त्मक ज्ञान के आधार को बढाते े ुए सभी व्यक्क्त, जो कक जन्म से र्ूद्र ी ोतें-धीमे–धीमेब्राह्मण बनने तक ऊपर उिते ेर ते े ैं। म क्जतना ऊपर उिते े ैं, मारा भार बढता जाता ै, मगर उस भार के अनुपात में मारी र्क्क्त भी बढती जाती ै। बित्रय ननमिश हृदय के साथ बबना घृणा अपनी सीमाओिं के अनुसार र्क्क्त का प्रयोग करता ै तथा ब्राह्मण को ककसी के प्रनत बि के प्रयोग, घृणा और दुभ्ुावशना न ीिंरखनी चाह ए।

पूण शआदर् शकी तरफ जानेवािे स्तरों का सबिंधिं अन्य रूपों में भी दरर्ाया गया ै। आधुननक प्वकास पर्ु और मानव ससिंार की ननरिंतरता के लसदधातिं की पुक्ष्ट करता ै। ह दिंू ूधम शसभी पर्ु रूपों के प्रनत आदर का भाव

ह दिं–दर्नश 24 रखता ै। य भी मान्यता ै कक पर्ु आ ार मानव जीवन की सूक्ष्म सविंदनाओंको बाधधत करता ै

ै। वैसे

र्ारीररक रूप से य क्जतना भी दे, पर य र्ारीररक रूप से िता भी ै। ईसा का भी मानना था कक पर्ुओ िके प्रनत पप्वत्रता का भाव ोना चाह ए। य ूँतक कक एक धचडडया भी ईश्वर की जानकारी के बबना जमीन पर न िंधगरती ै। कफर भी भारत के िोग पर्ु आ ार के अभ्यस्त ैं और इसीलिए चतुथ शवग शके लिए पर्ु भिण को प्रनतबधिंधत करने के ननयम बनाए गए ैं तथा अन्य वगों के लिए तो इसका ननषेध ी ै। पररणामतः ह दिंओु िंमें इसे ेत्याग

देने

की ी भावना पाई जाती ै।

ह दिं ूधम शमें जानतयों का आधार आधथकश ै। ब ुत सी आधुननक जानतयों में लसफश पेर्ागत प्वभाजन ै। प्रत्येक व्यक्क्त सभी कायों के लिए उपयुक्त न िं ोता ै और व अपनी इच्छानुसार सभी तर का व्यापार और कृष्ष आहद अभी भी गृ ृ उदयोग के रूप में ी ै तथा प्वदयुत् ्की स ायता से म छोटे उदयमों का भी स ारा िे सकते ैं। व्यापार के रूप में जानतया ूँअभी भी बेकार न िं ुई ैं। िााकूँक जीवन के सुननक्श्चत कायक्रशमों के बारे में परामर्ों की मना ी न िं ै, क्योंकक बबना प्वर्ेष रुधच के य दासता का रूप िे िेती ै, क्जसकी वज से इसका जहटि आधुनुनक जगत् ्के साथ सामजिंस्य बना पाना कहिन ो जाता ै। स्पष्ट रूप से क ा जाए तो मानव की जानत का ननधारशण उसकी

इच्छा, भावना तथा ताककशकता की प्रधानता के दवारा ककया गया ै, जो कक उसके तीनों गुण यानी सत्,् रजस और तमस को दरर्ाता ै। मनु के अनुसार व्यक्क्त की जानत का सचिंनि तीन लसदधातिं के आधार पर ुआ ै, क्जनमें तप या व्यक्क्तगत प्रयास, श्रुतम यानी सास्क्ृिनतक वातावरण और योनन यानी आनुवलिंर्कता प्रमुख ै। इसमें प्रथम की परख ब ुत अस्पष्ट ै तथा इसकी उपिधधता भी न िं ै। य ूँजन्म ी केवि व्याव ाररक

आधार

नजर आता ै और इसकी सामजिंस्यता यानी कम शऔर पुनजन्शम का लसदधातिं भी ह दिंओुंको स्वीकाय श ै। प्वलभन्न नस्ि के िोग केवि जानत के आधार पर ी सौ ादश के साथ र सकते े ैं। इस व्यवस्था के ननमातशाओ निे म सूस ककया कक चूँकक इसके ननधारशण के लिए जन्म ी केवि उपिधध आधार ै, इसलिए समाज के वगीकरण का वास्तप्वक आधार आध्याक्त्मक चररत्र ी था। मनु नेबताया कक यहद एक व्यक्क्त ननमिश मन के साथ नेकी का जीवन जीता ै, तब व योनन के प्रभाव पर प्वजय प्राप्त कर िेता ै। म ाभारत के अनुसार, "पुनजन्शम का आधार लिर्ि न ोकर लसफश आचरण ी ोता ै।" मने जन्म के अनतररक्त अन्य सभी कारकों की अनदेखी की ै। पररणामतः इस व्यवस्था ने िोगों को एक प्वर्ेष वग शमें किोरतापूवकश सीलमत कर हदया और इसका प्रभाव सामाक्जक उत्थान के लिए नुकसानदे र ा। इस व्यवस्था के अवरोधों ने जीवन के प्रभाव पर भी ध्यान न ी िं हदया। म समाज की एक ऐसी क्स्थनत में आ गए, ज ा ूँसामाक्जक जीवन की अव्यवस्था इतना बढ गई कक जन्म के लसदधातिं की प्रधानता पर असर पडा। इसी सदिंभ शमें म ाभारत क ता ै, "प्ववा ों में इतना अधधक मिे ो

गया

कक जानत और जन्म की प्रधानता न िंर ी। मनु ने क ा कक यहद चररत्र पर ध्यान न दें, तब जानत के वगीकरण

का

कोई अथ शन िं ै।"

प्वलभन्न वगों के कायों ने ि ोगों में दप शऔर प्वलर्ष्टता का भाव उत्पन्न ककया था, परिंतु प्वदयाथी कि
के प्रलर्ण के दौरान समानता का ननयम ी ि ागू था। सवोच्च सदगुण के अनुसार म क्जस तर का व्यव ार
चा ते ैं, में वैसा ी व्यव ार करना चाह ए। प्वष्णु ुपुराण के अनुसार, "तुम् ें सभी जग समानता का व्यव ार
रखना चाह ए, क्योंकक समानता का व्यव ार ी ईश्वर की उपासना ै।" कुछ ऐसेभी कतव्शय ैं, क्जन् ें सभी जानत
के ि ोगों को करना चाह ए, जैसै ेअह सिंा, सत्य, ईमानदारी, स्वच्छता और आत्मसयिंम I आखखरकार जानत के
वगीकरण का सबिंधिं मारी आकक्स्मक अकुर्िता से ै, इसलिए इसे ेअ ि का प्वषय न ि ींबनाना चाह ए।
सवर्शक्क्तमान की कोई जानत न ि ीं ै। जानत का ननयम लसफश गृ ृस्थ के स्तर पर ी ि ागू ोता ै। य ॉूंतक कक य
मानवता से भी ऊपर ोने का दावा न ी ि ंकर सकती ै। वतमशान की आवश्यकता जानतयों का उददेश्य स्वीकार
करना और सच्ची सामाक्जकता स्थाप्पत करना ै। धमाधांता का अलभर्ाप और जीवन के प्रनत किोर प्रनतबधिं
मानवता के लिए नुकसानदे ै, इसलिए इन् ें छोड देना चाह ए। मनु ने भी इन् ें प्रोत्साह त न ि ींककया ै,
"खेनत र, चरवा े, नौकर, नाऊ और ननधनश अजनबी भी अपने ाथों से सेवा अप्पतश करते े ।ैं"

भारत में मुसिमानों के आनेसेप ि े ेजानत के ननयम किोर न ि ींथे। सामाक्जक ननयमों में ि चीिापन
तथा ननयमों के त त प्वकास की बलि न ि ींदी गई थी। मने पुराणों में व्यक्क्तयों और पररवारों की क ाननया ॉूंपढी
ैं, क्जनका ननम्न से उच्चतर जानतयों में पररवतनश ो गया था। मनु भी इस उतार-चढाव की सभिंावना को स्वीकार
करते े ैं। ननरिंतर स्रुदधीकरण के दवारा जानत-पररवतनश के ननयमों के बारे में भी बताया गया ै। ननचिे ेस्तर से
गुणों के आधार पर उच्च स्तर तक प ुॅंचना सभिंव था। जब ह दिंओुंने अपनी राजनीनतक स्वतत्रिंता खो दी थी और
नए र्ासकों ने धमातांरण की नीनत अपनाई, तब सामाक्जक प्रयास ि ुप्त ो गया और ननयम व परिंपरा राष्रीय
एकात्मकता के लिए घातक पररणाम के साथ पूजा की वस्तु बन गया। में धम शकी मिू आत्मा को ालसि करना
ै, जो कक ककसी प्वर्ेष रूप तक सीलमत न ि ींथी, बक्ल्क पुरानेस्वरूप को पररवनततश करते े ुए नए प्वकलसत रूप में
अलभव्यक्त ुई थी। राजनीनतक असुरिा के समय हदया गया जानत को अनत म त्त्व अब आवश्यक न ि ीं ै। जानत
का भप्वष्य तभी ै, जब य सामाक्जक मामिों तक सीलमत ै। प्रत्येक समाज में ि ोग उन् ि ींके साथ प्ववा सबिंधिं
बनाते े ैं, क्जनकी आदतें और व्यव ार समान ोते े ैं। समान पेर्ों में जो ि ोग सबिंधिं बनाते े ैं, उनमें आम
सस्ंकृनत परिंपरा बे तर ढिंग से प्वकलसत ोती ै और समान पेर्ों में प्ववा ोना आजकि काफी प्रचिन में भी ै।
य ॉूंतक कक भारत में प्राचीन कि में भी अतिंरजातीय प्ववा ों की मना ी न ि ींथी, परिंतु उन् ें प्रोत्साह त न ि ीं
ककया जाता था। अनिुोम और प्रनतिोम प्ववा ों का प्रचिन न ि ींथा, पर ह दिं ूननयमों के अनुसार इनकी मना ी
भी न ी ि ंथी। चूँकक इस तर के प्ववा ों से समाज के व्यापाररक, सामाक्जक और आध्याक्त्मक अव्यवस्था बढने की
प्रवृपृत्त उपजी थी, इसलिए इनका प्रचिन आम न ि ींथा। सामाक्जक सबिंधिंों के रूप में जानत का राष्र के बृ ृत् ्स्तर
पर स्तिैप न ि ींथा। सम्राट् अर्ोक ने भी अपनेएक ह दिं ूमत्रिंी से क ा था, "जानत का म त्त्व प्ववा सबिंधिंों के
लिए ो सकता ै, परिंतु धम शका सबिंधिं सदगुणों से ै और इसका जानत से कुछ भी ि ेना-देना न ि ीं ै।"

य भी क ना अनुधचत ै कक ह दिंओुं ि ंका समाज-सेवा से कोई सबिंधिं न ि ींथा, जबकक अछूतों के उदधार के
लिए काफी काम ुए ैं। य भी स्मरण न ि ींककया जाता ै कक स्वतत्रिं भारत में इस प्पछडे वग शकी क्जतनी सेवा ुई

ै, उतनी िा के हदनों में ककसी भी स्वतत्रिं देर् में न िीं ुई ै। अनत प्वकलसत राष्ट्रों ने तस्मानी और ऑस्रेलिया की जनजानतयों, माओरी और उत्तरी अमेररका के रेड इिंडडयन को ककस तर से सभ्य बनाया था ? आमतौर पर म उन् ें प्वुिप्त बताते े ैं और ज ाूँ य सभिंव न िीं ै, व ाूँ मने इनके साथ जगिंलियों की तर व्यव ार ककया। यहद अग्रिंजों की सुरिा में काकफरों की बढोतरी ोती और डच िोगों में जावा के िोगों की तथा इन सभ्य िोगों के सामने बब्रहटर् भारत बच गया, तब भी इसकी वज य ी थी कक ईश्वर ने इन सभ्य िोगों के अनुकूि य ाूँ वातावरण इन् ें न िीं हदया था।

यूरोप के िोग य ाूँ के गरम इिाकों के ननवासी कभी न ी िं बन सके, मगर प्रकृनत ने इसकी सीमाए ूँ बचा रखी थीिं तथा इन गरम िेत्रों का इनत ास बबल्कुि ी अिग र ा ै। जब आयों का य ाूँ के िोगों से मेि-लमिाप ुआ, तब उन् ोंने उन तरीकों की खोज की, क्जसके माध्यम से अिग वगों के िोगों का सामाक्जक और आध्याक्त्मक प्वकास ो सके। आयों ने कोि िोगों में एक अनाय शप्रनतननधध का भी चयन ककया और उसके दवारा प्पता रूपी ईश्वर और भाई रूपी व्यक्क्त का सदिंर् हदया। कृष्ण के व्यव ार ने समाज को आश्चयचशककत कर हदया था तथा वैहदक भगवान् इिंद्र और ब्रह्मा को भी नाराज कर हदया था। आज इन भगवानों के आय शउपासक कृष्ण को ईश्वर के अवतार के रूप में देखते ैं। िाकूँक कृष्ण के मन में आय शप्वचारकों के प्रनत ब ुत सम्मान था तथा य भी क ा गया ै कक युधधक्ष्िर के राजसूय यज्ञ में उन् ोंने ब्राह्मण अनतधथयों के पावूँ धोए थे। आयों ने अनायों के भगवानों के साथ सहृदयतापूवकश व्यव ार रखा था तथा आवश्यकतानुसार उनमें सुधार ककया गया था एव िं कम भी आकूँा गया। मह षासुर की उपासना करनेवािों को बताया गया कक ब्रह्माडिीय आत्मा मह षासुर से अधधक म ान् ै। नागों की उपासना करनेवािों को समझाया गया कक नागों के ईश्वर नागेश्वर या कृष्ण अधधक म ान् ैं और उन् ोंने कालिया नाग के फन पर नृत्य ककया था। भारत के सास्िंकृनतक इनत ास में ननचिंवेग शके ननरिंतर प्वकास के धचह्न लमिते ैं। जब कभी समाज में मानवता की अनदेखी की प्रवृप्त्त बढी, तब बुदध या र्िंकराचाय शजैसे व्यक्क्तयों का आगमन ुआ तथा सामाक्जक समानता पर बि हदया गया। 2000 मीि िंबी और 1500 मीि चौडे फैिाववािा य देर् डान और वीरसीबा के समान न िीं ै। मारे आज के सविंाद का माध्यम भी कुछ समय प िे तक उपिधध न िीं था। यहद मारे पुरानेभारतीयों ने प्पछडे वगों को सभ्य बनाने का काम अनत उत्सा से न ककया ोता, तब मारे पास दलित वगों की सख्िंया मात्र 50 िाख ी न ोती बक्ल्क और भी ब ुत ोती। जब भारत में बा री आक्रमणकारी आए तब ह दिंुओिं के मौजूदा रूहढवादी वगों में आत्म सुरिा की भावना से तार्ा उत्पन्न ुई और व जानत-व्यवस्था के घेरे से बा र छूट गए। िाकूँक मनु क तें, "क ी िं भी पाचूँवा ूँ वग श न िीं ै, पर जो जानतया ूँ स्वतः ी धम शसे प्रभाप्वत न िीं ैं, वे पाचूँवें वग शका ननमाणश कर िेती ैं 1 ^ prime prime जो िोग अपनेकतव्शयों का पािन न करते े ुए ननदशयतापूवकश दूसरों को सताते े ैं और प्वध्वसिंकारी जुनून रखते े ैं, वे म्िेच्छ वग शमें आते े ैं।" इन र्ोचनीय िोगों के लिए कोई भी र्दद अनत कठोर न िीं ै। ऐसेिोग, जो ककसी अन्य नस्ि या ननम्न वग शसे सबिंधिंधत ैं, उन् ें लसफश इसी आधार पर असम्माननत करना ह दिंू धम शकी आत्मा में न िीं ै। ह दिंू नेतृत्व ने बारिंबार इस सत्य को दु राया ै कक सभी व्यक्क्तयों में आत्मा ोती ै।

जो िोग जीवन के सघिंष शसे ननवृतूत ो चुके ैं, उनके लिए वानप्रस्थ और सन्यिास आश्रम बनाए गए ैं। सन्यिासी ह दिं ूधम शका उच्चतम पुरुषाथ शदरर्ाता ै। सभी तर के त्याग एव िंतप दवारा व्यक्क्त इस क्स्थनत तक प ुँचता ै। उसके भावनात्मक जीवन में परुभाव की भावना न ोकर ईश्वरीय भक्क्त अलभव्यक्त ोती ै। उसका मक्स्तष्क सभी अतकों और अधिंप्वश्वास से दरू ो जाता ै तथा व मानवता में सपिंूणतशा म सूस करता ै। उसकी सकक्रयता मानवता की सेवा में र ती ै, क्योंकक व जानता ै कक ईश्वर का सभी में वास ै। व व्यक्क्त जो सभी में एक रूप देखता ै, व स्वाथपूशण शपाप न िंकर सकता ै। व भगवदगीता का प्रमुख व्यक्क्त ै, व बुदधवाद से जाग्रत् एक सच्चा ब्राह्मण ै, जो कक ननधनशता में म ान् र ता ै तथा कष्ट में भी आनदिं भाव रखता ै, उसके हृदय में सुख और दुःख का समभाव ै। व सभी जीवों से प्रेम करता ै तथा व बुराई का प्वरोध न करते े ुए उनपर प्रेम से प्वजय प्राप्त करता ै। उसमें व्यक्क्त की आत्मा अपनेउच्चतम स्तर पर बनी र ती ै। उपननषदों के समय में ऋप्षयों के कािं सैं भारत में सन्यिास का म त्त्व र ा ै। सन्यिास के लिए राजाओिंने अपना राज्य छोडा और ननधनशता अपनाई तथा योदधाओ िंने अपने प्वजय के अ िं का त्याग करते े ुए अपनेस्त्रों का त्याग ककया और कुर् कारीगरों ने अपनेपररश्रम एव िंकिा को ईश्वर को समप्पतश ककया।

य सन्यिासी मानवता के स ायक थे। इनमें से कुछ म ान् सन्यिासी जैसे ेर्किंर, रामानुज, रामानदिं और कबीर आहद की राष्ट्र-ननमाणश में भी भूलमका थी और इनके धम शकी नीविं रखी। य भी सत्य ै कक भारत में मध्यकािीन यूरोप की ी भानूँत कुछ सन्यिालसयों ने ससिंार की धचतिंाओिंसे दरू टने के लिए वनगमन पियन की त्रुहट अपनाई थी। इन मिों के सतिों की आवाजें अधिंकार में भटक गईं तथा पाप के प्रनत उनके प्ववेक और स्वाथपूशण शमिो के प्रनत उनकी भावना हदखाती ै कक मध्यकािीन यूरोप का मिवाद ईसा की वास्तप्वक लर्िा न िंथी, जो कक में स्वय िंको एक प्वश्वसनीय सेवक के रूप में देखने के लिए क ती ै, अतः जीवन के सघिंष शको छोडकर भाग जाना सच्चा सन्यिास न िं ै, क्योंकक सच्चा सन्यिासी मानवता के लिए प्वनम्रतापूवकश सच्चे प्रेम और आनदिं के साथ कष्ट स ता ै। जीवन के उच्चतम स्तर तक प ुँचने के लिए धम शके र्ाक्धदक ननयमों का पािन आवश्यक न िं ै। ऐसेभी उदा रण ैं, जब सामान्य क्स्थनत से अचानक पररवतनश ुए और िोगों में आश्चयजशनक रूप से नैनतक उत्थान ुए, क्जन् ोंनेजीवन का उच्चतम अध्ययन भी न िं ककया था। धम शके ननयम सामान्यतया व्यक्क्त के सामान्य प्वकास को ी दरर्ाते े ैं। स्वतत्रिं आत्माएँअकसर पारिंपररक व्याकुि कर देनेवािेसविािों की ननरथकशता पर मुसकराती ैं, क्योंकक य ननचिे स्तर के जीवन को व्यग्र कर देता ै। एक सन्यिासी का दवार सभी जानतयों के लिए खुिा र ता ै। व्यक्क्त को अपने जीवन में अपने तीन ऋणों से मुक्त ुए बबना मोि की इच्छा न िं करनी चाह ए, जैसे ईश्वर का ऋण प्राथनशा के दवारा, प्पतृऋण दान व सतिंान के पािन पोषण और व्यक्क्तयों की सेवा के दवारा तथा ऋप्षयों का ऋण प्राप्त ज्ञान को दसूरों को देनेके दवारा।

ह दिं ूधम शमें सभी तर के व्यक्क्तयों जैसे आवेर् ीन वृदध, जो कक जीवन के सभी कमों से ननवृतूत ो चुका ै तथा सासिंाररक सफिताओिं के सघिंष शमें िगे युवाओ िंके लिए भी स्थान ै। ह दिं ूधम शकी य चारों जानतया ूँककसी प्वर्ेषता को प्रेररत करने के लिए न िंैं, बक्ल्क य सपिंूण शमानवता के एकीकरण के लिए ैं, क्जसमें ककसी तर के र्ोषण की भावना न िं ै। ह दिंूवाद ने एलर्या के एक बडेह स्सेको सभ्य बनाने का काम ककया ै। िोगों को

साम्राज्यवाद से अधधक सास्कृिनतक प्वजय और आध्याक्त्मकता ने आकष्षतश ककया था। मध्य एलर्या में खोटान के राजवर्िं से िकेर जावा के दवीप तक जो कक भारत और ऑस्रेलिया के बीच ै, य ाँ ह दिंू ूप्वदवानों की जीवन और किा की अलभव्यक्क्त नजर आती ै। दप्वतीय ईसवी में जावा में ह दिंू ूआए और य ह दिंू ूएव िंबौदध धम शसे अभी तक प्रभाप्वत ैं। आज जापान, चीन और बमाशभारत की तरफ अपनी आध्याक्त्मकता के मिू के लिए देख र े ैं, य ा ूँतक कक ईसाई भी कफलिस्तीन को इसी रूप में िे र े ैं। रूस से चीन तक म ज ा ूँक ी िंभी जाते े ैं समरकिंद ो या नतधबत, म ह दिंू ूसभ्यता के धचह्न देख सकते े ैं। पक्श्चमी एलर्या तथा मेसौपोटालमया के मैदैनी भाग एव िंहटगररस और इयुफ्रेट्स नहदयों के लसधिंचत िेत्रों में भी में ह दिंू ूसस्कृिनत के धचह्न लमिते ैं। बोधासकुई में 1400 ईसा पूव शतक के प्वदवानों के लिरिेखों से पता चिता ै कक उस समय िोग ह दिंू ूभगवानों की ी उपासना करते ेथे। भारत का य प्रभाव इसलिए न ीिं ै कक इसका धम शकाफी पुराना ै या य ाूँके सम्राट् म ान् ्थे े या य ा ूँप्वनार् के अस्त्र प्वकलसत ककए गए या बडे स्तर का प्वनार् ककया गया, बक्ल्क य ाूँकी बौदधधक समझदारी के लिए ै कक य ाँ प्वलभन्नता में भी एकता ै। ज ाूँक ी िंभी य बुदधधमत्ता प ुूँची, इसनेअपना प्रभाव डािा कक सभी चीजों में ईश्वर प्वदयमान ै। भारत में आनेवािी सभी क्क्तयों और धमों का य ाूँस्वागत ुआ, क्योंकक उन् ोंनेम सूस ककया कक आध्याक्त्मक ऊँचाई की प ाडी एक ी ै, परिंतु य ाूँतक प ुूँचने के रास्तेलभन्न ैं। जो िोग य ाूँसदिं रह त ोकर घूम र े थे ेकक सभी रास्ते ेएक ी मक्ज़िि तक प ुूँचते ैं, व क ते े ैं, "अपनी आखेँ खोिो और देखो ननचिे ेस्तर पर अिग-अिग ैं, पर ऊपर सभी एक ैं।" य भी ो सकता ै कक भारत के समावेर्ी प्वचारकों ने य ाँ आए दुनुनया के म ान् ्धमों की ताकतवर धाराओिंके साथ सामजिंस्य बना लिया था।

इसिाम और भारतीय प्वचार

बु दधधमत्ता के उच्चतम स्तर के उपरातिं म कई िेत्रों में क्जज्ञासाविी तिार् म सूस करते े ैं, यानी जीवन का एक ऐसा दर्नश, जो में मारे पूवजशों से अधधक सतुिंष्ट करे। धालमकश प्वचारों के पारिंपररक बधिंनों में प ि ेकी अपेिा काफी ढिीिापन आया ै। िोग पूण शस्वतत्रिंता का दावा करते े ैं और व आज के अनुसार अपने लसदधातिों को नया आकार भी देते े ैं। मारे आधुननक प्वचारों को नूतन प्वचारों में अधधक आकषणश म सूस ोता ै। प्राचीन धममशतों की वैधैता और उपयोधगता को पुनः न्यायसगिंत ि राने के लिए व्यवस्था बनाना एक चुनौती ै। प्वकासर्िी धमों के सभी आध्याक्त्मक नेता अपनेपारिंपररक दृक्ष्टकोण पर पुनप्वचशार कर र े ैं, ताकक उन् ें आधुननक ज्ञान और अनुभवों के प्र ार से बचाया जा सके। सर अ मद ुसैन धालमकश और सास्िंकृनतक धचतिंक ने अपनी पुस्तक में य दरर्ाने का प्रयास ककया ै कक इसिाम की व्याख्या आधुननक प्वज्ञान और दर्नश के दवदिंव के रूप में न ीिं ोनी चाह ए। में इससे इस स योग का प्वचार लमिता ै कक भारत भप्वष्य के इसिाम का पुनननमाणशकरनेवािा ै।

ककसी भी देर् में धम शका प्वकास इसकी सास्िंकृनतक परिंपरा और राष्रीय चररत्र पर ननभरश ोता ै। अरब में इसिाम एक अक्खड धममशत था, जो कक बाद की तार्क्धदयों के सुधारों से पूरी तर से अपररधचत था। जब इसनेपलर्यशा के िोगों को अपने अधीन बनाया, तब सामी प्रवृपूत्तयों में र स्यवाद का रुझान बढा। इसके साथ ी प्राचीन अरब परिंपरा ने दर्नश और भडकीिे िेलमथकों को जग दी, क्जसमें मु म्मद जन्नत और पृथ्वी के बीच के र स्यमयी व्यक्क्त बन गए। भारत में तकरीबन 7 करोड िोग इसिाम को मानते े ैं और उनका एक ब ुत बडा वग शह दिंओु िंकी तर ी व्यव ार करता ै। इसलिए य स्वाभाप्वक ै कक इसिाम के भारतीय रूप के अपनेअिग ी कारक ोनेचाह ए। आनेविे हदनों में भारतीय मुसिमानों को अपनी स्वय िंकी आध्याक्त्मक प्वरासत के अनुसार इसिाम की व्याख्या में सम्मान का अनुभव म सूस ुआ। ऐसा प्वधचत्र सा िगता ै कक मारे लर्क्षित मुसिमान भाइयों ने अपनी ननष्िा को इसिाम के प्रनत समप्पतश कर हदया और व स्पेने के मूर तथा बगदाद के खिीफा के वर्िंज बन गए। इन् ोंनेस्वय िंको ह दिंू ूदेर्वालसयों से सामाक्जक और सास्िंकृनतक रूप से अिग समझा।

म अपनी सपूिंण शमानलसकता न िींबदिते ैं, म लसफश अपने बौदधधक या धालमकश प्वश्वासों को ी पररवनततश करते े ैं। व्यक्क्त का धम शपररवतनश उसके पुराने देर् या उसके आदर्ों का पररवतनश न िीं ै। य स्वागत योग्य ै कक भारत के मुसिमान नेताओं ने प्वचार और व्यव ार में भारत की साझा आध्याक्त्मक प्वरासत को म सूस ककया और छदम धमगुशरुओं एव िंराजनेताओंके बनाए बनावटी मतभेदों का प्वरोध ककया। म चा े क्जस भी मत के ों, मारी नसों में एक ी खून ब र ा ै और म म ान् ्आध्याक्त्मक प्वरासत के वरर्ज ैं। आयरिडैं के ए.ई. ने भारत के प्वषय में क ा ै, " म पृथ्वी पर उन नस्िों में से बचे ुए िोग ैं, क्जनकी परिंपराए ूँईश्वर की तरफ जाती ैं।" भारत की वास्तप्वकता पुरातन कािंऔर ब ुत सी परिंपराओंकी तरफ जाते ुए मारी इच्छाओंके प्वरुदध ोनेपर भी मसे अनुरोध करती ै तथा मारी स्मृनत को झझोडते े ुए मारी प्वस्मृत आखूँों को खोिती ैं। भारत की आत्मा एक जीविंत प्राणक्क्त ै और य ी में भारतीय बनाती ै। अपनी प्वस्तृत आध्याक्त्मक पृष्ठभूलम के साथ भारतीय मुसिमानों ने इसिाम की वास्तप्वक उत्कृष्ट व्याख्या इस रूप में की, ताकक य आज के अज्ञानी धमगुशरुओ,ं धालमकश कट्टरपधिंथयों और राजनीनतक साक्जर्कताओशिंसे अिग हदखे। यहद भारतीय

मुसिमान क अपनी एप प्वश्वासों के प्वरासत को अपनाते ैं, तब व इसिाम के उन वास्तप्वक अनदेखे प िुओं पर जोर देगा, क्जसने वाकई सभ्यता और सस्क्ृनत को बढावा हदया तथा ऐनत ालसक दुघुटशनाओ िंसे उत्पन्न ननरथकश प्ववादों को नकारते ुए मृत ससिंार में जीविंता प्रदान की थी। व धालमकशता की उस जकडन को तोड देगा, जो कक िोगों के जीवन को अधिंभक्त के रूप में प्रभाप्वत करती ै तथा दुननया को इसिाम की मु म्मद के सदिंर् वािी व्याख्या देगा, जो कक उनके बाद के अनुयानययों दवारा हदए गए धममशतों के बजाय पैगबिंर के अधधक नजदीक ोगी। माननीय श्री अमीर अिी ने अपनी पुस्तक 'द क्स्पररट ऑफ इसिाम' और सर अ मद ुसैन ने 'नोट्स ऑन इसिाम' में भारत की अतीत की भूलम से पैदा ोनेवािे खूबसूरत फिों के पूवानुशमान के बारे में बताया ै।

दो

मु म्मद की गभिंीर धालमकश प्रकृनत ने भारतीय कल्पना को ब ुत प्रभाप्वत ककया ै। रचनात्मक र स्यवाद की तरफ देखने से पता चिता ै कक मु म्मद अकसर प्राथनशा करते ोथे ोऔर ीरा प ाडी पर ध्यान के लिए पूरी रात व ींरुक भी जाते ोथे। उनके लिए धम शसत्य को जाननेऔर इसके साथ जीने का एक प्रयास था। जीवन के एक रूप में धम शको समझनेपर म पथिं और परिंपराओंको समझदारी भरे दृक्ष्टकोण से अपना सकते ैं। पथिं तभी सत्य ोते े ैं, जब व जीवन की वास्तप्वकताओं को दर्ाते े ैं। अनुभव केवि पररपूणतशा न ीं ै, बक्ल्क य पथिंों की परख भी ै तथा प्रत्येक काि-अनुभव के प्रकार् में ी पथिंों की पुनव्याख्शया करता ै। सर अ मद ुसैन ने इसिाम के लसदधाितंों की पुनव्याख्शया ब ुत रूहढवादी ढिंग से न करते े ुए मध्यमाग शको अपनाते े ुए की ै। मारे िेखेक ने कुरान के र्ब्दों की र्ाक्ब्दक व्याख्या उस रूप में न ी िंकी ै जैसा कक मौिप्वयों ने की ै, बक्ल्क व ी ककया ै, जो उन् ें तकशसगिंत म सूस ुआ। ऐसा करने में व मु म्मद की भावना के नजदीक थे, क्जन् ोंनेककसी तर का प्रनतबधिं न ीं िगाया था और मानवता के प्ववेक को जाग्रत् ्ककया था। ईश्वर की अनुभूनत लसफश मानव आत्मा के दवारा ी ो सकती ै और में य यकीन करने के लिए बाध्य न ींककया गया ै कक सबसे े

बुदधधमान वी ◌ैं, जो कक अपने समय के पूवग्रश ◌ों और त्रुहुटयों से मुक्त ◌ैं। कुरान में कई चीजेंस्थानीय और अस्थायी रुधच की ◌ैं, जो कक क्वा धम शसे सबिंधिंधत ◌ै। सभी पथिों के रूहढवादी य भिू जाते ◌े ◌ैं कक धम शकी सूखी डुडयाँूकुछ न ◌िीं◌ैं, बक्ल्क व आत्मा ◌ी ◌ै, जो कक डुडयों में चपिता पैदा करती ◌ैं। सर अ मद ◌ुसैन ने इसिाम को मिौप्वयों के धालमकश मतवाद से पृथक् ककया, "म ◌ैंइसिाम और मुसलिमवाद में अतिंर मानता ◌ूँ। मुसिमानवाद प्वरुदध इसिाम न ◌िीं ◌ै। य तो इसिाम की आत्मा को भिुा चुका ◌ै तथा केवि अपने कानून को याद रखता ◌ै।"

जब म धम शमें अनुभव की तरफ ◌ोते ◌े ◌ैं, तब में य म सूस ◌ोता ◌ै कक ककसी भी मत को माननेविाा सच्चा धालमकश आपस में एक-दूसूरे के पास ◌ोता ◌ै। ह दिंुवाद के बृ ◌ृत् ◌्पररपे्रेक्ष्य में बताया गया ◌ै कक सभी धम शएक ◌ी सत्य की पुक्ष्ट करते ◌े ◌ैंऔर इसका ज़्जिुददीन रूमी की एक क ◌ावत से भी पता चिता ◌ै, "सभी धमों का मिू समान और एक ◌ी ◌ै।" भारतीय मुसिमान के लिए ननषेध के भाव को हृदय से स्वीकार करना असभिंव ◌ै और य ◌ी सामीवादी धम शका कारक भी ◌ै। भारत पुराने समय से ◌ी धालमकश स्वतत्रिंता और सामजिंस्यता का पिधर र ◌ा ◌ै। इसी भावना के लिए म ◌ान् ◌्अकबर ने सभी भारतीयों को आम धम शके दवारा एक समरूप राष्र में र्लमि करने की कोलर्् की थी, क्जसमें मुसिमान और ह दिंू ◌ूलमिकर र ◌ें; ◌िाकूँक उसका य प्रयास असफि र ◌ा, क्योंकक पररक्स्थनतयाँूउसके अनुकूि न ◌िींथी।◌ि य ध्यान देने योग्य ◌ै कक उपननषदों के आदर्वशाद से ◌ी इसका प्रभाव पडा था, क्जसमें सभी मतों को स्पष्ट करके इसको वैक्श्वक मूल्य प्रदान ककया था। अकबर के पोते दारा लर्को ने दो सागरों (ह दिंू ◌ूधम शऔर इसिाम) को लमिाकर काम ककया और लिखा ◌ै। उसनेमाना कक दोनों धमों की ◌िमता उन्नत स्तर के जीवन को पाने में स ◌ायता करने की ◌ै। सर अ मद ◌ुसैन के अनुसार म मिो के एक ◌ी ◌िक्ष्य पर प ◌ुँच सकते ◌े ◌ैं, कृपया स्मरण रखें कक क्जस प्रकार ब ◌ुत से आदमी ◌ैं और उनके उतनी मन ◌ैं, उसी प्रकार ब ◌ुत से धम शऔर ईश्वर के बारे में समझ भी ◌ै।" जो ◌िोग मुसलिम समुदाय के साथ जीते ◌े ◌ैं, सभिंवत: उन् ◌ें य यकीन कराना मुक्श्कि ◌ोगा कक य कैथोलिक प्वचारधारा कुरान की लर्ि्ा को प्रस्तुत करती ◌ै। य भी सत्य से अधधक और कुछ न ◌िीं ◌ै। य एक भ्रानिंतपूण शप्वश्वास ◌ै कक कोई धम शसच्चा न ◌िीं ◌ै, क्योंकक इसिाम कट्टरवाद, असह ष्णुता को जन्म देता ◌ै और य कुरान की लर्ि्ा के खखिाफ ◌ै। दूसूरे सूरा की प ◌िी आयत में मु म्मद से जो क ◌ा गया, लसफश उसपर ◌ी यकीन न ◌िींहदिाती ◌ै, बक्ल्क जो ◌िोग उनसे ◌ेलमिने गए, उन् ◌ें भी स्पष्ट करती थी। इसमें य स्पष्ट ◌ै कक ब ◌ुत से और भी सच्चे धम श ◌ैं. और ◌ोंगे ◌ेतथा इनमें से एक इसिाम भी ◌ै।

धालमकश प्वदवान् ◌्मु म्मद ने ककसी तर की परख की बात न ◌िींक ◌ी ◌ै। उनका प ◌िा कथन ◌ै, "जो भी क ◌े कक ईश्वर न ◌िीं ◌ै, पर ईश्वर ◌ी मुक्क्त देगा, मु म्मद य ◌ूदी और ईसाई धम शकी ननष्पदधता का प्वरोध करते ◌े ◌ैं। उनके अनुसार, जो भी ईश्वर में प्वश्वास करता ◌ै और उसकी इच्छा के अनुसार काम करता ◌ै, व मिो का अधधकारी ◌ै। वे क ते ◌े ◌ैंकक य ◌ूदी और ईसाई के अिावा और कोई भी स्वग शन ◌िींजा सकता, यहद तुम सच क ते ◌े ◌ो, तब इसका प्रमाण प्रस्तुत करो, परिंतु व जो ईश्वरालभमुख ◌ै और स ◌ी कम शकरता ◌ै, उसे ◌ेईश्वर से इसका पुरस्कार लमिेगा।" (सूरा V, 105) "क्जन् ◌ें भी ईश्वर में यकीन ◌ै, व चा ◌े जो भी ◌ों, व उधचत कम शकरते ◌े ◌ैं, व न तो दु:खी ◌ोंगे ◌ेऔर न ◌ी डरेंगेतथा ईश्वर उन् ◌ें इसका पुरस्कार देगा।" (सूरा V 69) मु म्मद ने पथिं से अधधक

व्यव ार पर बि हदया ै। प्रत्येक धम शजो नेकी को प्रोत्साह त करता ै, व स्वीकार करनेयोग्य ै। "प्रत्येक व्यक्क्त के लिए मनेएक ननयम और एक माग शबताया ै। यहद ईश्वर चा ता तो उसनेतुम सभी को एक ी व्यक्क्त बनाया ोता, परिंतु उसनेतुम सभी को अिग-अिग बनाया, ताकक तुम ज ा ूँर ो, व िीं नेक काम करते े र ो। कुरान के अनुसार, "क्जन् ें ईश्वर में यकीन ोता ै, व नेक काम करते े ैं।" इसी की पुक्ष्ट करते ुए आगा खाूँ ने क ा ै कक इस अथ शमें म ात्मा गाधिी भी एक मुसिमान थे। य ाूँतक कक ईसा ने भी य न िीं क ा कक उसपर प्वश्वास से तुम उसे जानोगे, े बक्ल्क उसके पररणामों से तुम उसे ेजानोगे। पीटर ने सच ी क ा ै, "सत्य के बारे में म ैंम सूस करता ूँ कक ईश्वर व्यक्क्तयों का सम्मान न िींकरता ै, बक्ल्क प्रत्येक राष्र में िोग उससेडरते ैं और उनके नेक काम ी उसे ेस्वीकाय श ैं।"

सर अ मद ुसैन क ते े ैं कक इसिाम का सच्ची ईसायत या ककसी अन्य सच्चे धम शसे प्वरोध न िीं ै, क्योंकक सभी धमों के सार में ईश्वर को प्पता और िोगों के साथ भाईचारे की बात ै, केवि कट्टर धालमकश मत ी आपस में सघिंष शकरते े ैं। ईसा के प्रनत प्वश्वास मु म्मद के प्रनत प्वश्वास जैसा ी ै। ककिंतु जब सटें पाि में य यकीन करने के लिए क ते े ैं कक ईसा मारे उदधारक ैं, तब व ईश्वर मानवता तक उतर आतें और इस प्रस्ताव पर ईसाई प्वचारकों के लिए ईसायत का बचाव करना मुक्श्कि ो जाता ै कक य इसिाम का प्वरोध करती ै, जबकक वास्तव में य मु म्मद के दावों का समथनश ी करती ै। इसिाम ने ईसा को एक पैगबिंर या ईश्वर को दूत माना ै, क्जसने मानवता के लिए धम शका सुधार ककया था। व सभी के लिए अन्य नश्वर िोगों की भाूँनत एक मानव ी थेऔर पापों के सबिंधिं में तथा अन्य िोगों की भाूँनत जरूरत के लिए ईश्वर पर ी ननभरश थे। े इसिाम मु म्मद का प्वरोध या उन् ें ईश्वर के बराबर न िींप्रस्तुत करता ै, जैसा कक कुछ मिौप्वयों ने उन् ें अ मद के रूप में अ द भी क ा ै। मारे पैगबिंरों ने स्वय िंको कभी भी मनुष्यों सेअधधक ोनेका दावा न िींककया ै। मु म्मद क ते े ैं,

"ईश्वर ने मुझे चमत्कार करनेके लिए न िीं, बक्ल्क तुम् ें उपदेर् देनेके लिए भेजा ै। मनैं कभी न िींक ा कक अल्िा का खजाना मेरे ाथ में ै और म ैंदेवदूत ूँ तथा म ैंनछपी ुई चीजों के बारे में जानता ूँ। म ैंअल्िा की मे रबानी के बबना न तो मदद कर सकता ूँ और न ी स्वयिंपर यकीन ी कर सकता ूँ।" (सूरा xvii, 95-98)

िािाूँक मु म्मद के प्रथम अनुयानययों का उनके प्रनत िगाव और उत्सा इतना अधधक था कक उनके प्रनत कई तर की क ाननयों ने भी जन्म िे लिया था। क्जस रात पैगबिंर का जन्म ुआ था, य भी क ा गया कक चौसरोज का म ि भूकिंप में धगर गया था तथा मागी की प्प्वत्र अक्ग्न बुझ गई थी और सावा की झीि सूख गई थी तथा हटगररस में बाढ आ गई थी और दुननया भर की सभी मूनतयशा ूँऔधिं मु ूँ जमीन पर धगर गई थी।िं क ाननयों की इन परिंपराओिंको कभी भी स्वीकृनत न िींलमिी। सर्िंयवाद और अप्वश्वसनीयता के लिए अरब के उनके पुराने अनुयायी ी क्जम्मेदार थे। य ाूँतक कक जेरूसिम तक की मु म्मद की राबत्रकािीन यात्रा मक्का के पास उन् ें सुनाई पडी, ईश्वर की आवाज की क ाननया ूँभी इसिाम के लिए कभी भी आवश्यक न िीं बन पाई तथा पैगबिंर के पैगबिंर तक को भी सम्मान प्राप्त न िीं ुआ था। क ाननयों के रुझान से पता चिता ै कक उनकी उपासना में स्वय िं को ईश्वर के सम्मुख अलभवादन करना र्ालमि ै। उनके पास के मध्यस्थ की प्राथनशा भी मूनतपूशजा की भाूँनत ोगी तथा उनका सबसे बडा काम पैगैबिंर की कब्र और इमामों के मकबरों को ढ ाना ोगा।

मु म्मद जैसे ेप्वचारक के लिए बिपूवकश धम-शपररवतनश की तरफदारी करना असभिंव ै। म िोगों से उनके प्वश्वासों को पररवतनश करने के लिए बाध्य न ी िंकर सकते ैं। धम शमें ककसी भी तर की बाध्यता न िंीं चाह ए। "क्या तुम िोगों के प्वश्वास के लिए जबरदस्ती करोगे, े जबकक प्वश्वास तो केवि अल्िा से लमिता ै।" इसमें सदिें ै कक मु म्मद का प्वचार अरब में न र नेविाों को इसिाम धम शमें पररवनततश करने का था। धालमकश उत्पीडन और बिपूवकश धमपशररवतनश ने इसिाम के नाम को किकिंकत ककया था तथा य इसिाम की वास्तप्वक आत्मा के प्रनतकूि ै। उमर, जो कक इसिाम धम शका उत्पीडक था और बाद में इसका धम शप्रचारक भी बन गया। इसी ने उन िोगों के खखिाफ प िी बार तिवार उिाई, क्जन् ोंनेइसिाम को तुरिंत स्वीकार करने से मना कर हदया था तथा मु म्मद के कुछ अनुयानययों ने इस दृक्ष्टकोण का भी प्रचार ककया, जो िोग धालमकश प्वश्वास के लिए िडते े ुए प्राण त्याग देते े ैं, वे सच्चे र् ीद ैं। भारतीय मुसिमानों ने अपनेह दिंू भाइयों के साथ धालमकश स्वतत्रिंता में प्वश्वास बनाए रखा। इस बारे में सर अधदुरुश ीम ने क ा, "य बबल्कुि ी गित धारणा ै कक इसिाम का धम शऔर कानून बिपूवकश धम शपररवतनश करना ै।" खखिाफत आदिंोिन चा े व राजनीनतक ी क्यों न ो, इसनेधालमकश स्वतत्रिंता बढाने में वाकई स ायता की थी। सर चाल्स शटाउनर्डे, जो कक कथत उमरा के समथकश थे, लिखते े ैं, "भारत के ह दिंओुं ने य ूाँकी सभी जानतयों के साथ धालमकश स्वतत्रिंता बना रखी ै। भारत की आत्मा इसिाम की लरिा इसके कुछ किोर प िुओ िंको रा त प ुूँचाने के लिए दे र ी ै। ह दिंू धम शऔर इसिाम के आपसी मेि-जोि से प्वलभन्न धालमकश व्यवस्थाओंमें सतिंुिन को प्रोत्सा न लमिेगा।"

तीन

म अब इसिाम के धालमकश प िू के बारे में जानेंगे ेकक क्या इसका ईश्वर-बोध ह दिंू दृक्ष्टकोण का प्वरोधी ै। सभी धम शईश्वर की प्वषयपरक वास्तप्वकता से स मत ैं, इसलिए ईश्वर के गुणों की उपासना सभी धमों में अिग-अिग ै। ह दिंू दृक्ष्टकोण के अनुसार कोई भी प्वचार ईश्वर के र स्य को प्रकट न ी िंकर सकता ै। ईश्वर को ताकककशक सकिंेतों के माध्यम सेपाररभाप्षत न िंीं ककया जाता ै, परिंतु उसे ेआत्मा की ग राई से म सूस ककया जा सकता ै। म अपने उपिधध ससिंाधनों से इसेपाररभाप्षत न िंींकर सकते ।ैं म अपनी स्वय िंकी चेतना से पररधचत ोते े ैं, इसलिए ईश्वर की प्रकृनत को उसी के अनुरूप व्यक्त करते े ।ैं ईश्वर सत्य, प्रेम और पूणतशा यानी बुदधधमत्ता, सुदिंरता और क्क्त या असीलमतता, कृपा और प्रभुत्व का स्वामी ै तथा मारे चेतन जीवन के तीन प िुओं–ज्ञान, भावना और इच्छा का प्रत्युत्तर देता ै। ह दिंू धम शका बत्रमूनत-शबोध ईश्वर की इसी प्रकृनत को दरर्ाता ै। ब्रह्मा रचनयता, प्वष्णु ुउदधारकता शऔर लर्व न्याय करते े ैं। ब्रह्मा चीजों को उसके आदर् श रूप में ननलमतश करते े ैं, उनका असीलमत ज्ञान सीलमत ससिंार में स्पष्ट ोता ै, जो कक था, ै और र ेगा। प्वष्णु ु अनतिं क्क्त और ब्रह्माडिं के ननयम के प्रेम रूप ैं। व में बुराइयों से िडने की ताकत देते े ैं तथा ऊपर उिनेमें स ायता करते े ैं। लर्व अनतिंक्क्त और न्याय के देवता ैं और व कुछ भी करने में सिम या बबना ककए छोडने या ककसी अन्य रूप में करते े ैं। ह दिंू अपनेईश्वर को चा े क्जस भी नाम से पुकारें, पर व इसमें प्रकार्, प्रेम और जीवन का सयिंोजन देखते ैं। सर अ मद ुसैन के अनुसार, सभी धम शएक ी वास्तप्वकता में यकीन रखते ैं।

ईश्वर एक ी ै, व अनतिं ै, इसका न आहद ै और न अिंत तथा व ककसी भी रूप में प्रनतबधिंधत या सीलमत न ी िं ै। येजदा, ईश्वर, जे ोव, गाड, अल्िा लिभन्न-लभन्न भाषाओिंमें एक ी अनतिं ईश्वर के नाम ैं। सीलमत मक्स्तष्क दवारा ईश्वर की असीलमतता और अभेदेयता के बारे में कुरान में कई स्थानों में लिखा गया ै। इसकी आयत क ती ै, "अल्िा एक ै; व र्ाश्वत, अजन्मा और जन्म भी न ी िंदेता ै, उस जैसा और कोई ै भी न ी।िं" इस ससिंार में उसके अिावा सभी पररवतनशरीि् और नश्वर ैं। व कािा और अतिंररि के घटनाक्रमों के भवूँर में अकेिा ी क्स्थर ै तथा य ी मारा आधार ो सकता ै, इसी के स ारे म ससिंार के अधिंकार, पापों, अत्याचारों का सामना कर सकते े ैं। ईश्वर से म ान् ्इस ससिंार में कुछ भी न ीिं ै। दृक्ष्ट उसे ेदेख न ीिंसकती, पर व मनुष्य की दृक्ष्ट देख सकता ै। व सभी र स्यों को जानता ै। (सूरा 104) खिीफा अिी ईश्वर के सभी तर के मानव रूपों को ननषेध करते े ैं। ईश्वर मानव के दवारा कक्ल्पत ककसी भी रूप के अनुरूप न ीिं ै तथा मानव की सासिंाररक चीजों से उसका मेि भी न ी िं ै। ईश्वर को श्रदधा से ी समझा जा सकता ै। ज्ञान की पूणतशा ी उसके गुणों का यथाथ श ै। यथाथ शकी पूणतशा में उसकी गभिंीरता का समावेर् ै और गभिंीरता की पूणतशा ी उसके सभी गुणों को नकारना ै। ईश्वर का स्थान, समय और माप से कोई सबिंधिं न ीिं ै। व्यक्क्त अपनेनकारात्मक आदर्ों से सतिंुष्ट न ीिंर ता ै, इसलिए व ईश्वर को एक व्यक्क्त के रूप में देखनेपर जोर देता ै। कुरान की र्ुरू की आयत के अनुसार, "इबादत अल्िा की करो, व र्ददों में जान फ़ूिंकता ै, दयािु और करुण ोनेके साथ व फैसिेके हदन का बादर्ा ै।" वैष्णव और ईसायत में प्वचार को प्रेम के रूप में हदखाया गया ै तथा य ूदी और इसिाम में ईश्वर को एक वक्ति बताया गया ै। ईश्वर सवर्शक्क्तमान पुजिं और र्ाश्वत न्यायी ै। मु म्मद फैसिेके हदन की बात बार-बार क ते े ैं कक "जब स्वग शऔर धरती आपस में लमि जाएगेंऔर अल्िा के अिावा कुछ न ी िं ोगा। य ाूँअन्य प िुओ िंकी भी अनदेखी न ीिं की गई ै। ईश्वर लसफश न्याय ी न ीिंकरता ै, बक्ल्क व पापों को माफ करनेवािा तथा पश्चात्ताप को भी स्वीकार करता ै।" (सूरा xL 1.2) व पथभ्रष्टों का मागदशर्कश, वेदना देने वािा, अस ायों का लमत्र, पीडडतों को सात्वंिना देनेवािा तथा इसका प्रेम माता के वात्सल्यमयी प्रेम की भानूँत ै। य ाूँकई आयतों में ईश्वर के प्रेम और उसकी कृपा को बार-बार बताया गया ै। "क्या व अधधक म ान् ् न ीिं ै, जो कक पीडडतों की पुकार सुनकर उनके दु:खों को दूरू करता ै और धरती पर उन् ें सफि बनाता ै।" (सूरा, xxvii 62) अपनेपापों के लिए ईश्वर से माफी मागँो और उसकी तरफ जाओ, क्योंकक व दयािु ै। इसके सभी अध्यायों में अधदुरुश मान से ी र्ुरुआत ोती ै, जो कक दरर्ाता ै कक उसकी सभी रचना में उसका प्रेम र्ालमि ै। मानव के हृदय सेपरदा टाने का भी काम व ी करता ै, ताकक व ईश्वर के पास प ुूँच सके। ईश्वर ी सभी को बनानेवािा और र्ददों में जान फ़ूिंकनेवािा ै। व कोई ऐसा देवता न ीिं ै, जो कक ससिंार से दूरू क ी िंबैिा ै। "ईश्वर पूरब-पक्श्चम सभी हदर्ाओिंमें ै। इसलिए तुम क्जधर भी मु ूँकरोगे ेतुम उसके सामनेोगे। व तुम् ारे भीतर भी ै। तुम उसे ेक्यों न ीिंदेखते े ो ?" (L 1 2.) य सच ै कक म ैंतुम् ें तुम् ारी आत्मा में सभी हदर्ाओ िंसे स्वय िंको हदखाऊँगा, जब तक कक तुम् ें य पूरी तर सेस्पष्ट न ो जाए। ननमाणश, उदधार और न्याय ी ईश्वर की प्वर्ेषताए ूँ ैं और व दैवीय एकता में बत्रदेववाद से बचाती ै।

प्रत्येक आत्मा की रचना ईश्वर के दवारा ुई ै और जब तक व वापस ईश्वर के पास न ीिंिौट जाती, इसे ेआराम न ीिं ै। इसकी जहटि प्रकृनत ईश्वर के प्रनत समपणश के लिए बनी ै। में अपनी बुदधधमत्ता का

म ईश्वर की प्वदयमानता सभी चीजों में म सूस कर सकें।
इस्तेमाि इस रूप में करना चाह ए कक
सवर्शक्क्तमान के अक्स्तत्व में प्वश्वास, ईश्वर पर सभी चीजों की ननभरशता स्वतः ी म सूस करा देगी। म ईश्वर की प्राथनशा करते े ैं और प्वनम्रतापूवकश उसके प्रनत कृतज्ञता म सूस करते े ैं। सभी प्राथनशाओिंका मूि आत्मप्वनम्रता और ईश्वर का मह मामडिंन तथा उसकी दया पर ननभरशता ै। म प्राथनशा के माध्यम से उसकी धरती पर क ी िंभी उसके प्रनत हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करते े ैं। म अपनी रोजाना की क्जदिंगी में उसका मागदशर्नश मागूँते े ैं और उसके आदर्शों पर चिने के लिए सघिंष शकरते े ैं। चा े म ज्ञान के दवारा उसकी तिाश् करें या भक्क्त का माध्यम अपनाए ूँया उसके प्रनत समप्पतश र ें, परिंतु अिंत एक ी ै।

इसिाम की नीनत का सबिंधिं उन्नत प्रकृनत से ै। यहद म स्वग शमें मौजूद परमप्पता के काबबि बनेंगे, े तब म ऐसा कुछ भी न ीिं करेंगे, े जो कक मानव के दैवीय मूि के खखिाफ ोगा। एक सच्ची धालमकश आत्मा बनने के लिए मु म्मद नमाज, रोजा, दान तीथयशात्राएूँ और आत्मसयिंम का पािन करने के लिए क ते े ैं। य ाूँदान पर ब ुत जोर हदया गया ै तथा आनतथ्य सत्कार एक धालमकश कम श ै। पप्वत्रता एक सदगुण माना गया ै। र्बबखोरी, जुआ और इसी तर के अन्य व्यसनों का ननषेध ै। धालमकशता का सार नैनतक जीवन ी ै। "जो िोग आडबिंर और जुनून से दूरू र ते े ैं तथा दान, प्राथनशा, प्वश्वास और ररवाजों को बनाए रखते े ैं, वे र्ाश्वत आनदिं प्राप्त करते ैं।" (सूरा xiii, 8) प्रत्येक मुसिमान ... जो नगिं
प नाएगा। इब्राह म बेन की क ानी इस नैनतकता को बताती ै कक मानव का लमत्र ईश्वर का भी लमत्र ोता ै। अधधकतर मुसिमानों का व्यव ार चा े जैसा भी ो, पर पर्ु के जीवन को िेकेर व उदासीन न ीिं ै, ककिंतु व इसकी पप्वत्रता पर ब ुत अधधक बि देते े ैं। इस धरती पर सभी पर्ु और मनुष्य बराबर ैं। पर्ुओ िंकी कुरबानी के
मामिे ेमें भारतीय मुसिमानों को कुरान की म त्वपूण शआयत याद रखनी चाह ए, "य मासिं या खून, जो कक ईश्वर को स्वीकाय शन ीिं ै, बक्ल्क उसे े तुम् ारी धमनशनष्ठा स्वीकाय श ै।" (सूरा xxii, 37) इसिाम में मिार्िता
और सघिंषप्शव ीनता कम देखनेको लमिती ै। इस सदिंभ शमें य भी लिखा लमिता ै, बुराई को अच्छाई से दूरू करो। जन्नत के बारे में मु म्मद का क ना ै, य उनके लिए ै, जो सपिंन्नता या प्वपन्नता दोनों ी क्स्थनतयों में दान देते े ैं तथा गुस्सेपर ननयत्रिंण करते े ैंऔर िोगों को माफ करते े ैं। (सूरा xL11, 7) भोजन, तिाक आहद के
सबिंधिं में छोटी बातों का इसिाम से सीधा सबिंधिं न ीिं ै। िााकूँक मु म्मद ने अपने समय के अनुसार ब ुत से ननषेध भी बताए ैं तथा इनके बारे में कोई अनत पप्वत्र जैसी बात भी न ीिं ै। माननीय श्री अमीर अिी के अनुसार, "मु म्मद के बताए ब ुत से ननयमों के सदिंभ शमें य भी याद रखना चाह ए कक व उस समय के िोगों और अस्थायी पररक्स्थनतयों को ध्यान में रखकर बनाए गए थे, जो कक उन पररक्स्थनतयों के जाने के बाद स्वतः ी गुम ो गए। इसलिए य मानना कक प्रत्येक इसिामी समझ आवश्यक रूप से अपररवतनशीय ै, मानवीय बुदधधमत्ता के प्वकास और इनत ास के साथ अन्याय ै।" पैगबिंर ने अधिंप्वश्वास के लिए मानव तकों की पराधीनता की मना ी की ै। ऐसा धम,श जो कक मानवीय समझ को सीलमत करता ै, उसे ेअमानवीय व्यव ार के लिए स योग
न ीिंहदया जा सकता ै। अब य भारतीय मुसलिम नेताओिं को तय करना ै कक य ा ूँके मुसिमानों के लिए व्यव ार में व कौन सी चीज आवश्यक ै, जो कक उन् ें आपसी प्रेम और भाईचारे के साथ र ने में स ायक ो।

जो िोग कुरान की ननषेधाज्ञा को न िींनकारते ैं, उनका फैसिेका हदन एक भयानक हदन ोगा, जबकक जो िोग उसे ेस्वीकार करते े ैं, व ईश्वर के पास अपने स्रोत एव िंस योग के लिए वापस िौट जाएगेँ। मु म्मद सा ब का उत्थान सीलमत और असीलमत के मिे का प्रतीक ै। सूफीवाद मानव के परम प्वकास को ईश्वर के साथ उसके एकीकरण को मानता ै, क्योंकक व ईश्वर को ईश्वरतुल्य समझता ै। इस सदिंभ शमें स्जिािुद्दीन रूमी मानव में ईश्वर की तरफ प्रेररत ोनेको ननम्न रूप में क ते े ैं-

'अजैव से म वनस्पनत बने,
वनस्पनत सेसमाप्त ोकर परुतक प ुँचे,
और परु से म मानव बने,
तब मृत्यु सेमें नीचे जानेका क्या भय ?
अगिा पररवतनश में फररश्ता बनाएगा,
कफर म फररश्ते ेसे उस अनतिं में ग़ालमि ो जाएगेँ,
य सपिंूण शअक्स्तत्व बताता ै,
म सभी उसी असीम के पास वापस िौटेंगे।'

ईश्वर से लमिना जीवन का अतिं ै। सूफी अि- जबीरी क ते े ैं, "जब मानव का प्विोप ोता ै, तब व पूण शतत्त्व को प्राप्त ोता ै। व न तो पास ोता ै, व न तो पररधचत ै और न ी अपररधचत, व न तो सभ्य ोता ै और न ी असभ्य, व न तो अिग ै और न ो ग़ालमि; उसका न तो नाम, न प्रतीक और न ी धचह्न ोता ै।"

सूफी मत ईश्वर में समाह त ोनेकी बात क ता ै तथा कुरान में जीवन के ब ुत से धचत्र हदखाता ै, क्जसका प्ववरण वास्तप्वक और ऐहिंद्रिय भी ै। क्जनकी ग़ाक्ब्दक व्याख्या न िींोनी चाह ए। "तुम् ारी रू को अल्िा कै पास आराम लमिता ै, उसे ेखुर् रखो और मेरे सेवकों के साथ मेरे आनदिं के बाग में प्रवेर् करो।" य दोनों दृक्ष्टकोण पूरी तर वेदातिंी की व्याख्या ै। जब तक पूणतशा न ी िंप्राप्त ो जाती, व्यक्क्तत्व का प्वकास थम न िींसकता और भप्वष्य चररत्र के प्वकास को अवसर प्रदान करता ै। मारा भप्वष्य मारे वतमशान जीवन पर ननभरश र ता ै। स्वग शया नकश मारे अपनेकमों के पररणाम ैं। य भी क ा गया ै कक ईश्वर की र स्यमयी इच्छा ी सभी चीजों को ननदेलर्त करती ै। इसिाम के बाद के इनत ास से पता चिता ै कक दैवीय प्रभुसत्ता में समाधान की समस्या में मानव की क्जम्मेदारी अधधक मायनेरखती ै। कुरान से पता चिता ै कक ईश्वर के व्यव ार में उसकी मनमरजी चिती ै। व सवशक्क्तमान ै और अपनी इच्छानुसार िमा और दिंड देता ै। वस्तुतः ईश्वर ककसी को भी भटकने ेके लिए प्रेररत कर देता ै और जो िोग पश्चात्ताप करते े ैं, उन् ें व रास्ता भी हदखाएगा। कुरान में ऐसी और भी आयतें ैं, जो कक मानव की क्जम्मेदारी पर जोर देती ैं। "कोई भी अपनेलसवा और ककसी के लिए प्रयास न ी िंकरता ै और दूसरों का बोझ भी न िींउिाएगा। जो भी पाप करेगा, व स्वय िं ी उसका क्जम्मेदार ोगा। जो भी पथभ्रष्ट ोगा, उसे े ी अपने भटकने की पूरी क्जम्मेदारी उिानी पडेगी।" सर

 अ मद ुसैन के अनुसार, भाग्यवाद इसिाम का ह स्सा न िीं ै। पैगबिंर ने ब ुत ी स्पष्ट रूप से बताया ै कक में

सवप्रशथम अपनी सामथ्य शका इस्तेमाि करना चाह ए और कफर ईश्वर के स ारे छोड देना चाह ए। म मेर्ा प िा भाग ी छोड देते े ैं और अपनेअक्स्तत्व के लिए दूसूरा भाग अपना िेतें। व्यक्क्त भाग्य का खखिौना न ी िं ै, उसे ेस ी या गित चुनने की स्वतत्रिंता ै। ईश्वर में अच्छा या बुरा काम करने के लिए बाध्य न िींकरता ै, बक्ल्क सच्चाई का माग शहदखिाता ै और इसे ेन करनेपर सजा के माध्यम से में इसे प चाननेमें स ायता करता ै। खिीफा अिी क ते े ैं, " े अल्िा के सेवको, तुम् ें जो भी काम सौंपा गया ै, उसे ेपूरा करो और नेक काम ी तुम् ें मौत के आसान दरवाजे ेतक िे जाएगेँ। याद रखो, तुम् ारा र पाप तुम् ारे कज शको बढाएगा और तुम् ारी जिंजीर को भारी बनाएगा। माफी का सदिंेर् आ चुका ै; सत्य का माग शस्पष्ट ै; तुम् ें जो आदेर् लमिा ै, उसका पािन करो। पव्वत्रता के साथ र ो, धमपशरायण र ो और अपनी र कोलर्र् में ईश्वर की स ायता तथा अपनेप्पछिे ेपापों की उससे माफी मागँो। ईश्वर के आदेर् लसफश आध्याक्त्मक जगत् ्के ननयम ैं। ईश्वर उन् िींकी स ायता करता ै, जो उसकी स ायता चा ते ैं और उन पश्चात्ताप करनेवािों पर अपनी कृपा करता ै, जो अपनी आत्मा को पव्वत्र करना चा ते ैं।

इसिाम एक ऐसा धम श ै, क्जसमें र स्य न िीं ै। इसकी सरिता ी इसकी ताकत और इसकी सुदिंरता ै। इसमें ककसी तर की धालमकश दुबोधता, अिौकक्क प्वरोधाभास या ताक्त्वक आडबिंर न िीं ै। य ऐसा वास्तप्वक धम श ै, क्जसमें एक केंद्रीय लसदधातिं ै, ज ा ँईश्वर प्रोत्साह त तथा र्ासन करता ै और सभी चीजों को पूणतशा प्रदान करता ै। इसका र्ातिं उच्च लसदधातिं सरि मक्स्तष्क वािों को अनुकूि िगता ै। सस्थागत रूप से य पूण शताककशक ै। इसमें कोई जानत या पुजारी न िीं ै तथा ककसी तर के बलिदान या परिंपरा की जरूरत न िीं ै, जो कक एकेश्वरवाद से िोगों को भ्रलमत करे। तीथ शके रूप में मक्का और काबा में मकबरा ी बा री स ायक ै, जो कक मु म्मद के दवारा बताए ब ुत व्याव ाररक दृक्ष्टकोण रखते ैं। नमाज के दौरान मुसिमान अपना चे रा मक्का की तरफ करते े ैं, जो कक एक म त्त्वपूण शकेंद्र ै, ज ा ँमु म्मद ने प िे–प िे अपनेधम शलसदधातिं की घोषणा की थी। मक्का की तरफ ध्यान मुसिमानों को उनके प्रनत प्वश्वसनीयता का ए सास हदिाता ै तथा य उनमें उम्मीद, आदर और समान आदर्ों के लिए पूजा का भाव उत्पन्न करता ै। िोकतत्रिं इसिाम का प्रमुख तत्त्व ै और य ी इस धम शको धालमकश सफिता हदिानेमें स ायक ै। य सभी मानवों को, चा े वे ककसी भी जानत-धम शके ों, अपनी तरफ आकप्षतश करता ै तथा य सभी में ईश्वर का सेवक बनने की िमता को प चाननेसे अवगत कराता ै।

'प्रत्येक मानव में नछपा ै ईसा,
उसकी मदद ो या ो रुकावट, उसे ेप ुचँे ेपीडा या रा त
यहद मानव की आत्मा से तुम परदा टाओगे े
तुम व ाँईसा को अवश्य पाओगे।'

मुसिमान तत्त्वम् ्अलस के लसदधातिं का बबना भय से पिान करते े ैं। वे अपनी मसक्जदों में ककसी भी क्स्थनत में आदमी और आदमी में फकश न िींकरते े ैं। ककिंतुय ी क्स्थनत ह दिंू ूमहिंदरों या ईसाई धगरजाघरों में देखने े को न ी िंलमिती, जबकक जुबान से व य ी क ते े ैं कक ईश्वर की नजरों में सभी बराबर ैं। इसिाम का दैवीय प्पतृत्ृव और मानवीय भाईचारे का य सरि मत पृथ्ृवी के अधिंकारमय स्थानों के कूरूरतापूण शजीवन से िोगों को बा र ननकािने में सिम ै तथा य उन् ें बे तर जीवन जीने के लिए प्रलर्क्षित भी करता ै। इसनेप्पछडी नस्ि्िों को ब ुदेववाद की भ्रि-भुिैया से बचाया और उन् ें रै्तान की पूजा, भाग्यवाद, नरबलि, लर्रु्त्या व जादू–टोने ेसे भी छुटकारा हदिाया। यहद य अपनी ननष्ठुरता और प्वषाक्त प्वकास से स्वय िंको अिग कर िे तथा अपने दोनों मिू लसदधातिों को म सूस करे, तब इसका एक उन्नत भप्वष्य ोगा।

ह दिंूवाद को इसिाम के साथ ुए अपनेअनुभवों से प्वर्ेष िाभ प्राप्त न ीं ुआ। य भी सच ै कक चैतन्य, कबीर और नानक जैसे ेम ापुरुषों के दवारा चिाया गया समाज सुधार आदिंोिन इसिाम से ब ुत प्रभाप्वत था। भारत में इसिाम के प्वस्तार के बाद ह दिंू ूधम शमें एकात्मक धमवशाद पर ब ुत जोर हदया गया। िाकूँक ह दिंूवाद ने काफी कुछ सीखा। अन्य धमों के प्रनत अनदेखी अन्याय और त्रुहट को जन्म देनेवािी मा ूँके समान ै। ब ुत सेअसास्ंकृनतक मुसिमानों ने इसिाम के आदर्ों की तरफ ह दिंओु िंकी आखूँ बदिं कर दी थी,िं जबकक इसिाम से ब ुत कुछ स ानुभूनतपूण शदृक्ष्टकोण ह दिंू ूधम शसीख सकता ै और इसी प्रकार इसिाम के लिए भी ह दिंू ूधम शमें सेब ुत कुछ सीखने के लिए ै। साथ- ी-साथ ह दिंू ूधम शको थोडा समझौतावादी ोना ोगा तथा ईश्वर के अपने त्रुहटपूण शबोध के लिए दोषारोपण के मामिे ेमें समानुभूनतपूण शरवैया अपनाना ोगा। ह दिंओुंको प्वश्वास ै कक सत्य धीमे-धीमे ेअपना काय शकरेगा और ननम्न स्तरीय बोध स्वतः ी समाप्त ो जाएगूँ। क्जस प्रकार अधिंकार सूय शकी ककरणों के सामनेदूरू ो जाता ै, ह दिंूवाद भी पप्वत्र प्वचार रखता ै। जो िोग ईश्वर के प्रनत उन्नत प्वचारों की समझ रखते े ैं, व भी बबरशतापूण शव्यव ार में लिप्त देखे गए ैं। जो िोग अह सिं ा की बातें करते े ैं, व भी परु्ु बलिदान को प्रोत्साह त करते ेपाए गए ैं। ह दिंूवाद को अपनी सह्यक्क्त त्यागनेकी जरूरत न ीं ै, बक्ल्क इसे ेइसपर ध्यान देना चाह ए कक इसका न्याय बना र े तथा प्रगनत की ननरिंतरता बनी र े। में अपनेसस्ंथानों में िोकताबिंत्रक व्यवस्था बनानी चाह ए, ताकक य धािमकश वाद-प्ववाद, दमनकारी सस्ंथानों से बच सके, क्जसके तिे मानव प्पसा जाता ै। इसिाम और ह दिंू ूधम शदोनों ी य लर्क्षा देते े ैं कक सच्चा धम शईश्वर की सच्चाई और ननमिशता से सेवा करना और जीवन के सबिंधिं में उसके ननयमों का पािन करना ै।

ह दिंू ूप्वचार और ईसाई धम शलसदधातिं

ऑक्सफोड शसम्मिन में ह दिंवूाद पर अपनेपत्र को प्रस्तुत करते े ुए लम. ग्रीट्स ने क ा, "ह दिंू अकसर अपनेधम शको आगे ेबढातें, जबकक ब ुत कम ईसाई अपने धम शका पािन करते े ैं, जो कक उन् ें करना चाह ए।" वैसेय क ना काफी रिीन ै, पर ज ा ूँतक ह दिंू व्यव ार का सबिंधिं ै-ह दिंू प्वचार इससे अस मत नजर आता ै। म जो कुछ भी न ीिंसमझतें, उसे ेभी दोष देनेके लिए तैयार र ते े ैं तथा कुछ िोग ह दिंू धम शकी जीवतिंता को समझेबबना ी इसपर फैसिेदेते ेर ते े ैं। क्जस म ान् ्चीज के लिए व्यक्क्त जीता या मरता था या अभी भी जी र ा ै या मर र ा ै, व बबना भावना के न ीिंपाई जा सकती ै तथा इसे े ी म धालमकशता क ते े ैं। यहद इसी भावना के साथ अन्य धमों को देखें, तब म मौलिक रूप से एक ी चीज सभी धमों में पाएगेंँ ेकक ईश्वर का मानव के साथ सबिंधिं ै तथा उसका ईश्वर के साथ मिे भी सभिंव ै, जो कक उनमें मौजूद भी ै। दुनुनया के वतमशान धमों के बीच का अतिंर उनकी सामाक्जक और ऐनत ालसक क्स्थनत से पता चिता ै तथा ईसाई प्वचारक उनकी आिोचना, आदर्वशादी दर्नश, धालमकश चेतना की मनःक्स्थनत और ग न र स्यमयी अनुभवों के उपरातिं य मानते े ैं कक ईसायत ह दिंू धम शके काफी पास ै और य अन्य धमों के बीच की खाई को पाटती ै। इस पत्र में मेरा य क ने का प्रयास ै कक एकमात्र िेख में इस प्वषय की व्यवक्स्थत चचाशसभिंव न ीिं ै कक ह दिंू प्वश्वासों के कुछ मौलिक तत्त्व ईसायत के साथ अपनी ननकटता दरर्ाते े ैं। ह दिंू धम शके मौलिक तत्त्वों से मेरा आर्य उन साझा प्वचारों से ै, जो कक ईश्वर, मानव और भप्वष्य की समस्याओिं के सबिंधिं में ह दिंू धम शके कई रूपों को स्पष्ट करते े ैं।

एक

ह दिंू दृक्ष्टकोण के अनुसार ईश्वर का र स्य मानव मक्स्तष्क से न ीिंसमझा जा सकता ै। ब ुत से धमग्रशथिों ने ईश्वर की प्रकृनत को मानव मक्स्तष्क सेसमझ पाने में उसकी अपयाप्शतता पर बि हदया ै। सवर्शक्क्तमान के ब ुत से प िूऔर प्वर्ेषताए ूँ ैं, क्जनका म मानवों को ज्ञान न ीिं ै। िाकूँक ह दिंू इस नकारात्मक दृक्ष्टकोण को न ीिंमानते े ैं, व ईश्वर की प्रकृनत को एक व्यक्क्तगत अक्स्तत्व यानी पुरुष के रूप में िेतें, क्जसमें प्वचार, प्रेम और र्क्क्त के गुण भी ोते े ैं। उनके अनुसार ईश्वर का व्यक्क्तत्व एक मुखौटा ै तथा इसका प्रकटन इस रूप में उत्कृष्ट ै। ईश्वर का व्यक्क्तत्व सीलमत न ीिं ै तथा म मानवों से अिग भी न ीिं ै।

चूँकक ईश्वर में बुदधधमत्ता, प्रेमे और नेकी समाह त ै, इसलिए ससिंार में उसकी सकक्रयता ननमाणश, उदधार और न्याय ै। ब्रह्मा का सबिंधिं ननमाणश, प्वष्णु का प्रेम और लर्व, जो कक सवव्शयापी र्क्क्त, पूणतशा और न्याय के देवता ैं। ब्रह्माहदिं की व्यवस्था ईश्वर के मक्स्तष्क को दरर्ाती ै। ईश्वर के र्ाश्वत प्वचारों का पररवतनश अतिंररर और कािमें ननरिंतर ोता ै। सभी चीजेंअपनी अपूणतशा से मुक्त ोने के लिए ननरिंतर सघिंष शकरती र ती ैं, ताकक वे अपनेआहद रूप को पा सकें और य ी ईश्वर का उददेश्य भी ै। ब्रह्मा का बोध ईश्वर की असीम क्स्थनत और कभी न खत्म ोनेवािी कक्रयार्ीिता से ै। ईश्वर की रचना का उददेश्य उसके दैवीय मिू और ननयनत की अलभव्यक्क्त ै। ईश्वर की सभी रचनाओिंमें से केवि मनुष्य ी उसके मिू और सत्य को पूरी तर से अलभव्यक्त कर सकता ै। ईश्वर ने जब मनुष्य को बनाया, तब उसेव आदर्् शहदए, क्जनका चयन उसे ेकरना चाह ए तथा

अपनी ननयनत को प्राप्त करने के लिए व ननयम हदए, क्जनका पािन उसे ेकरना चाह ए। भगवदगीता को त्याग के ननयम के साथ बनाया ै। ननयम से आर्य ै कक म इसके माध्यम से ईश्वर के आदर्ों को म सूस करके उसकी इच्छानुसार अपना प्वकास कर सकते ैं। ककिंतु म अपनेमूिस्थान, ईश्वर की योजना, त्याग के ननयम को भूिकर स्वाथपूशण शकम शमें लिप्त र ते े ैं। इस क्स्थनत में ईश्वर की उदधार क्क्त की आवश्यकता पडती ै। म ान् ्ब्रह्मा के साथ प्रेम रूपी प्वष्णु भी ैं। उनका प्रेम और उनकी भव्यता मारे चारों तरफ र ती ै, जो कक अतिंररि कि, िौककक ससिंार, जैप्वक जीवन और मानव इनत ास में प्रकट ोता ै। प्वष्णु जो कक सवव्शयापी ै और प्रत्येक मानव को पाप और मूखतशा के खखिाफ सघिंष शकरने में स ायता करते े ैं। व मारे अक्स्तत्व के केंद्र में र ते े ुए आतिंररक प्रकार् प्रदान करते े ैं, जो कक ककसी भी बुराई से पप्वत्र, पियन से वास्तप्वक और प्रेममय ै। व उदधार करनेविो ईश्वर ैं और इस बात की सुननक्श्चतता देते े ैं कक य ससिंार बे तर की तरफ बढ र ा ै,

ककिंतु व मारी इच्छा के खखिाफ व्यव ार न ीिंकरते े ैं। उनकी उदधार करनेविी कक्रयार्ीिता ब्रह्मा दवारा रधचत व्यवस्था के अनुकूि व्यव ार करती ै। ईश्वर अपने स्वय िंके बनाए रचना के ननयमों की अवै चना न ी िं करता ै। ािाकँक प्वष्णु ु मेर्ा मारी स ायता करनेके लिए तैयार र ते े ैं, परिंतु मारा पाप और मूखतशा उसकी कृपा के रास्ते ेमें अवरोध उत्पन्न करती ै। यदयप्प म पाप करते े ैं और अपनेभीतर मौजूद ईश्वर को धोखा देते े ैं, कफर भी जब म ईश्वर की र्रण में जाते े ैं, तब व मारी स ायता करता ै। य ाँ तक कक ब ुत दुष्ट भी जब पूणभशक्क्त के साथ मेरी उपासना करता ै, तब उसे ेएक बे तर व्यक्क्त समझना चाह ए; क्योंकक उसमें न्यायोधचत सुधार ुआ ै तथा र्ीघ्र ी व नेक बन जाएगा और परम र्ािंनत को प्राप्त ोगा। गीता में कृष्ण क ते े ैं कक मेरा भक्त कभी नष्ट न ीिं ोगा। इस प्रकार बुरे-से-बुरे पापी के लिए भी सिंभावना र ती ै। ईश्वर केवि सत्य और प्रेम ी न ी िं ै, बक्ल्क व न्याय करनेवािा भी ै। व पूणतशा और क्क्त की प्रनतमूनत श ै तथा बुराई और अच्छाई के बीच फैसिा करनेवािा ै, इसलिए भगवान् ्कृष्ण कमाध्यशि भी ैं।

ब्रह्मा, प्वष्णु और लर्व तीन अिग-अिग व्यक्क्त न ीिंैं, बक्ल्क एक ी ईश्वर के तीन प िू ैं। ब्रह्मा कुछ खास िमताओिं के साथ मारी रचना करते े ैं तथा प्वष्णु अवरोधों पर प्वजय प्राप्त करके में उन िमताओ िं तक प ुँचने में स ायता करते े ैं और लर्व नेकी के लिए प्वजयी आत्मसयिंम को दरर्ाते े ैं। तैप्त्तरीय उपननषद के अनुसार, चीजें क्जस भी स्रोत सेउत्पन्न ोती ैं तथा क्जनसेउनमें स्थानयत्व आता ै और कफर ज ा ँवे प्रवेर् कर जाती ैं, व एक ी ै। ईश्वर ी सत्य, माग शऔर जीवन ै। रचनात्मक प्वकास के मूि प िू रचना, उदधार और न्याय ैं।

म सवर्शक्क्तमान को दैवीय आत्म-चेतना के रूप में म त्त्व देते े ैं, जो कक रचना, उदधार और न्याय के रूप में काय शकरता ै एव िंक्जसका आर्य मौलिक रूप सेईश्वर से ी ै। उपननषदों, भगवद्गीता और वैहदक धम-श लसदधातिों के अनुसार य ससिंार ईश्वर का र्रीर ै। ह दिं ूप्वचार को सभी चीजों में ईश्वर की प्वदयमानता से भय न ीिं ै। उसे ेदूरू अपनी ककसी दुननया में बिै ईश्वर पर यकीन न ीिं ै। कृष्ण ने गीता में क ा ै, "ससिंार की सुदिंरता, इसका सत्य, इसकी भिाई कई रूपों में ईश्वर की अलभव्यक्क्त ै तथा इसकी भव्य प्रकृनत आवरण में ै, य ससिंार इसकी अलभव्यक्क्त तथा प्वचार इसका मूतरूशप ै। ािाकँक य सवेश्वरवाद न ी िं ै। आदर् शऔर

 वास्तप्वकता के बीच अतिंर स्पष्ट ै। ह दिंू धम शमानव में आत्म उत्कष शपर बि देता ै। इसका अथ शय ी ै कक
मनुष्य क्जस अनुभव के लिए सघिंष शकर र ा ै, व वाकई वास्तप्वकता से परे ै। मिो की आवश्यकता य बताती ै कक कुछ ऐसेभी तत्त्व ैं, क्जनसे ें छुटकारा पाना ै। यहद सबकुछ ईश्वर के ी समान ै, तब ककसी तर के मिो या न्याय की जरूरत ी न ीिं ै। ईश्वर केवि प्रकृनत में ी न ीिं ै, बक्ल्क इसका जीवन इससे परे ै, य

कल्पनातीत ै। ह दिंू धम श ीगिवाद की ससिंार की प्रकक्रया के साथ जीवन की पूणतशा का समथनश न ीिंकरता ै। य ससिंार ईश्वर में समाह त ै, परिंतु जब ससिंार समाप्त ोता ै, तब भी ईश्वर समाप्त न ीिं ोता ै। ईश्वर ससिंार से स्वतत्रिं और ऊपर ै। उसकी आत्मा ससिंार में प्वचरण करती ै और इसे ेसचिंालित करती ै, मगर कफर भी य इससे परे ै।

नदी अपनेस्रोत पर अधधक शुदध र ती ै और य ी क्स्थनत ईसाई धम शके साथ भी ै। जब म पीछे मुडकर ईसा की क ी बातों पर ध्यान देते ैं, तब में ईसाई धम शके मौलिक लसदधातिंों का स्पष्ट प्वचार लमिता ै। ओल्ड टेस्टामेंट में य ोवा को देवता क ा गया ै। िााकूँक कुछ पैगबिंर जैसै ोजा और ईसा ने उन् ें ईश्वर का दजा श हदया ै तथा व अपनेप्रातिीय दृक्ष्टकोण सेस्वय िंको मुक्त न ीिंकर सके। य ाूँतक कक उनके लिए य ूदी भी ईश्वर की चुनी ुई नस्ि थी तथा गैर-ईसाई राष्रों ने भी इसे ेमाना और उपासना के लिए क्जआन आते ैं। ईसा भी ईश्वर को सभी प्वशेषताओिं से प्वशुदध मानते ैं। व ईश्वर को स्वय िंकी ी तर समझने में रुधच न ीिंरखतेथे, परिंतु उन् ोंनेईश्वर की प्रकृनत का सबिंधिं मानव और ससिंार से अवश्य बताया था। ईसा ने बुदधधमानी, प्रेम और क्क्त तीन प िुओ िंका सदिंभ शहदया, पर क्स्थनतयों ने उन् ें ईश्वर के प्रेम पर ी बि देने के लिए प्रेररत ककया था। य ाूँतक कक य ूदी पैगैबिंरों के एक वग शने ईश्वर के न्याय और उनके क्रोध को बढा-चढाकर प्रस्तुत ककया था। इस ाक क ते ैं, "ईश्वर की नाराजगी और भव्यता से प िािेग प ाडों की गुफाओ िंऔर जमीन की सुरिंग में चिे जाएगेँ और कफर व अपनी ताकत से जमीन को ह िा देगा।" ईसा ने ईश्वर को प्पता और में उसके बेटे के रूप में

सरसक्षक उदधारक के रूप में बताया ै तथा ईश्वर को उत्कृष्ट प्रेम के रूप में व्यक्त ककया ै। व ईसा ने अन्य प िुओ िंकी अनदेखी न ीिंकी ै। ससिंार की व्यवस्था से ईश्वर की बुदधधमत्ता व्यक्त ोती ै। सूरज और वषा शसभी पर बबना पिपात ककए ी अपनी कृपा करते ैं। ईसा को प्वशेष दैवीय प्वधान स्वीकार न ीिंथा। व उस अ िं का प्वरोध करते ैं, क्जसमें ब्रह्माडिं के स्वाभाप्वक ननयम का अवरोध ोता ै, क्जसके अनुसार बुरे काम करनेवािों को दिंड या प्वशेष योग्यता वािे िोगों को प्वशेष पुरस्कार लमिता ै। व पत्थर को रोटी बनानेवािे िाभ के आगे ेसमपणश से इनकार करते ैं। उनके दवारा ठीक ककए गए शारीररक कष्ट ननयम के अनुसार ी थे तथा ज ाूँप्वश्वास का अभाव था, व ाूँव इन् ें न ीिंठीक कर सके। ईश्वर एक अपररवतनशीय सत्य ै और उसका ब्रह्माडिं अराजक न ीिं ो सकता ै। ईश्वर न्याय करनेवािा भी ै। ईश्वर का न्याय बाइबबि का प्रभाववशािी वाक्य ै। आदम और ईव को हदए दिंड और केन को दिंडादेश पर सटें जॉन्स के अनुसार, म ईश्वर की प्रभुसत्ता और न्याय पर बि देते ैं। न्याय या फैसिे के हदन ईश्वर के उददेश्य की ी प्वजय ोगी। ईसाई चच शमें ह बूरू पैगबिंर ईश्वर की भव्यता या अपराध भाव से अधधक ईश्वर के क्रोध और उसके न्याय के भय पर अधधक जोर देते ैं।

जब ईसा के अनुयायी उन् ें भगवान् ्का दजाश देतैं, तब ब्रह्मा, प्वष्णु ुऔर लर्व के तीनों प िू असीमता, भव्यता और प्रभुसत्ता यानी बुदधधमत्ता, प्रेम और क्र्क्त उन् ें सौंप देते े ैं। व प्रतीक या ईश्वर के र्ब्द ैं, जो कक अब्रा म के प ि े थे। व उदधारकता श ैं। क्जन् ोंने अपनेहृदय के प्रेम को क्रॉस पर व्यक्त ककया था। व न्यायकता श ैं और उन् ोंने उन सभी को दिंड हदया था, क्जन् ोंनेउन् ें नाराज ककया था। बत्रदेव के मत ने न केवि ईसा में ी तीनों भगवान् ्को समाह त ककया, बक्ल्क ओल्ड टेस्टामेंट में अपनाए गए ईश्वर के एक पिीय दृक्ष्टकोण में भी सुधार ककया। ईश्वर केवि उच्च स्थान पर आसीन एक असीम सत्ता ी न िीं ै, बक्ल्क प्रेममय हृदय तथा ससिंार की प्रकक्रया का प्रमुख लसदधातिं भी ै। एक्बिटश, एक्क्वनस और ओल्ड य ोवा के अनुसार प्पता-पुत्र और पप्वत्र भावना, वेदानिंतक सूत्र को ी दरर्ाते े ैं। य ाँू एक चीज ब ुत स्पष्ट ै, बत्रदेव का लसदधातिं ईश्वर के तीनों आयामों को दरर्ाने का प्रयास ै। आधुननक ईसाई धममशत म सूस करता ै कक तीनों आयामों में ईश्वर समाह त ै और इसका सबिंधिं अिग-अिग चेतना से न ोकर उसकी कक्रयार्ीिता से ी ै। ऐसा भी क ा गया ै कक ह दिंू ूदृक्ष्टकोण ईश्वर के न्याय का अनतवाद ै, जबकक ईसाई धम शईश्वर के प्रेम पर अधधक जोर देता ै। य केवि न्यायमात्र ी न िीं ै। इन दोनों ी दृक्ष्टकोण में ब ुत अतिंर न िीं ै। प्वष्णु ुया प्रेम के ईश्वर मारी स ायता

करने के लिए तैयार ैं, पर वमारे प्रयास का इिंतजार करते े ैं। व लसफश मारी इच्छा ोनेपर ी स ायता न िीं करते े ैं। य ाँूतक कक जब तक में पश्चात्ताप न ो, व में पाप करने से भी न ी िंरोकते ैं। ईश्वर मारे लिए सबकुछ करेगा, पर यहद म पाप और स्वाथपूशण शजीवन में लिप्त र ेंगे, े तब न्याय भी अपना काय शकरेगा। ईश्वर में िमा करना चा ता ै, परिंतुपापों की कोई माफी न िीं ै। य ाँूतक कक ईश्वर का प्रेमे भी एक पदधनत के अनुसार काय शकरता ै। म य न िींक सकते े ैंकक उसकी क्र्क्त की एक सीमा ै। उसका सवर्शक्क्तमान ोना अतकशयुक्त न िीं ै। ईसा मानतैं कक आध्याक्त्मक ससिंार के ननयम ैं। पेडों, चोर, नछपे ेखजाने, मोती, खोई ुई भेड, ें बुदधधमत्ता, दस कँुआररयों और र्ादी के पररधान की ब ुत सी नीनत कथाए ूँ ैं और इन सभी में ननयम िागू ोता ै तथा म अपनेकमों के दवारा ी बनाए जाएगँे। पाचँू बेवकूफ कँुआररया ूँअवसर िेने से चूक गईं और इसी लिए उनका अतिं भी बुरा ुआ। यहद म िमा की आर्ा करते े ैं, तब में िमा करना चाह ए। अपना जीवन बचानेके लिए में इसे ेखोना ी पडेगा। आध्याक्त्मक ससिंार का य एक ऐसा अटि ननयम ै कक क्जसे ेईश्वर का प्रेम लमटा न िींसकता ै। मिो अक्जतश ककया जाना चाह ए, ईश्वर इसे े म पर थोप न िीं सकता ै। य भी माना जाता ै कक ईश्वर की माफी से प ि े दैवीय न्याय सतिंुष्ट ोना चाह ए।

पक्श्चमी ईसायत ब ुत से प्रभावों का एक उत्पाद ै। इसकी य ूदी प्वरासत का ग्रीक के साथ प्वरोध ै और य ईश्वर के अनत म ान् ्बोध का समथनश करती ै। य ूदी के साथ-साथ अरब के िोगों की भी प्रकृनत रूखी मिूम पडती थी तथा ह दिंू ूऔर ग्रीक इस मामिे ेमें अधधक जीवतिं थेऔर य पप्वत्र व सासिंाररक, स्वाभाप्वक और िौकककक, आत्मा व र्रीर के अतिंर को बढा-चढाकर प्रस्तुत न िींकरते ेथे। इनका सामान्य बोध प्रकृनत की एकात्मकता तथा प्वज्ञान की भावना की पुक्ष्ट करता था। सवर्शक्क्तमान सवव्शयापी का ननयम इसे ेन माननेवािों से दूरी बनाए रखता ै। िौकककता इसके केंद्र में ै। अरस्तू के अनुसार, "आत्मा पदाथ शका रूप ै।" धालमकश चेतना की मनोवैज्ञाननक पडतिा और इसका प्वकास में ईश्वर में सामान्य क्स्थनत देखनेको प्रेररत करती ै। क्जस प्रकार व्यक्क्त बाह्य ससिंार में व्यव ार करता ै, व ी उसका ईश्वरीय दृक्ष्टकोण भी र ता ै। य बबल्कुि

वैसा ै, जैसा बरतन बनानेवािा लमट्टी के साथ करता ै। तकरीबन ऐसा ी ईसा से िेकर ईसायत का इनत ास र ा ै। य ाूँतक कक उनके धालमकश वातावरण ने भी उनके लिए अवरोध उत्पन्न ककया। पिा, अगस्टीन, िूथर, कैक्ल्वन आहद ने भी इस समझ को धीमे-धीमेस्वीकार ककया था। सवव्शयापी दैवीय बोध को पूरी तर से स्वीकार करने में धम शलसदधातिों में पररवतनश भी ुए तथा ब ुत सी पप्वत्र भावनाए,ूँ जो कक पुराने प्वचारों के साथ गुूँथी ुई थी, उन् ें छोडना भी पडा। म पारिंपररक अधिंप्वश्वासी, चमत्कारों की वास्तप्वकता पर यकीन, चुने ुए िोग, मध्यस्थता, प्वधचत्र र स्योदघाटन, प्वकास के बजाय भव्यता के दवारा मिो, मानकों की एक बडी सख्ं या के लिए मृत्यु पर ननदंिा ोने पर भी म सवव्शयापी दैवीय क्स्थनत को स्वीकार न ी िेकर सकते ैं। ईसाई धमर्शाक्स्त्रयों ने सवव्शयापी ईश्वर को कुछ अिग टकर स्वीकार ककया। िाकूँक ईसा का भी य ूहदयों के दवारा ब ुत प्वरोध ुआ था। व ससिंार में र ते े ुए भी ईश्वर में प्वश्वास रखतेथे। उनके अनुसार, ईश्वरीय सत्ता तुम् ारे भीतर ी ै। ह दिंओु िंके साथ ईसा को भी प्वश्वास था कक ससिंार में पररवतनश बा र से ईश्वर के स्तिेप से न ीं, बक्ल्क ननरिंतरता से दैवीय भावना के प्वकास से ी सभिंव ै। ह दिंओिु के लिए ईसा की मिू लरिा ईश्वर और व्यक्क्त के बीच छदम प्वपरीत क्स्थनत को िेकर ै। ईसा एक ऐसेमानव के उदा रण ैं, जो कक भगवान् ्बन गए तथा य कोई न ी िंबता सकता कक क ा ूँसेउनका मानव समाप्त ोता ै और देवत्व रुरू ोता ै। मानव और ईश्वर समान ै। 'तत्वम् ्अलस ।'

दो

जीवन में सवर्शक्क्तमान ईश्वर का लसदधातिं और इनत ास का एक प्वर्ेष युग के प्विण र स्योदघाटन के लसदधातिं से मिे न ीं ै। ह दिंू ूधम शसपिंूण शआध्याक्त्मक प्वकास में सवव्शयापकता में ईश्वर की कक्रयारि्ता का समथनश करता ै। िाकूँक ईश्वर की प्वदयमानता के अथ शमें इसके कुछ म त्वपूण शप िुओ िंको अस्वीकार करता ै। यदयप्प दैवीय क्स्थनत सवव्शयापी ै और पृथ्वी पर सभी चीजों को ननयतिंत्रत करती ै, कफर भी एक क्स्थनत आती ै, जब उच्चस्तरीय आत्मा जन्म िेती ै। क्जसे े म अवतारों के नाम से जानते े ैं। य क्स्थनत तब आती ै, जब नैनतकता की समस्या उत्पन्न ोती ै और तभी ईश्वर की उदधारक सकक्रयता अधधक स्पष्ट रूप से अलभव्यक्त ोती ै। नैनतकता के सतिंुिन के लिए ी ककसी अवतार का जन्म ोता ै, जो कक सामान्य क्स्थनत से अधधक नेकी की प्रनतमूनत श ोता ै। य आत्माएूँ ननभीक रूप से ईश्वरीय काय शकरती ैं, क्जससे े साधारण मानव से उनमें अधधक अच्छाई व्यक्त ोती ै। आध्याक्त्मक स्तर की य अलभव्यक्क्त या तो ईश्वर के र स्योदघाटन या कफर मानव की अनुभूनत की िमता में भी व्यक्त ोती ै, परिंतु य दोनों ी क्स्थनत एक ी वास्तप्वकता के कई प िू ैं। म इसे ेईश्वर की ग राई का प्रकटन या मानव सभिंावना के प्वकास का ननणयश भी क सकते ैं। वास्तव में उनके पप्वत्र दृक्ष्टकोण ी उनके कम शका उददेश्य ै। भारत का उन्नत प्वचार मानता ै कक ईश्वर सवदशा सकक्रय र ता ै और प्रेम ी उसका सार ै।

सभी व्यक्क्त कुछ द तक ईश्वर की प्रकृनत के कारण ी पुनः जन्म िेतैं। क्जन् ें म अवतार क ते े ैं, उनमें सच्चाई, प्रेम और क्क्त साधारण सेअधधक दजे की ोती ै। य ी क्स्थनत राम, कृष्ण और बुदध की भी ै।

ह दिं–दूर्नश 44 ईसा की क्स्थनत व ी ै, उन् ोंने सिूी पर क ा था, " े परमप्पता, उन िोगों को माफ कर देना,

क्योंकक वे न ी िं
जानते े ैं कक वे क्या कर र े ।ै" य ूँईश्वरीय प्रेम की य भावना अपने बच्चों के लिए ी थी। चूँकक उनका ईश्वर के साथ एक प्वरे्ष सबिंधिं था और य दूसूरों के लिए सभिंव भी न िीं था, परिंतु इसका क िीं प्रमाण न िीं लमिता ै, पर मनैंइसे ेईसाई धमवशाक्यों से ी लिया ै। पूव शईसाई किा और ईसाई किा के पश्चात् ्भी कई क ाननया ूँ लमिती ैं, परिंतुइस तर के सविाों को व म त्त्व न िीं देते े ैं। ईसाई मान्यता और इसके पूव शके लसदधातिं में ईश्वर और मनुष्य के बीच अतकशयुक्त प्वरोध ै और य ी य ूदी दवैत का सस्मिरण भी ै। ईसा का जीवन मारे लिए कोई मायने न िींरखता, यहद उनमें मानव तत्त्व न ोता और इसी ने उन् ें पूणतशा भी प्रदान की थी। ईश्वर में प्पता रूप का प्वश्वास ी में य मानने के लिए बाध्य करता ै कक जो ईसा के लिए सभिंव था, व अन्य िोगों के लिए भी सभिंव ै। ईश्वर के जो ससिंाधन उनके पास उपिधध थे, वे मारे पास भी ैंऔर यहद म उनकी ी तर सघिंष शया प्रयास करें, तब म भी स्वय िंमें ईश्वर की प्रकृनत के साझेदार ैं तथा ईसा की ी भानूँत ईश्वर का प्रेम ालसि कर सकते ैं। सबसे बडी चीज ै कक ईसा ब ुत से िोगों में प िे े थे। ईसा में ईश्वर का अवतार दुनुनया के
अन्य सतिों में मौजूद ईश्वर की ी भानूँत था एव िंउनके दवारा प्रकट ककया गया दैवीय सबिंधिं ी म सभी में ै। य एक धमपशरायण भ्रमविाा प्वचार ोगा कक ईसा के अिावा और ककसी ने भी ईश्वर के साथ आध्याक्त्मक

एकात्मकता की चेतना को म सूस न िींककया ोगा। ह दिं ूधम शके इनत ास में ऐसेब ुत से घटनाक्रम ैं, ज ा ूँ व्यक्क्तयों ने ईश्वरीय एकात्मकता को प्पता के रूप में अनुभव ककया ै तथा इन् ोंनेईश्वरीय भव्यता को अपनी स्वय िंकी प्रकृनत के अनुरूप देखा और इसका मेरा्- मेरा् के लिए आनदिं प्राप्त ककया। ईश्वर का क्जतना भी सामीप्य ोगा, मानव और ईश्वर के बीच की प्रकृनत उतनी ी म ान् ् ोगी। जो भी ईश्वर में र ता ै, व ननरिंतर रूप से क सकता ै कक 'म ैंव ी ूँ।'

उपननषदों के ऋप्षयों के प्रमाण के बारे में ईसा और ससिंार के अन्य धालमकश प्वदवानों ने बताया ै। सूफी सतिं अि ल्ाजि के अनुसार, "म ैं ी सत्य ूँ, म ैं ी व ूँ, क्जसे ेम ैंप्यार करता ूँ; व ी क्जसे ेम ैंप्यार करता ूँ, व म ैं ूँ। म दो आत्माएूँ, जो कक एक ी रीर में र ती ैं। जब तुम मुझे ेदेखते े ो, तुम उसे ेदेखते े ो और जब तुम उसे ेदेखते ो तुम मुझे देखते े ो।" एकात्मकता की इस क्स्थनत में मानव आत्मा और ईश्वर में ककसी तर का प्वरोध न िींर ता ै।

ईसा के प्रनत प्वश्वास और भक्क्त रखते ुए म क सकते ैं कक ईसा में ईश्वर की पूरी अलभव्यक्क्त ै तथा उनके व्यक्क्तत्व तक कोई और न िींप ुूँच सका ै। ईश्वर के प्रकार् को थोडा सकिंोच के साथ स्वीकार ककया गया ै तथा इसमें सदिें न ी िं ै कक कुछ सतिों में य प्रकार् स्पष्ट हदखा भी ै, परिंतु य ईसा के रूप में क ी िंन िीं हदखा। य सच ो सकता ै, परिंतुयहद कन्यूलसयस व बुदध के अनुयायी इसी तर का दावा करें, तब म उनका न्यायोधचत प्वरोध न िींकर सकते े ैं। यहद य तकश हदया जाए कक बृ ृत् ्स्तर पर आध्याक्त्मक अनुभव ईसा के मध्यस्थतावाद और उनमें ईश्वर की पुक्ष्ट करता ै तथा मानवता का उदधार करनेविो अन्य िोगों के साथ ऐसा न िीं ै, तब ह दिं ूधम शमानता ै कक प्रत्येक गुरु उदधारक ै और अपनेलर्ष्यों में भी इसी के बीज प्वकलसत करता ै। जो भी व्यक्क्त मानव की सीलमत इच्छाओंका सामजिंस्य ईश्वर की पूण शइच्छा के साथ ोनेमें मारी स ायता

ह दिंू–दूर्नश 45 करता ै, उसमें मारा उदधार करने की िमता ोती ै। कुछ पदधनतयों जैसे ेरैव-लसदधातिं में उस गुरु को ईश्वर

का दजाशलमिता ै, जो कक अपनी भव्यता से व्यक्क्त को ऊपर उिनैमें स ायता करता ै। इसमें तकश-प्वतकश न ी िं

ककया जा सकता ै कक ईसा की मध्यस्थता के बबना स्वग शप ुँचना असभिंव था। य भी माना जा चुका ै कक अब्रा म को य ईसा के जन्म सेप िे े ी प्राप्त ो चुका था।

य भी आसानी से स्वीकार न ीिंककया जा सकता ै कक सभी पररक्स्थनतयों में पूण शमानवता के सभी आदर् शगुण ईसा में थे ेऔर उनकी अलभव्यक्क्त अनिंतम थी। पृथ्वी पर ककसी तर की अलभव्यक्क्त का अिंत न ी िं था। ईश्वर ने अनिंतम वाक्य कभी न ीिं क ा। म क्जतना रख सकते ैं, उसके पास में बताने के लिए मेरा ी अधधक ोता ै।

पक्श्चम के ईसाई धमर्शास्त्री, जो कक ईसा की मानवता पर अधधक बि देते े ैं, उनमें ईसा के ईश्वरत्व के प्रनत अधधक प्ववेचेनात्मक दृक्ष्टकोण बढ र ा ै, य ा ूँसवज्ञशता और ब्रह्माडिं की रचना की चेतना पर गभीिंरता का अभाव ै। दूसूरी तरफ उनकी बुदधधमत्ता और उन् ें लमिी पीडा ने उन् ें पूणतशा प्रदान की तथा वे मारी ी भानूँत सभी चीजों में िािानयत भी थे,े जैसे ेकथनों पर ध्यान हदया गया। उनकी घोर पीडा ने उन् ें मारा भाई बनाया, व में चा ते थे ेऔर उन् ोंने ईश्वर की मौजूदगी भी म सूस की थी तथा प्वनम्रतापूवकश व बिो, "तुम मुझे ेअच्छा क्यों क ते े ो? ईश्वर के अिावा और कोई भी अच्छा न ी िं ै, मेरे परमप्पता मुझसे अधधक म ान् ् ैं।" उनके ईश्वरत्व के साक्ष्य के रूप में चमत्कार भी प्रस्तुत ककए गए थे। ब ुत से िोगों के लिए य प्वज्ञान की प्ववेचना ै और कुछ एक के लिए तो मनोधचककत्सा के दवारा समझाया जा सकता ै। ईसा ने स्वयिं ी अपनेईश्वरत्व को साबबत करने के लिए चमत्कारों का स ारा न ीिंलिया। उन् ोंनेतो य भी क ा कक इस तर के काम अन्य िोग भी कर सकते ैं। ईसा का साक्ष्य, मनोवैज्ञाननक सत्य और ईश्वरीय सतिं की धालमकशता थी।

ffi

मानव की रचना ईश्वर के ाथ से ुई ै, इसलिए व इससे प्वमुख न ीिं ै। इसमें सदिें न ीिं ै कक व में कई रूपों में टुकडे-टुकडेमें नजर आता ै, परिंतु य उसकी वास्तप्वक प्रकृनत न ीिं ै तथा य स्वतत्रिंता के दुरुपयोग का पररणाम ै। ह बूरू कथानक के अनुसार-

मिाव की पहली अवज्ञा और उस वर्जिश पेड़ का फल;

र्जसका िश्वर स्वाद ही संसार में

मृत्यु और हमारे सभी दुःख लाया।

ह दिंू ृदृक्ष्टकोण के अनुसार दु:ख और पीडा मानव के पाप और मूखतशा के पररणाम ैं, िाकूँक ईश्वर ने जब में स्वतत्रिंता दी थी, तब इनकी अनुमनत भी दे दी थी। ईश्वर मारे साथ लमट्टी के बरतन बनानेविो की तर व्यव ार न िींकरता ै, बक्ल्क मारी ननयनत के लिए उसने में पूण शस्वतत्रिंता दी ै, मगर मनुष्य को ईश्वर और वास्तप्वकता के बजाय अपने त्रुहटपूण शआत्म से िगाव ोता ै और इसीलिए बुराई पनपती ै। िाकूँक मारा पाप उस अनश्वर भव्यता को नष्ट न िींकर पाता ै और य ी मारी प्वरासत ै, परिंतु य उसके आगमन को स्थधगत अवश्य कर देती ै।

मानव के स्वाभाप्वक अभाव का धम शलसदधातिं। मुझे भय ै कक म ैंबच न िीं सकता। मारी प्रकृनत ईश्वरीय ै। इस ससिंार में जो भी मनुष्य आता ै, ईश्वर का प्रकार् उसे ेप्रकालर्त करता ै। गोयथे के अनुसार-

यदद आँखें सूरज ि हिीीं,ं
बि इिकै र्लए कोई सूरज ि चमकिा,
यदद हृदय स्वयं ईश्वर ि हिोा,
बि हृदय में ईश्वर की अिुभूनि कैसेहिोी ?

इस दृक्ष्टकोण के अनुसार, रूपातिंरण ककसी नई चीज का जन्म न िीं ै। िाकूँक य पूव शजीवन की अचानक वापसी ै तथा मिो ईश्वर की कृपा से ममें क्रमर्: दैवीय प्वकास की क्स्थनत ै। उदधार की आधुनुनक मनोवैज्ञाननक प्ववेचना से पता चिता ै कक व्यक्क्त के प्वकास में ईश्वर का व्यव ार बा र से न ोकर उसके भीतर से ी ोता ै। भव्यता और प्वकास एक ी प्रकक्रया के दो प िू ैं, क्जसमें प ि ेका सबिंधिं आध्याक्त्मक चमत्कार या सकिंट से ै और दूसूरा ईश्वर एव िंमानव की ननरिंतरता से ै।

व्यक्क्त जब अपनी ईश्वरीय प्वरासत को म सूस करना चा ता ै, तब उसे ेचेतन जीवन के तीन प िुओ िं से ोकर गुजरना पडता ै। उपननषद कािा में ईश्वर को र्ाश्वत सत्य का प्रकार् माना गया था तथा मानव से ईश्वर की प्रकृनत को समझाने के लिए क ा गया था। भगवदगीता के अनुसार, ईश्वर के प्रेम रूप को मिो का प्रमुख साधन माना गया ै। बौदध और र्ैव धम शके समान प्राचीन ह बूरू धम शभी ईश्वर को र्ाश्वत धमपशरायण और तपस या पप्वत्र तथा आत्मबलिदान पर ी बि देता ै। इस प्रकार ज्ञान, भक्क्त या तप के माध्यम से जीवन में पूण शपररवतनश आता ै।

जब म मन, हृदय और इच्छा के आतिंररक पररवतनश से ोकर गुजरते ैं, तब स्वय िंको म त्त्व देना त्याग देते े ैंऔर र्ाश्वत ईश्वर के साथ एकात्मकता बना िेते ैं तथा इसी को बचाकर रखना चाह ए। मिो का र स्य पथिं का पररवतनश न िीं, बक्ल्क आतिंररक पररवतनश ै। ईश्वर का पररत्रे मानव स्वभाव का दृक्ष्टकोण ै। मिो एक ऐसा पररवतनश ै, जो कक मानव के जीवन को ईश्वर से भर देता ै। इस क्स्थनत की र्ददों में प्ववेचना न िींकी जा सकती ै, इसका सबिंधिं मानव के अनुभव से ै। इसकी भव्यता को पूरी तर से न िीं जान सकते ैं, यहद म

ा्श्वत जीवन की प्रकृनत को तकश और िा की भाषा में व्यक्त करने पर जोर दें, तब म क सकते ैं कक य आत्मा की इच्छा की ईश्वर के साथ प चान ै, क्जसके ससिांर में ननम्न स्तर पर आने की सभिांवना न ीिं ोती ै। कििंर भी ईश्वर के साथ व्यक्क्त की एकात्मकता की प्ववेचना असभिंव बताते े ैं, परिंतु ताककशक रूप से क ें तो य ईश्वर के पररिते्र में जीवन का प्वकास ै। रामानुज के अनुसार इससे ऊपर कुछ भी न ी िं ै। ईसा क ते े ैं, "म ैं अपनेईश्वर के मदिंदर में उसे ेस्तभिं का रूप दूँगा और व बा र न ीिंजाएगा।" य भावना ह दिं ूदृक्ष्टकोण को व्यक्त करती ै कक उदधार की ुई आत्मा दुबारा ससिांर के सघिंष शमें न ीिंौटती ै। ह दिं ूऔर ईसाई धम शदोनों ी स्वतत्रिं आत्मा के तत्त्वों पर प्वश्वास करते े ैं। बुदधधमत्ता, प्रेम और आनदिं मो के फि ैं। सुरक्षित आत्मा का नेकी में प्वश्वास ोता ै, व धम शलसदधातिंों या पथिं की वा में न ी िंभटकती ै। उसमें सच्चा भाईचारा और प्रेम ोता ै। य लसफश कष्ट-मुक्क्त या त्रुओ िंको िमा ी न ीिं करती, बक्ल्क मानवता की सेवो भी करती ै। कोई भी म ान् ्धालमकश नेता प्रेम के लसदधातिं की अनदेखी न ीिंकरता ै तथा उपननषदों के अनुसार अह सिंा उसके मिू में र ती ै। बुदध क ते े ैं कक जो तुमसे घृणा करे, उससे भी प्रेम करो। 'बुक्स ऑफ एक्सोडस' में म पढते े ैं कक यहद तुम् ारे त्रु का भी परु भटकता लमिे,े तब भी तुम् ें उसे ेउसके पास प ुूँचा देना चाह ए।" जेननलसस के चौवीिसवें अध्याय में प्रसिंा के प्वचार के बारे में बताया गया ै, क्जसमें उदार चररत के व्यक्क्त की व्याख्या ै। इसके एक दृश्य में जोसेफ अपनेभाई को माफ क ते े ैं। सूक्क्त ग्रथिं का उदधरण देते े ुए पिा क तैं, यहद तुम् ारा दुश्ुमन भूखा ै, तब उसे ेखाना खखिाओ; यहद व प्यासा ै, तब उसे ेपानी प्पिाओ। सुरक्षित आत्मा के पास लसफश बुदधमत्ता ी न ीिं, बक्ल्क आनदिं भी ोता ै, जो कक व्यक्क्तयों की दया या पररक्स्थनतयों पर ननभरश न ीिं ै। ह दिंओु िंके अनुसार य ा्नित की क्स्थनत ै। इस आनदिं के बारे में ईसा क ते े ैं, "य मेरा आनदिं ै, जो म ैंतुम् ें देता ूँ और तुम् ारा आनदिं कोई भी तुमसे न ीिंि सकता ै।"

ह दिं ूधम शऔर ईसाई धम शमें मो को िेकर गभिंीर अतिंर न ीिं ै, जबकक प्रायक्श्त्त के धम-शलसदधातिं के अनुसार ईसा में पाप की तरफ सेवापस ौटनेऔर ईश्वर की तरफ जानेमें स ायता करते े ैं। वैसेय काय शकुछ द तक सभी सतिं करते े ैं, परिंतु मानव के पाप के प्रायक्श्त्त के लिए ईसा के त्याग का म त्त्व न ीिं ै। ईसा मारे उदधारक ैंऔर व अपने जीवन का प्रमाण ईश्वर के प्रेम के रूप में देते े ैं और व ी सभी सकिंट व पीडा में में स ते े ैं। वे में यकीन हदिाते ैं कक ससिांर पर प्वजय यानी पूणतशा प्राप्त करना सभिंव ै। ररर् के अनुसार, म उनके अक्स्तत्व की वास्तप्वक प चान कर सकते ैं तथा इसका पता में उनकी धडकन और उनसे ेप्राप्त ोनेविाी हदरा्अीेंसे िगता ै। उनके ईश्वर से सबिंधिं और ससिांर में मारा प्रवेर् करना सभिंव ै।

चार

कम शऔर पुनजीवन का ह दिं ूधम शका लसदधातिं अधधकतर ईसाई प्वचारकों को प्रभाप्वत न ीिंकरता ै। जब तक व्यक्क्त अपनी सकिंीण शननजता के साथ बना र ता ै, तब तक मो या ईश्वर का साथ सभिंव न ीिं ै। जब तक उसकी सभी तर की पृथक् प्रवृपूत्तयों का दमन न ीिं ो जाता, उसकी सवर्शक्क्तमान के साथ एकात्मकता न ी िं ो सकती। जब तक म िा पर प्वजय या पूणतशा को न ीिं प्राप्त कर िेते, म इस ससिांर और जीवनचक्र में र ने

के लिए प्रनतबदध ैं। य दृक्ष्टकोण उतना प्वधचत्र न ीिं ै, क्जतना य सामान्यतया क ा जाता ै। यहद मिो से आर्य सासिंररक क्स्थनत सेपरे ोना ै, तब जब तक म ससिंार से धचपके र ेंगे, े इसे ेप्राप्त न ीिंककया जा सकता ै। जब तक म अपना व्यक्क्तगत दृक्ष्टकोण त्यागकर स्वय िंको सवव्शयापकता की तरफ न ीिंिे जाएगँे, े म सत्य को न ीिंप्राप्त कर सकते। अपनी ननजता को बनाए रखते े ुए सवव्शयापकता की तरफ जानेका प्रयास में ननरारा् ी प्रदान करेगा। नैनतक प्वकास ी इसकी प्वर्ेषता ै। इस क्स्थनत में व्यक्क्त की अिग प्राथलमकताए ूँ ोती ैं तथा समान रुधचयों में अन्यों के साथ प्वरोध ोता ै। िााकूँक नैनतक प्रयासों से व्यक्क्त िक्ष्य का अदिंाज तो िगा सकता ै, पर इस तक कभी प ुूँच न ीिंपाता ै। ससिंार व्यक्क्तगत नैनतकता की दुनुनया ै तथा इसका ननरिंतर प्वकास का अपना लसदधातिं ै। य पूणतशा के लिए प्रभावर्ी न ीिं ै। काटिं का लसदधातिं में एक ननदेर्ात्मक अनुरूपता बताता ै। नैनतक ननयम से आर्य मानव प्रकृनत के सविंेदनर्ी ह स्सों का पूणतशया दमन ै। य क्स्थनत मारे वतमशान अनुभव में न ीिंआती ै, इसीलिए व इसे ेपूरा करने के लिए में असीलमत भप्वष्य का प्रस्ताव देता ै, पर किंाट य भिू जाते े ैं कक अनतिं िा भी असभिंव काय शको करने के लिए अपयाप्शत ोता ै। सीलमत कारक ककसी भी क्स्थनत में असीलमत पूणतशा प्राप्त न ीिंकर सकते ैं। काटिं ने एक आत्मप्वरोधी लसदधातिं की बात क ी ै। य सीलमतता के बोध को नकारना ै। इस क्स्थनत में ी म सीलमत की अतिं ीन प्रकक्रया से बच सकते ैं तथा ककसी तर की सतिंुक्ष्ट भी न ीिंप्राप्त ोगी। जब तक म ससिंार की बेडेडयों को काटकर सविंेदनाओिं, िाि और ननजता से ऊपर उिनै का दृक्ष्टकोण न ीिंरखेंगे, े मुक्क्त सभिंव न ी िं ै। जब नैनतकतावाद का पृथृक् दृक्ष्टकोण त्यागकर धालमकश स्तर तक उिंगे, े तभी म य ाूँर्ाश्वत जीवन जी सकते ैं।

इस ससिंार में कम शका ननयम ी िागू ोता ै। य तो नैनतकता का लसदधातिं ी ै, क्जसके माध्यम से म उत्थान के कदम उिाते ैं, तभी पीडा और पररश्रम से ननलमतश चररत्र के दवारा म मेर्ा ऊपर और आगे ेबढते े ैं। कम शके लसदधातिं के अनुसार, प्रत्येक व्यक्क्त जब तक अपनी ननयनत को प्राप्त न ीिं कर िेता, उसके सामने इसेकेलिपूरा कैसमीशके अवसर र ेंगे। यहद प्रेम ी ईश्वर ै, तब कुछ भी मेर्ा के लिए समाप्त न ीिं का उदधार का काय शतब तक न ीिंसमाप्त ोगा, जब तक कक ईश्वर का उददेश्य पूण शन ी िं ो जाता। व्यक्क्त का पाप तो नछप सकता ै, पर य उसकी अनश्वर ननयनत को नष्ट न ीिंकर सकता ै। ईश्वर का प्रेम भी बुरे पापी को भी उससेपूरी तर सेबचनेन ीिंदेता ै। यहद मृतूयु ी अतिं ो जाता तब ईश्वर का मारी रचना का उददेश्य ी प्वफि ो जाता, क्योंकक ममें सेब ुत से िोग पाप में बबना प्रायक्श्चत्त के ी मृतूयु को प्राप्त ो जाते े ैं। यहद ईश्वर का उददेश्य भी नकार हदया जाता ै, जो कक उसकी प्रकृनत की ब ुत ी गभिंीर सीमा ै, तब मृतूयु के उपरातिं भी आत्मा के प्वकास की सभिंावना ै और इसमें ईश्वर की अलभव्यक्क्त भी ै। ईश्वर के प्रेम और न्याय के लिए य दृक्ष्टकोण अधधक स्थायी मिूम पडता ै, बजाय इसके कक ईसाई प्वचारधारा मानवता की बडी सख्ं या नरक जैसी चीज को अपनाए ुए ैं। प्रेम के रूप में ईश्वर की वास्तप्वकता ईसाई प्वचारकों को मृतूयुके बाद के प्वकास को मानने के लिए प्रेररत करती ै।

यहद ईश्वर अपने दुषुकम शकरनेविो बच्चों को समाप्त करता ै, तब म उसे ेअपनी मिू भावना समप्पतश करते े ैं, क्जससेसभ्य िोग सुधार भी मानते े ैं। जब ईसा ने छोटे बच्चों को अपनेघुटनों पर बबिाया और अपने

ह दिंू–दूर्नश 49 सुननेवािों से क ा, "ईश्वर को खुर् करने का एक ी तरीका ै, तुम छोटे बच्चे बन जाओ। स्वग शके इन नागररकों
को नरक की आग में झोंकना एक बबरशता ै।"

सटें पिा के अनुसार-"य ससिंार पीडामय ै और ईश्वर की सतिंान की अलभव्यक्क्त का इतिंजार कर र ा ै।" यहद ककसी आत्मा का ईश्वर के सतिंान की अलभव्यक्क्त के बबना ी नार् ो जाता ै, तब ससिंार में ईश्वर के ननष्पादन का लसदधातिं असफि ो जाएगा। दैवीय धममशत में प्वश्वास हदिाता ै कक ककसी भी व्यक्क्त को मेर्ा के लिए नकश में न ीिं डािा जा सकता। व चा े क्जतनी भी दूरू भटके, पर व ुिप्त आत्मा न ीिं ै। व्यक्क्त स्वय िंको पापों, मूखतशा और स्वाथ शसे चा े क्जतना भी नछपा िे, व अपने भीतर की दैवीय क्स्थनत को न ीिंटा सकता। जो व्यक्क्त ईश्वर के दवारा न ीिंबना ै, व नकश की आग में जिनेवािा कूडा-ककशट ै, परिंतु ऐसा उनके साथ न ी िं ै, जो मानव के चे रेवािेईश्वर प्रदत्त िोग ैं। उनका सपिूंण शजीवन पापमय ो सकता ै, परिंतु उनकी असली नैनतकता की समस्त मानवीय चेतना रे के नीचे ईसा का ईश्वरीय चे रा मौजूद ै।
सटें पॉि क ते े ैं, "उसके हृदय पर परदा पडा ै, पर जैसै े ी व ईश्वर की तरफ मुडेगा, उसका परदा ट जाएगा।" इस वाक्य में 'जैसे ेव ईश्वर की तरफ मुडेगा' से आर्य ै कक जब उसे ेपश्चात्ताप ोगा, तभी उसके पास इसका अवसर ै। ह दिंओु िंके अनुसार, पथभ्रष्ट ोना सकिंट की सबसेबडी क्स्थनत ै। पश्चात्ताप की क्स्थनत में व ईश्वर से प्राथनशा करता, पर कोई भी भगवान् उसकी बात न ीिंसुनता ै। नकश की आग में जिती ुई ऐसी आत्मा के बचने की ककसी तर की सभिंावना न ीिंर ती ै। एक बार मृत्युके बाद व्यक्क्त का भाग्य मेर्ा के लिए तय ो जाता ै। य मानते े ुए कक ईश्वर प्रेमे न ीिं ै, बक्ल्क गिनतयों के खखिाफ व क्रोध के साथ कोर न्याय करता ै। पथभ्रष्ट के साथ य न्याय न ीिं ै। इस जीवन की पश्चात्ताप रह त गिनतयों की सजा पूरे कािा तक न ीिं ो सकती, ककिंतु ओल्ड टेस्टामेंट में ईश्वर को न्याय करनेवािेका ी दजाश हदया गया ै। कुछ पैगबिंरों ने इसपर और भी प्वस्तार से अपना दृक्ष्टकोण रखा ै, ईश्वर ब ुत ी दयािु, कम क्रोध करनेवािा और उसमें असीम करुणा ोती ै।

ऐसा ईश्वर जो कक िमा करनेके लिए तैयार र ता ै और पापी को भी अपने में समेट िेता ै। इस क्स्थनत में पथभ्रष्ट के पास भी एक अवसर र ता ै। ईश्वर केवि ऐसा प्पता मात्र न ीिं ै, जो कक घर पर लसफश खच श करने के लिए इतिंजार करता र ता ै, बक्ल्क व उस चरवा े की तर ै, जो कक प ाडों में भटकी ुई अपनी भेड को ढूँढने जाता ै। यहद ईश्वर पापी को ढूँढने और उसे ेवापस िानेजाता ै, तब पथभ्रष्ट का पश्चात्ताप उसके लिए आनदिं का प्वषय ोगा। यहद ईश्वर अकल्पनीय रूप से नेक ै, तब म सोच सकते ैं कक पथभ्रष्ट भी बे तर बनने के लिए सोच सकता ै। "यहद तुम बुरे ोकर भी अपनेबच्चों को अच्छे उप ार देना जानते ो, तब स्वग शमें बैठा तुम् ारा प्पता भी मागँूने पर ककतना अधधक दे सकता ै।" यहद म िमा लमिते र ने के बाद भी िमा न ीिंकरते े ैं, तब मारे लिए य सोचना स ी ै कक ईश्वर बदिा िेने से अिग न ीिंककया जा सकेगा। ईश्वर का असीम प्रेमे ी मारे अतिं ीन भप्वष्य की सुननक्श्चतता ै।

ईश्वर मृतकों का न ोकर लसफश जीप्वत िोगों का ी ै। इस धारणा को अस्वीकार करने के अिावा ईसा ने भप्वष्य के जीवन को िेकर ककसी तर का दावा न िींककया ै। इस सदिंभ शमें उनकी भेडें, बकररया, ूँ अमीर-गरीब, आर्ीवादश और दुुःख की कथाए ूँस्वग शऔर नरक के रूप में ैं, परिंतु व ककसी समस्या से सबिंधिंधत न िीं ैं। ईसा को अमीर पेटू और किंगिा को मृतूयुके बाद लमिनेवािे ककसी तर के न्याय के फैसिे पर यकीन न िींथा। ईसा उस पश्चाताप करनेवािे चोर को भी भ्रलमत न िींकरते ेथे, े जो क ता था, "आप आज मेरे साथ स्वग शमें ोंगे।" ईसा के वाक्यों से मृतूयु के बाद भौनतक र्रीरों का लमिनेवािे फैसिे का समथनश न िींलमिता ै।

मृतूयु और इसके बाद लमिनेवािे फैसिे के बीच के अिंतराि में उन अनधगनत िोगों की क्स्थनत को समझना कहिन ै। ईसा की लर्क्षा और चररत्र के अनुसार स्वग शऔर नकश की उनकी अवधारणा आत्मा में गुणात्मक पररवतनश को िेकर थी। स्वग शका सबिंधिं आत्मा में सुधार और नकश इसका प्वपरीत ै। ईश्वर के राज्य में स्वग शऔर नकश के अिग-अिग स्तर ैं और प्रत्येक व्यक्क्त अपने प्वश्वास और गुणों के आधार पर इनमें प्रवेर् पाता ै, इसी रूप में ईश्वर का न्याय काम करता ै और य ी कम शका लसदधािंत भी ै। क्जस प्रकार मनुष्य अपने अवसरों का इस्तेमाि करता ै, उसी रूप में उसके प्वश्वास के स्तर की सुननक्श्चतता ोती ै। ईसा के कथन से उनकी आध्याक्त्मक स्पष्टता का भी पता चिता ै। उन् ें इस तथ्य का बोध था कक प्रत्येक व्यक्क्त को फैसिेके हदन अपने कमों का ह साब देना ोगा। अपनेअनाम व्यव ार और प्रेम के लिए व क ते े ैं, "म ैंभूखा था और तुमने मुझे ेखाना हदया।" भगवद्गीता के अनुसार-"य ाूँतक कक छोटे देवता भी बडेभय से में बचा िेतैं।"

मानव व्यक्क्तत्व के प्वकास के साथ इस दृक्ष्टकोण का सबिंधिं ै। पप्वत्रता की पराकाष्िा या पूणतशा नैनतक प्रकक्रया का ननरिंतर प्वकास ै, य तुरिंत ालसि न िींककया जा सकता। नैनतक पररक्स्थनतयों में आत्मप्वकास एक ननरिंतर प्रकक्रया ै और प्वकास व्यक्क्तत्व का ननयम ै तथा इसके लिए समय और अवसर दोनों की ी जरूरत ोती ै। कम शका लसदधािंत एक प्वस्तृत दृश्य हदखाता ै, ज ा ाूँआत्मप्वकास का एक बृ ृत् ् अवसर ोता ै।

य लसदधािंत इस तथ्य पर बि देता ै कक मारा व्यव ार ी मारा भप्वष्य तय करता ै। बपनतस्मा यानी दीिा जैसी एक घटना व्यक्क्त का भाग्य न िींननधारशरत कर सकती। एक बच्चा, जो कक दीिा के उपरािंत और दूसूरा बच्चा बबना दीिा के ी एक ी क्स्थनत को प्राप्त ोतैं। ईसा को वाकई य सुनकर धक्का िगेगा कक प्रेमे के उनके सदिंर् के अनुसार अन्य ब ुत से मतों की त्रुहटयाूँ या धम शदुभााग्शय से र स्यमयी सस्िंकार प्रसाद के अभाव में ननरिंतर रूप से नकश की आग में जि र े ैं। य एक आध्याक्त्मक प्वकास ै कक मानव ने अपनी ननयनत को बनाना या न बनाना तय ककया ै। कम शके इस लसदधािंत को ईश्वरीय प्रेम की ननरिंतर ीनता और यािंबत्रक बताकर आिोचना की गई ै। ईश्वर की पररकल्पना एक तानार्ा के रूप में करना कक व अपनी खुर्ी से ककसी को सिंत या पापी मान िे, ह दिंू ूप्वचारों के प्रनतकूि ै। य मानना कक ईश्वर का प्रेम चररत्र के ननयम से बधाूँ ुआ न ी िं ै, कैक्ल्वनवादी ननरिंकुर्ता के धमलशसदधािंत का समथनश करता ै, परिंतु ईश्वर के लिए मानव के व्यव ार की अनदेखी करना असिंभव ै। क्योंकक उसका प्रेम असीम ै और व उन सभी का स योग करता ै, जो कक स ी हदर्ा में

चिते ◌े ◌ैं। आध्याक्त्मक जगत् ◌्के अनुसार पापों की ◌िमा के लिए पश्चात्ताप आवश्यक ◌ै और ईश्वर की कृपा के लिए आत्मसमपणश ◌ी एकमात्र रास्ता ◌ै। ईश्वरमय ◌ोने के लिए नैनतकता आवश्यक ◌ै और इसका सबिंधिं मारे कमों से ◌ै। ईश्वर के प्रनत सत्यननष्ठा, ईश्वर के प्रेम का प्वोिम न ◌िीं ◌ै। दैवीय लसदधातिं में बताता ◌ै कक ईश्वर का न्याय क ◌ी ◌िबाह्य जगत् ◌्सेन ◌िींआता ◌ै। य मारे भीतर से ◌ी काय शकरता ◌ै। म अपनेकमों से स्वय ◌िंको ननचिे ◌ेस्तर पर ◌िातैं। ईश्वर के ननयम से मुक्त न ◌िीं ◌ै, क्योंकक व मारे ◌ाथ और पावूँ से भी अधधक मारे

पापसमूहवास्तवमेंकम शका लसदधातिं में बताता ◌ै कक जो ◌िोग ईश्वर के ननयम का उल्िघिंन करते ◌े ◌ैं, उन् ◌ें इसके लिए कष्ट उिाना ◌ी पडता ◌ै; ◌ािाकूँक पश्चात्ताप और सुधार की सभिंावना प्रत्येक स्तर पर प्वदयमान र ती ◌ै।

जो ◌िोग य तकश करते ◌े ◌ैंकक ह दिंओु ◌िंका कम शका लसदधातिं याबिंत्रक ◌ै, क्योंकक पूणतशा के ननयम के अनुसार पूण शऋण का भुगतान अवश्य ◌ोना चाह ए और सबसेप्वकट क्स्थनत य ◌ै कक इसका भुगतान भिे ◌ी पापी न करे, पर ककसी के दवारा कैसे ◌ेभी करना ◌ी ◌ोगा। वैसै ◌ेएक व्यक्क्त का दूसूरे के पापों के लिए कष्ट स ना बोधगम्य ◌ै, चा ◌े इसकी जो भी वैधता ◌ो। क्या य क्स्थनत कुछ बेढिंगी या प्वरोधाभासी न ◌िींप्रतीत ◌ोती ◌ै कक पापी को य आत्मसतिंक्ष्ट ◌ोगी कक कोई अन्य उसके पापों की सजा भोगे? इस दृक्ष्टकोण से य भ्रम भी उत्पन्न ◌ोता ◌ै कक ◌िोग अपराध को अपना पेर्ा बनाएगेंूऔर ईश्वर ककसी हदन अपनेदेवदूतू या बेटे को ससिंार के पापों को स ने के लिए भेज देगा। क्जस तर सेधमाधां ईसाई धम शलसदधातिं ईसा की मृतूयु को पाप्पयों के पाप के लर्कार के रूप में ◌िेता ◌ै, उसे ◌ेप्रतीत ◌ोता ◌ै कक ईश्वर के पास एक वजन तौिनेवािी मर्ीन ◌ोगी। मुझे पूरा यकीन ◌ै कक य ◌ूँह दिंू ◌ूदृक्ष्टकोण के अनुसार सत्य को दरर्ाने की कोलर्र् की गई ◌ै कक ईश्वर का प्रेम और मानव का प्रयास दोनों ◌ी नैनतक प्वकास के लिए आवश्यक ◌ैं।

य भी स्पष्ट ◌ै कक कम शके लसदधातिं की प्ववेचेना मानव की असमानता को ◌िेकर बनी ◌ै। अनुभवों से पता चिता ◌ै कक सभी व्यक्क्तयों की आतिंररक मनोवृपूत्त और बाह्य पररक्स्थनतयाूँसमान न ◌िीं◌ोती ◌ैं। मानव स्वभाव को आकार देनेमें आनुवलिंकता और वातावरण का ब ◌ुत योगदान ◌ोता ◌ै। यहद म केक्ल्वन की बात मानें कक य ससिंार प्रेम और बौदधधक अक्स्तत्व के दवारा ◌ी सचिंालित ◌ो र ◌ा ◌ै, तब में य स्वीकार कर ◌िेना चाह ए कक जीवन की प्वलभन्नताएूँ ककसी दुघुटशना की वज से न ◌ी ◌िं ◌ैं। इस प्रकार ह दिंू ◌ूतो इसपर यकीन कर सकता ◌ै, पर केक्ल्वन का चयन का लसदधातिं, क्जसमें उदधार या नरक का सबिंधिं ईश्वर की मनमौजी इच्छा से ◌ै, ह दिंू ◌ूस्वीकार न ◌िींकर पाता ◌ै। कम शका लसदधातिं ईश्वर दवारा प्रदान की गई प्वलभन्नता को दरर्ाता ◌ै। ह दिंू ◌ू ईश्वर को अताककशक रूप में ◌िेनेके लिए तैयार न ◌िीं ◌ै। उसे ◌ेयकीन ◌ै कक एक उभरता ◌ुआ उददेश्य ब्रह्माडिं के प्वकास में स्वय ◌िंकी अलभव्यक्क्त ◌ै तथा यहद ककसी पर आसानी से दैवीय कृपा ◌ोती ◌ै, तब व इसके लिए उसके

पूवकेंमों का सचिंय ◌ैं। व्यक्क्त जो बोता ◌ै, व ◌ी काटता ◌ै।" कम शके लसदधातिं के अनुसार व्यक्क्त जो भी काटता ◌ै, व ◌ी उसनेबोया ◌ोगा। मेरे अनुसार ईसा का भी कथन कुछ इसी तर ◌ै, "सा स करो मेरे बेटे, तुम् ◌ारे पाप माफ ककए जाएगेंू।" उनका क ने का आर्य ◌ै कक उनके कष्टों की वज उनके पुराने पाप ◌ैं।

पापी उन् ें भिू चुके ैं, पर ईश्वर उन् ें न िींभिूा ै। पापों का प्रभाव उनके व्यक्क्तत्व की ग राइयों में नजर आ र ा था। आधुननक मनोप्वज्ञान के अनुसार, मारे प्पछिे ेकम श मारे अचेतन मन में सगिं ृीत र ते े ैं। ईसा भी सभिंवतः कुछ इसी रूप में कम शके लसदधातिं की व्याख्या एक बीमार से बातें करते े ुए क ते े ैं, "पाप मत करो अन्यथा क्स्थनत और बुरी ो जाएगी।" पीडा ककसी जज का मारे ऊपर अननवाय शआदेर् न िीं ै, जबकक म इसके वास्तप्वक कदार भी न िीं ै। मारी इच्छा के खखिाफ म पर थोपी गई पीडा वास्तव में पाप की मजदूरूी ै। म इसे ेएक सम्मान या सुप्वधा के रूप में न िींिे सकते ैं। इस क्स्थनत में नकश की पीडा भी र्नशाक न ी िं ै। ईसा की पीडा को बुराई के खखिाफ चेतावनी और नेकी के लिए प्रोत्सा न मानते े ैं। पीडा को स्वेच्छा के रूप में न ी िं लिया गया ै। जब तक म र्ाश्वत जीवन को म सूस न ी िंकर िेते, पीडा र्ुदधीकरण के लिए ै। जब म पूण श ो जाते े ैं, तब म ईश्वर के कायों में उसके साझेदार बन जाते े ैं। अतः स्वय िंअपनाई गई पीडा सामान्य पीडा से अिग ै। भगवान् ्लर्व ने मानवता के उदधार के लिए प्वषपान ककया था। म ायान मत के अनुसार बुदध ने मानव के लिए ननवाणश से इनकार कर हदया था।

1. नश्वर प्राखणयों पर िागू पीडा उनके प्पछिेपापों का दिंड ै।
2. ससिंार में स्वय िं ी अपनाई गई पीडा ह दिंू ूप्वचारों के अनुसार तपस क िाती ै। तपस का सबिंधिं आत्मप्वकास और जगत् ्कल्याण के लिए ोता ै। य अनत कहिन माग श ै, य ा ूँतक कक ब ुत से म ान् ्िोग भी इससे ेघबरा जाते े ैं। अपनी ननयनत को ािसि करने की सबसे प्रभावर्ािी पदधनत ससिंार के लिए पीडा का अनुभव ै। लर्व जो कक परम तपस्वी मानेजाते े ैं, व अपने भक्तों सेआत्मसयिंम, तप और आत्मत्याग की आर्ा करते े ैं तथा ब्रह्मा ध्यान और प्वष्णु ुभक्क्त चा ते ैं। जो भी व्यक्क्त बुराइयों से मुक्त ोकर स्वय िंको ईश्वर के पुत्र के रूप में अलभव्यक्त करना चा ता ै, उसे ेससिंार के लिए प्ेरेमपूवकश कष्ट स ना ोगा, क्योंकक य ी उसकी कीमत ै। ईसाई धम शका क्रॉस ह दिंओु िंके लिए प्रनतरोध या अवरोध न ी िं ै, बक्ल्क य ईश्वर का वास्तप्वक उदधार करने का म ान् ्प्रतीक ै। य दरर्ाता ै कक आत्मत्याग के मिू में ककस प्रकार प्रेम समाह त ै। ह दिंू ूधम शमें ऋप्षयों और बुदधों के ब ुत से उदा रण ैं, क्जन् ोंने ससिंार के लिए ब ुत अधधक कष्ट उिाए। उनकी य अपरर ाय शपीडा उनके प्पछिे े पापों का पररणाम न िींथी।

ईसाई प्वचारक एक िबिं समय तक ननरिंतर यत्रिंणा के लसदधातिं के साथ अस ज र े और उन् ोंनेभप्वष्य के प्वकास के लिए कई तर की पदधनतया ूँभी प्वकलसत की थी।िं सन् ्1429 में ्िोरेंस पररषद ने एक ऐसेर्ोधन-लसदधातिं की रचना की थी, जो कक न तो नकश था और न ी स्वग।श डीन फरार के अनुसार य एक ऐसा मध्य स्थान था, ज ा ूँिोगों को प्रायक्श्चत्त की सुप्वधा थी। कुछ धमर्ाशक्स्त्रयों ने मृत्यु और फैसिेके बीच के स्थान की भी बात क ी ै, जबकक ब ुत से िोग वतमशान और अगिे ेजीवन के बारे में तकश देते े ैं, पररिंतु कुछ ी िोग पूव शअक्स्तत्व की

वकिात करते ◌े ◌ैं। समय के साथ ह दिंू ◌ूधम शके तत्त्वों का म त्त्व देते ◌े ैं,जो कक आज काफी पौराखणकता से भ्रलमत ◌ै और इसमें ह दिंू ◌ूप्वचार का अभाव ◌ै।

पाँच

भारतीय ईसाई जो कक भारत की ◌ी आध्याक्त्मक वायु में अपने ह दिंू ◌ूभाइयों के समान दैवीय धालमकशता में सासूँ ◌िेतैं। उनके लिए ईश्वर के भप्वष्य सूचक किोर और अिौकक्क दृक्ष्टकोण को स्वीकार करना कहिन गिता ◌ै, क्जसमें ईश्वर के भयानक न्याय का भय बना र ता ◌ै तथा य ◌ूाँईसा को भगवानों का भगवान् ◌्बनाकर मानवता के पापों का प्रायक्श्चत्त करने के लिए सिीब पर ◌िटकाने ◌ेके लिए दुनुनया में भेजा गया था। व ईसा का उनके पुनजीप्वत ◌ोनेके चमत्कार के रूप में देखते ◌ैं। भारतीय ईसाइयों की युवा पीढी मानती ◌ै कक ईश्वर सपिूंण श ससिंार में सभी ◌िोगों में काय शकरता ◌ै, ◌िाकूँक ईसा उनकी प्रकृनत के अनुकिू ◌ै और व ककसी अन्य की तिुना में ईश्वर को म सूस करते ◌े ◌ैं, व सोचते ◌े ◌ै कक ईसा का जीवन प्रेम रूपी उदधारक का ◌ै, क्जसकी ओल्ड टेस्टामेंट के िेखकों दवारा अनदेखी की गई ◌ै। ◌िाकूँक उनके कुछ म ◌ान् ◌्पैगबिंर इससे अनलभज्ञ न ◌िींथेऔर उनका मारे वतमशान ससिंार के लिए ब ◌ुत अधधक नैनतक म त्त्व ◌ै। उन् ◌ोंनेईश्वर को अच्छाई के रूप में तथा ईसाई प्रेम को धम शके लसदधातिं के रूप में न ◌िींफिाया। व ह दिंू ◌ूधम शके सवव्शयाप्त ईश्वर, अह सिंा, कम शऔर पुनजन्शम के लसदधातिं को त्रुहटपूण शढिंग से समझनेपर ध्यान देते ◌ेथे। आज भारत में ईसाई धम शह दिंू ◌ूधम शकी पुकार को सुनता ◌ै। व इस पर ध्यान दे सकता ◌ै और अनुकरण करने के साथ-साथ इसे ◌ेअनसुना भी कर सकता ◌ै और प्वरोध भी कर सकता ◌ै। ककिंतु सभी सकेिंत दरर्ाते ◌े ◌ैं कक उसका चयन बुदधधमत्तापूण श ◌ोगा। व ह दिंू ◌ूधम शके बे तरीन तत्त्वों के साथ ईसाई धम शके अच्छे तत्त्वों को लमिाकर देखता ◌ै और यहद व इसमें सफि ◌ोगा, तब इस ह दिंू ◌ूईसायत का ◌िाभ केवि भारत को ◌ी न ◌िीं◌ोगा, बक्ल्क ससिंार की आध्याक्त्मक जीवन की वृदृधध ◌ोगी।

बौदध धम श

नुनया के ई्ुत ास में बौदध धम शके सस्थिापक बुदध का ५ स्थान ै। इनके जन्म से मृतूयु तक का सपूिंण श जीवन एक आख्यान ै। बुदध का जन्म एक राज पररवार में राजकुमार के रूप में ुआ था, परिंतु उन् ोंनेअपना प्विासमय जीवन अपनी युवावस्था में ी त्यागकर ध्यान के माध्यम से सत्य की तिार् में िगा हदया था।

य किा बौदधधक किा था। इस युग में लसदधातिों में मतभेद और कुछ के दवारा उन् ें स्वीकार ककया जाना आम था तथा य व्यक्तयों की सनकों एव िंइच्छाओिं में नजर भी आता था। (ब्रह्मसूत्र) बेमिे पदधनतयों और दवदिंवों के उत्सा ने बुदध को अिौककक अटकिबाक्जयों की ननरथकशता का ए सास करा हदया था। नैनतकता के िेत्र में पारिंपररक रीनत-ररवाजों ने नैनतक क्जम्मेदाररयों को टा हदया था। धम शके ित्र में पुरातन अधिंप्वश्वासों ने अपना लसर उिाया और इससे िाभ िेनेवािों ने इसका फायदा उिाया। बुदध के अनुसार प्रत्येक व्यक्क्त बबना ककसी पुजारी के ध्यान या देवताओिंके सबिंधिं के बबना भी मोि प्राप्त कर सकता ै। मोि का सबिंधिं सदैं युक्त धम श लसदधातिों को मानने या क्रोधी देवताओिंको प्रसन्न करनेसे न ीिं, बक्ल्क य चररत्र की पूणतशा और अच्छाई के प्रनत गिाव पर ननभरश ै। बुदध की लरि्ा का सबिंधिं धालमकश रुझानों और अिौककक पूवानुशमानों की अस्वीकृनत तथा नैनतक ननष्ठा से ै।

अलौककककिा

बुदध के बताए चार सत्य ननम्न ैं, दु:ख ै, दु:ख का कारण ै, इसे ेदूरू ककया जा सकता ै, इसे ेदूरू करने के उपाय ैं। चूकिंक सभी चीजें अल्पजीवी ैं, इसलिए दु:ख ै। सभी चीजेंननरिंतर पररवतनश की क्स्थनत में ैं। जीवन ननरिंतर रूप से कुछ बनने और समाप्त ोनेकी प्रकक्रया ै। ककसी भी चीज की अवधध चा े, क्जतनी ो जैसे ेबबजिी की चमक इतनी सक्षिंप्ति या स स्राधदी इतनी दीघ,श कफर भी व बनने की प्रकक्रया में ै। बुदध ने गैर-मानलसक वास्तप्वकता की अस्थायी क्स्थनत से िेकर मानलसक प्रकक्रया के िखणक पि को व्यक्त ककया ै तथा व सभी [illegible] प्रत्येक घटनाक्रम श्रृखिं क्स्थनत ै और ब ुत सी श्रृखिंिाएँ जुडकर एक सपिूंण शक्स्थनत बनाती ै। पदाथ शऔर आत्मा लमिकर एक अनुक्रम और प्रकक्रया बनाते े ैं।

जब म चीजों के बारे में प्रकक्रयाओंसे टकर सोचतैं, तब म यथाथ शसे दूरू ो जाते े ैं। म पदाथ शऔर गुण, पूण शऔर अिंर, कारण और प्रभाव के साथ ताककशक सबिंधिों के दवारा क्स्थर ब्रह्माडिं ननलमतश करते े ुए प्रतीत ोते े ैं। य सबिंधिं ताककशक जगत् ्के अनुरूप ै, पर वास्तप्वक न ीिं ै। म चीजों के स्थायी मिू की कल्पना का प्वचार करते े ैं, जबकक य एक काल्पननक प्वचार ै। म क ते े ैं कक पानी बरसता ै, परिंतु य ाँूऐसा कुछ न ीिं ै। य ा ूँलसफश एक िचि ै, कोई करनेवािा न ीिं ै, बस लसफश कम श ो र ा ै। म चीजों की प चान के लिए इसकी ननरिंतरता से भ्रलमत ोते े ैं। बच्चा, िडका, युवा और वृदध सभी एक ी ैं। बीज और पेड एक ी ै। ननरिंतरता एक अखडिंडत क्स्थनत की प चान प्रदान करती ै, जैसे ेएक चमकदार छडी घुमाने पर एक वृतृत का भ्रम उत्पन्न करती ै। एक उपयोगी परिंपरा में अिग-अिग श्रृखिंिाओ िेके नाम बताती ै। य आतिंररक वास्तप्वकता की प चान ै।

स्थायी तत्त्व के अभाव में ससिंार की ननरिंतरता की प्ववेचना सावभशौम कारणत्व के लसदधातिं के दवारा ोती ै। धम शकेवि एक क्स्थनत या एक कारण ै। "जो प्वदयमान ै, व बनता ै; उसकी उत्पप्त्त से य उत्पन्न ोता ै; व न ीिं ै, तब य न ीिंबनता ै; उसके अिंत से इसका अिंत ै।" (मखझमा 32), प्रनतसमुत्पाद या ननभरशता के लसदधातिं के अनुसार ऐसा कुछ भी न ी िं ै, जो पररवतनश करता ै। य ा ूँकेवि स्वत: पररवतनश ी ै। ससिंार की श्रृखिंिा अिंत या ननमाणश की श्रृखिंिा नि ीिं ै। य ाँूएक क्स्थनत कारणात्मक ऊजा शमें पररवनततश ोती ै। य ाँूअतीत का वतमशान में सयिंोजन ोता ै और जो प्रकृनत के बाह्य व्यव ार में प िे ेऔर बाद में प्वघहटत ोता ै।

जीवन और गनत एक ननयम का पािन करते े ैं। ससिंार की प्रकक्रया का ननयम व्यक्क्त की ननरारा् में आरा् उत्पन्न करता ै। ससिंार की प्रकक्रया में कई तर के दृक्ष्टकोण ोते े ैं। य ाँूप्रमुख प्रवृप्त्त उस क्स्थनत के अक्स्तत्व को नकारने के बजाय इसे ेअस्थायी मानना ै। य ताक्त्त्वक प्रकृनत का परामर् श ै। य ससिंार अज्ञानता का उत्पाद ै और ज्ञाननयों के लिए इसका अक्स्तत्व न ीिं ै। ससिंार का व्यक्क्तगत रूप अकसर प्वर्ेष अनुकूिन ीन वास्तप्वकता की अलभव्यक्क्त ै। जब सत्य उदघाहटत ोता ै, तब प्रमुख तत्त्वों को पीछे छोडकर एकीकृत तत्त्व िुप्त ो जाता ै। बुदध की रुधच ससिंार की प्रकृनत की व्याख्या करने में न ी िंथी। उनके अनुसार जब

आग िगी ो और िोग उसमें जि र े ों, तब इसकी चचाश करने का समय न िीं ै, बक्ल्क इससे बचनेका समय ै।

व्यक्क्त का आत्म कुछ तत्त्वों से लमिकर बना ै, जैसे ेमानलसक (नाम) और तत्त्व (रूप) मेर् पररवनततश ोते ेर ते े ैं। वेदना, बोध, सस्क्िार और बुदधध मानलसक तत्त्व ैं। अनुभूनत का सबिंधिं भावना से तथा बोध और बुदधध का सबिंधिं सज्ञिान एविं प्रवृपूत्त का सबिंधिं सकिंल्पक्क्त से ै। बुदधध कभी-कभी आत्म की भानूँत काय शकरती ै। मारे पास स्थायी आत्म का साक्ष्य न िीं ै। "जब कोई क ता ै कक 'म'ै तब व जो भी क ता ै, उसका सबिंधिं सभी सयिुंक्त तत्त्वों से ोता ै या कफर उनमें से ककसी एक तत्त्व से, तब व स्वय िंको भ्रलमत करता ै कक व 'म'ै था। (सयिुंत्त 130) बुदध ने स्थायी आत्म को नकारे बबना ी अनुभवजन्य आत्म पर बि हदया ै। कथानक के अनुसार नागसेना ने स्थायी आत्म को अमूत शके रूप में नकार हदया और व्यक्क्त के आत्म को ऐनत ालसक ननरिंतरता की एकीकृत जहटिता के रूप में प्रस्तुत ककया था। जैसा कक रीर का नाम उसके गुणों की प्रकक्रया के अनुसार ै, इस प्रकार आत्मा का नाम मारी सपिूंण शमानलसक क्स्थनतयों के अनुसार ोता ै।

आत्मा की सकिंल्पना पुनजन्शम को म त्त्वपूण शबनाती ै। व्यक्क्त असबिंधिंधत घटनाओ िंकी सयिोगवर् उत्पप्त न िीं ै, बक्ल्क व एक जीवतिं ननरिंतरता ै। पुनजन्शम वािा व्यक्क्त मृत् व्यक्क्त न िीं ै, परिंतु व उससे शिन्न ी िं ै। य ूँन तो पूण शप चान ै और न ी पूण शअतिंर ै। य ूँननरिंतरता के साथ न समाप्त ोनेवािा पररवतनश भी ै। प्रत्येक अनुभूनत आनेऔर जानेके साथ पूण शअतीत के साथ जुडी ुई ै।

नैनिकिा और धम श

जीवन का िक्ष्य मोि ै और इसमें आत्म का ननमाणश र्ालमि न िीं ै। इसकी तरफ जानेवािे मारे सभी व्यव ारों को अच्छा माना जाता ै। बुदध के अष्टािंग माग-श सम्यक् प्वश्वास, सम्यक् आकािंक्षा, सम्यक् वाणी, सम्यक् व्यव ार, सम्यक् आजीप्वका, सम्यक् प्रयास, सम्यक् मनोभाव और सम्यक् षानशतरेक बौदध धम शकी नैनतकता स्पष्ट करते े ैं। य अनतलिप्तता और अनत आत्मसयिंम के बीच का मध्य माग श ै। य व्यक्क्त की बौदधधक भावनात्मक और इच्छाक्क्त को पररवनततश करनेके लिए ै। बुदध के काि में जानत-व्यवस्था भ्रलमत क्स्थनत में थी। इन् ोंनेब्राह्मणवाद पर प्र ार करते े ुए इसे ेजन्म पर आधाररत न मानते े ुए कम शपर माना था। िाकूँक व समाजसुधारक न िंथेऔर उनकी रुधच धम शमें थी। वैसेतो बौदध धम शसभी के लिए खुिा था, परिंतु व्याव ाररक रूप से इसमें उच्च जानतया ूँ ी थी।िं बुदध नेघरिू परिंपराओिंमें स्तिेप न िंककया, जो कक वैहदक परिंपराओिंके अनुसार ी सचिंालित ोती थी।िं बुदध का लमर्न िोगों को उनकी आत्मानुभूनत के लिए दैवीय कृपा के र स्यों को उदघाहटत करना न िंथा। ननवाणश का र्ाक्ब्दक अथ श'बाह्य प्रवा ' या 'र्ानिंत' से ै। इसका सबिंधिं वासना की अक्ग्न, घृणा और अज्ञानता की मुक्क्त से ै। य काि ीन तथा प्वश्वास, र्ानिंत, आर्ीवादश, प्रसन्नता, कोमिता, र्ुदधता, ताजगी से भरा इसका अक्स्तत्व ै। (लमलिदिं, 11.2.9) यमक के दृक्ष्टकोण के अनुसार ननवाणश

के सवनशार् के रूप को अस्वीकार ककया गया ै। क ते े ैं कक इसकी प्रकृनत मानव प्वचार से परे ै, इसलिए ननवाणश को नकारात्मक रूप सेप्ववेधचत ककया गया ै।

म बौदध धम शको पूरी तर सेनई शुरुआत के रूप में न िीं िेतैं, क्जसका अतीत से सबिंधिं ी न िींथा। य उपननषदों के प्वचार के बाद का स्तर था। चरम वास्तप्वकता, मुक्क्त की प्रकृनत और आत्मा के स्थायी चररत्र के प्रश्नों के जवाब बुदध ने न िींहदए ैं। उन् ोंनेइसपर अनुभवों की स्वीकृनत न िींदी और मिुक्य के प्रश्नों का उत्तर न ी िंहदया, क्योंकक इनसेव्याव ाररक जीवन में स ायता न िींलमिती ै। अिौकिकक प्वषयों पर उनके मौन को ब ुत से अन्य ढिंग से प्ववेधचत ककया गया ै। उनके कुछ पुराने समथकशों और आधुननक व्याख्याकारों ने इसे े नकारात्मक रूप में लिया ै। वे क ते े ैं कक बुदध ककसी भी तर की दैवीय या भौनतक स्थायी वास्तप्वकता में प्वश्वास न िींकरते ेथे। उनके अनुसार ननवाणश का दृक्ष्टकोण शून्यता ै। बुदध ने भय के नकारात्मक दृक्ष्टकोण पर बि न िींहदया ै। उनका य दृक्ष्टकोण उनके दर्नश को सदिं ास्पद और असगिंत बताता ै। बुदध के हदए गए सकारात्मक कथन इस नकारात्मक ताकककशकता के साथ असगिंत ैं। बुदध के समय में उनके प्वचारों ने धालमकश मानलसकतावािे िोगों को प्रभाप्वत न िींककया ोगा, जबकक दूसूरों ने उनके मौन को उनकी अज्ञानता को आवरण समझा। उन् ें सत्य की जानकारी न िींथी। बुदध की अनुभूनत के दृक्ष्टकोण में य लसदधातिं अताकककशक ै कक उन् ें सत्य का ज्ञान था और व िोगों को इस तरफ िे जा सकते थे। वैसे य प्वश्वास करना कहिन ै कक बुदध अज्ञानी थेऔर व अपनेलर्ष्यों को अज्ञानी ी रखना चा ते थे। कोई भी प्वचारर्ीि व्यक्क्त बबना नैनतकता की चरम क्स्थनत के न िींर सकता ै। य भी म सूस ोता ै कक बुदध ने उपननषदों के प्वचारों के सकारात्मक आदर्वशाद को स्वीकार ककया था; िािाँकक उन् ोंनेप्रत्येक व्यक्क्त को उसकी स्वय िंकी अनुभूनत पर बि हदया था। उन् ोंने अिौकिकक प्रश्नों की अनदेखी कर दी, क्योंकक इनपर ब स िोगों को उनके नैनतक जीवन से भटकाती ै। इसका व्यक्क्त की पप्वत्रता से कुछ भी िेना-देना न िीं ै, जबकक य ताकककशकता और सैदैधानिंतकता से अधधक आध्याक्त्मक ै। यहद म इस दृक्ष्टकोण से अस मत ैं, तब ननवाणश की सकारात्मक प्ववेचना को समझना कहिन ोगा तथा बुदध ने भी घटनाक्रम सेपरे ककसी पूण शवास्तप्वकता से अक्स्तत्व को अस्वीकार ककया ै। बुदध का वाराणसी का उपदेर् परम अक्स्तत्व की वास्तप्वकता की पुक्ष्ट करता ै। उपननषदों और बुदध ने मनुष्य की समझ की सीमा को स्वीकार ककया ै, परिंतु बुदध ताकककशक रूप से मानव की सीमा के भीतर न्यायोधचत कम शको धम शका रूप मानते े ैं। उपननषदों में धम शऔर सत्य को पाररभाप्षत ककया गया ै। चूँकक बुदध का प्रमुख उददेश्य नैनतकता पर बि देना था, इसलिए उन् ोंनेपूणतशा की नैनतक प्रकृनत पर प्वर्ेष बि हदया ै। धम श ी ब्रह्म का स्थान ै।

भारतीय-दर्नश

दार्नशिक ववकास

भारतीय प्वचार दर्नश के सपिूंण शइनत ास में मानव के सघिंष शका आदर् शवास्तप्वक और अधधक अस्पष्ट भी ै, साथ- ी-साथ य आत्मा का वास्तप्वक ननवास और भारतीय नस्ृ कोि आवाज भी देता र ा ै। भारत में र स्यवाद की प ेलियों को सिुझाने का मानव का कभी न खत्म ोनेवािा प्रयास और पार्प्वकता से नैनतकता एव िंआध्याक्त्मक ऊँूचाई तक उिने की उसकी कोलर्् भी नजर आती ै। इस सदिंभ शमें म पुरातत्त्व जानकारी के अनुसार चार स स्त्राक्धदयों का सघिंष शदेख सकते े ैं। य स्पष्ट मान्यता ै कक य ससिंार सूय शऔर आकार् जैसे े देवताओिं के दवारा ी चिाया जा र ा ै तथा व ऊपर से मानवों के र अच्छे-बुरे व्यव ार पर नजर रखे ुए ।ै ऐसा भी प्वश्वास ै कक प्राथनशा और अनुष्िानों के माध्यम से ईश्वर की उपासना की जा सकती ै। सवर्शक्क्तमान ईश्वर के प्रनत य भी प्रबि धारणा ै कक जीवन अनतिं ै तथा मानव के भीतर ी व पप्वत्र आत्मा ै, क्जसके लिए बौदध और जैन धम शभी नैनतक प्रकृनत पर बि देते े ैं, यानी भौनतकता, सर्िंयवाद और भाग्यवाद से परे ोकर ी सभी तर की बुराई से दूरू र ा जा सकता ै और य ी इन धमों का मिू भी ै। भगवदगीता आत्मा की नैनतकता से िेकर अिौकिकक पूणतशा पर बि देती ै तथा न्याय की ताककशकता आज भी प्रमुख तत्त्व ै। प्रकृनत की प्वर्ेष व्याख्या; प्वज्ञान और मनोप्वज्ञान का पूवानुशमान; पूणतशा की यौधगक पदधनत; मीमासिंा की सामाक्जक ननयमाविी और सवर्शक्क्तमान की धालमकश व्याख्या, र्किंर, रामानुज, माधव, ननबिंाकश, वल्िभ और जीवगोस्वामी का मानव जानत के इनत ास में एक म त्त्वपूण शदार्नशनक प्वकास र ा ै। ताककशक श्रृखिंिा में एक के

बाद दूसूरे अनुसरण ोते ेर े। भारतीयों का जीवन जैसे-जैसै ेप्वकलसत ोता गया, य समय के साथ भौनतक, सामाक्जक और सास्कृिनतक रूप सेअपना आकार िेता गया। पुराने स्वर में प्राचीन भारतीय सभी कायों को प िी बार कर र े थे। उनके पास अतीत की बुदधधमत्ता का स ारा न िींथा। उन् ें कई तर के दवदिंवों का सामना करना

ैंप्रडा, जो कक अब अतीत की चीज बन चुकी ै। इतना ोने पर भी उनकी दर्नश के िेत्र में उपिक्धधयाँकम न िीं किंतु य चक्र अभी पूरा न िीं ुआ ै तथा सभिांवनाए ँभी समाप्त न िीं ुई ैं। दर्नश अभी भी अपनी र्ैर्व अवस्था में ी ै।

भारतीय दर्नश अपने र स्य, प्रचुर सौंदय शऔर इसेसमझने में ोनेवािेमानव प्रयास के कारण ककसी को भी प्रभाप्वत करता ै। प्वचारकों की िंबी सघिंषमशय यात्रा के कुछ नए प्वचारों से िेकर कुछ अपूण शमानवीय ज्ञान तक के छोटे-छोटे मानवीय बुदधधमत्ता के महिंदरों का ननमाणश ककया ै, किंतु मानवीय पूवानुशमानों में आदर्ों की क ीं–क ी िंकमी लमिती ै, क्जन् ें न तो छोडा जा सकता ै और न ी रखा जा सकता ै। म अपनेचारों तरफ के अधिंकार की ग राई के प्रनत अधधक जागरूक ैं, बजाय इसेदूरू करनेवािी उस ज्योनत के, जो कक में अपनेअतीत से प्वरासत में लमिी ै। आखखरकार चरम समस्याओ िंपर प्वचारकों के प्रयास के उपरातिं म ज ा ँप ुँचे ैं, प िे े म व ा ँसे काफी दूरू थे ेऔर जब तक म मनुष्य ैं, म व ाँप ुँच भी जाएगेँ। वैसेय मारे सीलमत मक्स्तष्क की श्रृखिंिा के र स्य से बधँा ुआ ै। िााँक दर्नशर्ास्त्र का य प्रयास व्यथ शका प्रयास न िीं ै। य में उस श्रृखिंिा की पकड में र ने में स ायक ै। य मानव की अप्वकलसत चेतना को तीव्र करता ै और मारे बोध को ग राई प्रदान करता ै तथा इससे मारे गुजरे जीवन की अपूणतशा का भी पता चिता ै। मारी बौदधधकता के अनुसार य ससिंार ब ुत पारदर्ी न िीं ै तथा दार्नशनक वास्तव में बुदधधमत्ता का प्रेमी ोता ै, व इसका प्रवक्ता न िीं ै। य यात्रा का अिंत न िीं ै, बक्ल्क स्वय िंमें एक यात्रा ी ै। इसमें क ी िंप ुँचने से बे तर यात्रा करना ी ै।

प्वचारों के दौरान म य पूछ सकते ैं कक क्या इनत ास के जाने ुए तथ्य प्वश्वास की प्रगनत में स ायक ोते े ैं। क्या मानव प्वचार आगे ेबढती ुई क्स्थनत ै या ककर पीछे टती ुई। य श्रृखिंिा बेमेतिब या सनक भरी न िीं ै। भारत प्रगनत में यकीन रखता ै तथा म प िे े ी क चुके ैं, य चक्र एक जैप्वक बधिंन में बधँा ुआ ै। इसकी ननरिंतरता का आतिंररक धागा टूटा न ी िं ै। य ाँतक कक भयभीत करनेवािी पुरानी क्रानिंतया ँभी में इसे ेपुनः प्राप्त करने में स ायता ी करती ैं। िााँक िेरण का िंक भी पुराने जीवन से नए की तरफ चिता ै। प्रगनत और ास की दोनों धाराए ँआपस में गुथँी ुई ैं। इस स्तर पर प्रगनत आगे ेकी तरफ िे जाती ै और दूसूरी तरफ पीछे िे जाती ै, परिंतु य आगे े ी बढती ै। य भी स ी न िीं ै कक इस प्रकक्रया में ब ुत कुछ नष्ट ो चुका ै, किंतु कुछ चीजें तुिनात्मक रूप से अधधक व्यथ श ैं। सबसे म त्वपूण श ै भप्वष्य। चूँकक म अपने

दो

पुराने िोगों के किंधों पर ैं, इसलिए म दूरू तक देख सकते े ैं। में अपनेअतीत में बनाई गई नीविं पर आराम करने के बजाय आधुननक दृक्ष्टकोण से सामजिंस्यता की एक बडी इमारत बनानी चाह ए।

सभी पद्धनियों की एकिा

भारतीय प्वचारकों के प्वचार, परिंपराआिंऔर सत्य के प्रनत ननष्ठा के साथ गुथेँ ◌े ◌ुए ◌ैं। प्रत्येक प्वचारक य मानता ◌ै कक उसके पूववशनतयशों के लसदधातिं एक आध्याक्त्मक ताने-बाने से बने ◌ैं और यहद व इनकी ि◌्ड़ी ननदिां करता ◌ै, तब व अपनी ◌ी सस्क्ृनत को बदनाम करता ◌ै। ि◌ाकूँक इसके कुछ तत्त्व ब ◌ुत उत्कृष्ट न ि◌ीं ◌ो सकते ◌ैं, कफर भी सपिंन्न परिंपराविो ि◌ोग इसे ◌ेनकार न ि◌ीं सकते ◌ैं। प्वचारकों ने इन् ◌ें काटने-छाटूँने ◌ेऔर प्ववेधचत करने की कोलर्र् की ◌ै, पर य ि◌ोगों की भावनाआिंके इदश-धगदश ◌ी र ◌े ◌ैं। वैसेभारतीय प्वचारकों ने पूववशती प्वचारकों की ब्रह्माडिीय व्याख्या को न्यायोधचत ि◌ राया ◌ै और उन् ◌ें सत्य के काफी नजदीक भी माना ◌ै। इसके सदिंभ शमें अन्य प्वचारकों की भी अनदेखी न ि◌ींकी गई ◌ै। इनका सम्मान एक ऐसेमहिंदर के रूप में ककया गया ◌ै, जो कक ब ◌ुत सी दीवारों, खभिंों और ड्योहढयों से ननलमतश ◌ै। तकश, प्वज्ञान, दर्नश और धम शसभी आपस में सबिंधिंधत ◌ैं। प्वचारों की प्रगनत का प्रत्येक नवीन ि◌ण एक नए तकश के रूप में आता ◌ै। पदधनत की समस्या, क्जसमें मानव प्वचार सक्म्मलित ◌ै, व वाकई म त्त्वपूण श ◌ोता ◌ै। न्याय दरर्ाता ◌ै कक बबना तकश की नीविं के ककसी भी तर के स्थायी दर्नश की रचना न ◌ी ि◌ं ◌ो सकती ◌ै। वैर्ेलेर्का से में पता चिता ◌ै कक ि◌ाभप्रद दर्नश भौनतक प्रकृनत से ननलमतश ◌ोनेचाह ए। म इन् ◌ें बादिों में न ि◌ींबना सकतै। ि◌ाकूँक भौनतकी और आिैककता अिग-अिग ◌ैं और आपस में लमिाए न ◌ी ि◌ंजा सकते, कफर भी दर्नश वास्तप्वक प्वज्ञान का ◌ी पररणाम ◌ै। परिंतु ब्रह्माडिं के सदिंभ श में, जो कक भौनतक दुनुनया में सत्य ◌ै और वैज्ञाननक आिैककता की भ्रामकता से भी प्रनतबदध ◌ै, य सामाख्या में इस खतरे से सावधान र ने के लिए क ती ◌ै।

प्रकृनत के तत्त्व चेतना सेउत्पन्न न ि◌ींककए जा सकते। म प्रकृनत और मनोवैज्ञाननक आिैककता को कम न ◌ी ि◌ंकर सकते। वास्तप्वकता केवि प्वज्ञान और मानव-जीवन में नजर न ि◌ीं आती, बक्ल्क य धालमकश अनुभवों और योग में भी स्पष्ट ◌ोती ◌ै। पूव शमीमासिां और वेदातिं, नैनतकता एव ि◌ंधम शपर बि देते ◌े ◌ैं। प्रकृनत और मन के बीच का सबिंधिं ◌ी दर्नश की सबसे बडी समस्या और इसे ◌े ◌ी वेदातिं ने उिाया भी ◌ै। य भी क ◌ा गया ◌ै कक सतिं जन इन दोनों का प्वरोध न ि◌ींकरते ◌े ◌ैं तथा दर्नश के साथ भी य ◌ी तथ्य ◌ै। न्याय-वैर्ेलेर्का, साख्ंय-योग तथा वेदातिं सभी के बौदध धम शमें ◌ी ि◌ोगों दवारा अपनाए जाते ◌े ◌ैं। ब्रह्माडिं की कोई भी चेतना पूरी तर से स्वीकार न ि◌ींकी जा सकती, क्योंकक इसमें अिग-अिग तकश, भौनतकी, मनोप्वज्ञान, नैनतकता, आिैककता और धम शर्ालमि ◌ैं। भारत में प्वकलसत ◌ुए प्रत्येक प्वचार का अपना एक अिग लसदधातिं व्याख्या, मन और धम श ◌ै। ब्रह्माडिं के बारे में मारा ज्ञान प्राकृनतक प्वज्ञान के ननदेर् में प्वकलसत ◌ुआ ◌ै और म ककसी प्रनतबधिंधत दृक्ष्टकोण सेसतिुंष्ट न ि◌ीं ◌ो सकते ◌ैं। दर्नश के आगामी प्रयासों को प्राकृनतक प्वज्ञान और मनोप्वज्ञान की वतमशान आधुननकताआिं सेसबिंधिंधत ◌ोना पडेगा।

ﬁﬁ

दर्शि और जीवि

दर्नश रा्स्त्र का काय-शजीवन को व्यवक्स्थत तथा कम शका मागदशर्नश करना ै। य पररवतनशों और प्वश्व के प्वकल्पों के माध्यम से में ननदेलर्त करता ै। जब तक दर्नश जीप्वत ै, य िोगों के जीवन से दूरू न िीं ो सकता ै। प्वचारकों के प्वचार उनके जीवन के इनत ास से ी उत्पन्न ोते े ैं। में केवि उनका सम्मान ी न ी,िं बक्ल्क उन् ें अपनाना भी चाह ए। इसके कुछ नाम ैं, वलसष्ठ्, प्वश्वालमत्र, याज्ञवल्क्य, गागी, बुदध, म ावीर, गौतम, किंड, कप्पि, पतजिंलि, वादरायण, जैलैमनी आहद। र्किंर और रामानुज केवि इनत ासकारों के प्वषय ी न िीं, बक्ल्क व्यक्क्तत्व भी ैं। इनके दार्नशनक प्वचार एक वैक्श्वक दृक्ष्टकोण रखते े ैं तथा इनका आधार अनुभव और मनन ै। प्वचार जब स्वय िंमें प्वचारक बन जाता ै, तब व जीवन पदधनत के दवारा धम शका रूप िे िेता ै और कफर जीवन की सवोच्च परख के दवारा इसे ेपरखा जाता ै।

चार

हाल के िर्िी दर्र्श का ह्रास

य भी आम िओोचना ै कक भारतीय मक्स्तष्क प्वचार करनेसे डरता ै, परिंतु साक्ष्य इस तथ्य का समथनश न िींकरते े ैं। म भारतीय प्वचार की सपिूंण शप्रकक्रया को य क कर नकार न ी िंसकते ैं कक य बेतुकी काल्पननकता और बचकानी पौराखणक कथा ै। िााकूँक प्पछिे ेतीन या चार र्तास्धदयों के प्वचारों के इनत ास में इस अलभयोग का समथनश लमिता ै। वैसेभारत अब एलर्या में अपनी ऐनत ालसक प्वरासत के अनुसार ज्ञान के उच्चतम लर्खर पर न िीं ै। ऐसा िगता ै कक जो नदी सहदयों से अपनी पूरी ताकत के साथ ब र ी 8 hat pi उसका अिंत एक रुके ुए बेकार पानी के रूप में ोनेवािा ै। इस काि के दार्नशनक और िेखक, जो कक सत्य के समथकश ोने का दावा करते े ैं, उन् ोंने धालमकश मतों की बाि की खाि ननकािी ै। इन पेरे्वरों की कल्पना में उनके बगि में ब ती ुई पतिी सी नदी ी भारतीय दर्नश की चौडी सी नदी ै।

इस पररणाम तक आनेके लिए ब ुत सी वज ें भी र ी ैं। मुसलिम सत्ता के कारण राजनीनतक पररवतनश ुए और इसनिेोगों की सोच को कट्टरवाहदता के साचेँू में ढािा। जब व्यक्क्तगत सोच और ननजी फैसिों ने अराजकता का भय उत्पन्न ककया, तब पुरानी सामाक्जक व्यवस्था और क्स्थर धारणा के लिए रा्सकीय ननयत्रिंण की आवश्यकता म सूस की गई। मुसलिम प्वजय और इनके प्रचारवादी काय शतथा ईसाई लमर्नररयों के आदिंोिन ने ह दिंं ूसमाज की क्स्थरता को अक्स्थर करने का प्रयास ककया और इस समय अक्स्थरता की चेतना के कारण र्ासन स्वाभाप्वक रूप से एक ऐसी चट्टान बन गया, क्जस पर सामाक्जक सुधार और नैनतक व्यवस्था हटक सकती थी। इन सास्िंकृनतक दवदिंवों के दौरान ह दिंओु िंने परिंपराओिंऔर प्वजय करनेवािे प्वचारों के प्रवेर् को रोक कर स्वय िंकी ककिेबदिंी कर िी। उनके समाज ने अप्वश्वसनीय तकों और उबाऊ ब सों को ऐसी क्स्थनत में िा हदया, ज ा ूँस्वतत्रिं सविा पाप के रूप में देखे जानेिगे, तभी से इसके लमर्न में इसकी प्वश्वसनीयता समाप्त ो गई ै। इस क्स्थनत के बाद य ाूँप्वचारक न िींथे, बस ऐसे प्वदवान् ्थे, क्जन् ोंनेपुरानी पुकार पर नई ध्वनन और

ह दिंू–दर्नश 62 नई हटप्पखणयॉूँ किीं। कुछ र्ताक्धदयों से इन् ोंनेअनिंतम लसदधातिं के रूप में स्वय िंको धोखा ी

हदया। कक्रयार्ाीता

के अभाव में दर्नशर्ास्त्र अपने इनत ास के साथ भ्रलमत ो गया। य अपना काम छोडकर भ्रम में ी उिझ गया। जब य आम वज ों का सरिंकि और मागदशर्कश बननेमें असफि ो गया, तब इसने स्वय िंके साथ ब ुत बडी गिती की थी। ब ुत सिोगों का मानना ै कक उनकी नस्िने एक ििंबी यात्रा तय की ै और इसे ेअपनिक्ष्य तक प ुूँचने में काफी समय िगा ै। य ॉूँतक कक क्जन् ें पता ै कक व अभी तक न ीिंप ुूँचे ैं, व भी इसे

ेदेर् की

भप्वष्य की यात्रा के रूप में देख र े ैं एव िंएक अज्ञात सेभयग्रस्त भी थे। ननस्तधधता और र्ाश्वतत्व पर धचतिंन ककए बबना सवाि न ीिंककए जा सकते। अनतिं की जानकारी एक ऐसा भवूँर ै, क्क्तर्ाी मक्स्तष्क भी क्जसकी अनदेखी करते े ैं। िाकूँक प्पछिी तीन-चार र्ताक्धदयों में दार्नशनक भावना पर िोस्य का प्रभाव र ा ै।

पाँच

वतमशान क्स्थनत

आज ससिंार के म ान् ्धम शऔर प्वलभन्न प्वचार प्रवा भारत की धरती पर लमि चुके ैं। पक्श्चम के साथ ुए सपिंकों ने एक सौम्य सतिंुक्ष्ट का प्वतरण ककया ै। प्वलभन्न सस्िंकृनतयों के मेि-जोि ने दरर्ाया ै कक आधारभूत समस्याओ िंका कोई भी अधधकृत ि न ीिं ै और इसनेपारिंपररक समाधान के प्वश्वास को भी ह िा हदया ै। िाकूँक इसनेकुछ द तक प्वचारों की स्वतत्रिंता और इसके िचीिेपन को बनाए रखने ेमें स ायता की ै। परिंपराए िंूँपुनः प्रवा मयी ुई ैं, जबकक कुछ प्वचारक पुरानी नीवों पर नए भवनों को ननमाणर्कर ने में व्यस्त ैं और अन्य पूरी तर से आधार को ी टा देना चा ते ैं। पररवतनश का य वतमशान समय बेचैनी वािी रुधच रखता ै।

िा ी का बीता ुआ समय भारतीय समकािीन प्वचारों के प्रवा का थमा ुआ समय था, पर व बाकी दुननया से अिग-थिग न ीं था। प्पछिी तीन-चार र्ताक्धदयों ने भारत और यूरोप के आपसी मेि-लमिाप को िंकिर ब ुत क ा ै, परिंतु अभी भी पूरी तर से मारी नजरों के सामनेन ीं ै। ज ा ूँतक भारत का सबिंधिं ै, य ा ूँ आिोचना लसफश अनुमानों के आधार पर ुई ै।

ककिंतु इसके अिावा एक और प िू भी ै। व्यक्क्त के प्वचारों के साथ उसके कायों में भी काफी द तक धगरावट आई ै। ज ा ूँतक सस्िंकृनत और सपिंन्नता का सबिंधिं ै, इसमें चुनाव करने जैसा कुछ भी न ीं ै। अराजकता से आयी भौनतक परेर्ाननयॉूँ, आधथकश और सामाक्जक खतरा एव िंदूसरी तरफ भौनतक आराम, आधथकश क्स्थरता और सामाक्जक र्ानिंत ै, िेककन आधथकश कल्याण और सामाक्जक व्यवस्था के साथ सभ्यता के स्तर को भ्रलमत करना उधचत न ीं ै। उन्नीसवीिंसदी की र्ुरुआत के भारतीयों की भावनाओिं को म सूस करना आसान ै, क्जन् ोंने पीहढयों के जन-सघिंष शऔर ननजी पीडा के उपरातिं बब्रहटर् र्ासन का स्वागत सुन रे युग के रूप में ककया था। इसके साथ ी में वतमशान दौर के व्यक्क्तयों के प्रनत स ानुभूनत ोनी चाह ए, क्जनका

आराम ीन मगर प्रसन्न जीवन र्ानिंत और व्यवस्था के बबना भी स्वतत्रिं और आधथकश क्स्थरता के बबना भी अपने स्वय िंके उदधार के लिए कहिन पररश्रम के प्रनत समप्पतश ै। य ाँूतक कक गैर-राजनीनतक गुण भी राजनीनतक स्वायत्तता के अभाव में प्वकलसत न िींोते। बब्रहटर् र्ासन ने भारत को सुरिा और र्ानिंत तो दी, परिंतु इसमें ब ुत कुछ बाकी था। यहद म सवप्रशथम ककसी चीज को रखें तो व ै, आधथकश क्स्थरता और राजनीनतक सुरिा, िााकूँक आध्याक्त्मक स्वतत्रिंता भी आवश्यक ै। आध्याक्त्मकता भ्रिा चुकी ननरिंकुर् नौकरर्ा ी की सत्यननष्िा और जानकारी िोगों को न तो समथ शबना सकती ै और न ी उनमें ककसी तर की जीवतिंता ी प्रदान कर सकती ै। जब जीवन का झरना सूखने िगता ै, क्जन आदर्ों के लिए स स्त्राक्ब्दयों से नर्स्ि सिंघिंषरशत थीं एव िंचेतना की चमक और मन का आनदिं कम ोनिेगता ै, तब इसमें कोई आश्चय शन िीं ै कक भारतीय चेतना वजन उिानेसे न िीं, बक्ल्क बोझ ति े ी दबती ै। य ाँूबब्रटेन के कायों की म त्ता की चचाश व्यथ श ै, क्योंकक आध्याक्त्मक गुणवत्ता का इनत ास गुजर चुका ै। यहद वतमशान पीढी के नेता लसफश अतीत की प्रनतध्वनन से सतिंुष्ट ोंगे,े न कक ककसी स्वतत्रिं आवाज से तथा व मौलिक प्वचारक न ोकर लसफश बौदधधक मध्यस्थ बने र ेंगे,े तब य एक मर् शका प्वषय ोगा। बब्रटेन के िोग भारत के िोगों के दृक्ष्टकोण से पररधचत थे, चा े वे इसेबेचैनी, प्वद्रो या चुनौती क ें। वे अपनी सभ्यता को म ान् ्समझकर भारतीयों के पास िाए थे ेऔर उन् ोंनेम सूस ककया कक इसे ेबबना ह चककचा ट के ी ज्ञान और लर्ा के िेत्र में देना चाह ए। ककिंतु भारत की इस साम्राज्यवादी नीनत के प्रनत कोई स ानुभूनत न िींथी। व अपनी उन् ी िंपुरानी परिंपरा से धचपकी र ी। जो भी व्यक्क्त इसके अतीत के इनत ास से पररधचत ोगा, व इसकी आध्याक्त्मक क्स्थनत के बारे में स ानुभूनत रख सकता ै कक " प्रत्येक व्यक्क्त अपनेघर का स्वामी ोता ै। आतिंररक स्वतत्रिंता में राजनीनतक स्तिेप एक बडी अवमानना के रूप में देखा जाता ै। स्वराज की मागूँ एक ऐसी बाह्य अलभव्यक्क्त थी, क्जसका सबिंधिं आत्मा के सरिंिण की बेचैनी से था।

िााकूँक भप्वष्य उम्मीदों से भरा ुआ ै। यहद भारत स्वय िंमें स्वतत्रिंता ालसि करता ै, तब पक्श्चम से भारतीय मन को ब ुत स ायता लमि सकती ै। ह दिंू ूप्वचार मुनरो मत के अनुसार न ी िंबन सकता ै। य ाँूतक कक प्राचीन कािा में भी भारत ने आध्याक्त्मक रूप से अपने िोगों को पूण शसतिंुष्ट ककया था तथा अन्य िोगों की कल्पनाओंको भी न िींनकारा था। भारत ने एथेंस की बुदधधमत्ता का भी समथनश करते े ुए क ा था, " म दूसूरों के प्वचारों पर भी ध्यान देते े ैं और जो मसे अस मत ोतें, म उनसे ेभी मु ूँ न िींमोडतें।" भारत के बा र के प्रभाव के भय का अनुपात मारी स्वय िंकी कमजोरी और आत्मप्वश्वास की चा त के साथ भी ै। य भी सत्य ै कक आज मारे चे रे पर दुुःख की िकीरें ैं और उम्र के साथ मारे बाि भी सफेद ो चुके ैं। ममें से कुछ प्वचारकों के पास धचतिंन की बेचैनी ै और कुछ नकारात्मकता की ढिान पर ैं, और इस प्रकार म बौदधधक एकाकिंवासी बन चुके ैं। कुछ अस्वाभाप्वक पररक्स्थनतयों के कारण पक्श्चमी सस्िंकृनत के साथ अस योग का समय गुजर चुका ै। य सब ोनेके बावजूद पक्श्चमी सस्िंकृनत की सरा ना और इसेसमझनेकी कोलर्र् जारी ै। यहद भारत पक्श्चमी सभ्यता के म त्वपूण शतत्त्वों सेघ्रिु-लमि जाता ै, तब य एक ऐसी समानातिंर प्रकक्रया की पुनरावृप्त्त ी ोगी, जो कक भारतीय प्वचार के इनत ास में प ि े ेभी कई बार ो चुकी ै।

ऐसेबौदधधक और क्रिीन वग शके िोग जो कक पक्श्चमी सस्क्रिनत से अछूते र े ैंऔर वे राजनीनतक मुददों में भी तटस्थ ैं, वे ईसाई धम शलसदधातिं पर प्वश्वास न िीं करते ैं। इनके अनुसार उन् ें अब कुछ भी सीखना या त्यागना न िीं ै, वे लसफश अतीत के र्ाश्वत धम शपर अपनी नजरें गडाए अपनेकतव्शय का पािन कर र े ैं। उन् ें गिता ै कक अन्य बि काय शकर र े ैं और उनपर उनका ननयत्रिंण न िीं ै तथा व मसे जीवन के भ्रम का सामना करने के लिए क तैं। य व वग शथा, जो कक अच्छे समय में अधधक िोचदार और ताककशकता भरी दार्नशनकता के साथ धम शकी प्ववेचना करता था। इसने मेर्ा प्वधलमयशों और अप्वश्वास करनेवािों के सम्मुख प्वश्वास का बचाव और इसकी व्याख्या की तथा इसके लिए प्रतीक का भी इस्तेमाि ककया।

भारत के प्वचारक तकश में प्वश्वास की म ान् ्परिंपरा के वाररस ैं। मारे पुराने ऋप्षयों में नकि न करके कुछ रधचत करने की भावना थी। व अनुभवों की प ेलियों को ि करने और सत्य को नए ित्रों में तिार्नेके इच्छुक थे, जो कक मेर्ा पररवनततश ोते ेर ते ेथे। इनकी प्वरासत इनकी सोच पर कभी ावी न ो सकी। म अतीत के समाधान की नकि न िींकर सकते ैं, क्योंकक इनत ास कभी भी स्वय िंको दु ुराता न िीं ै। उन् ोंने अपनी पीढी के साथ जो कुछ भी ककया, उसे ेपुनः दु ुरानेकी जरूरत न िीं ै। में अपनी आखेंू खुिी रखते ुए अतीत से प्रेरणा िेकर समस्याओंं का समाधान तिार्ना चाह ए। सत्य अपनेआकार से न िींधचपका र ता ै, व मेर्ा इसे ेपररवनततश करता र ता ै। य ााँतक कक पुराने र्ब्द भी नए तरीकों से इस्तेमाि ोते े ैं। वतमशान का दर्नश अतीत से न ोकर वतमशान से ी सबिंधिंधत र ता ै। य जीवन के साथ उतना ी मौलिक ोगा, क्जतना य अलभव्यक्त ोता ै। चूँकक वतमशान अतीत की ननरिंतरता के साथ लििंग्न ै, इसलिए इसकी अतीत की ननरिंतरता के साथ असबिंदधता न िीं ै। कुछ कट्टरपथिंी य तकश देते े ैं कक सत्य समय से प्रभाप्वत न िीता ै। इसे े सूयास्शत की सुदिंरता या मा ाँका अपनेबच्चे ेसे प्रेम का स्थानापन्न न िींबनाया जा सकता। सत्य अपररवतनशीय ो सकता ै, परिंतु य क्जस रूप में र ता ै, उसमें पररवतनश के तत्त्व मौजूद र ते े ैं। म अतीत से अपनी आत्मा तो िेसकते ैं, पर म र्रीर और धडकन वतमशान से ी िेते ैं। म य भिू चुके ैं कक आज का धम शसहदयों के पररवतनश का उत्पाद ै और इसका कोई कारण न िीं ै कक िबिं ेसमय से इसका रूप पररवनततश क्यों न ी ि ो सका। वैसेइसके साथ प्वश्वसनीयता बनाए रखना सभिंव ै, कफर भी य सपिंूण शआत्मा को प्वकृत कर सकता ै। यहद दो जार सिा प ि ेके ह दिंू ूज्ञानी आज कफर सहदयों के बाद कफर से धरती पर आ जाए,ूँ तब भी वे अपनेपुराने सच्चे े अनुयानययों को र्ायद ी य ाँू पाएगेंू।

आज स वधनश की एक ब ुत बडी मात्रा इकट्ठा ो गई ै और इसनेजीवन के मुक्त प्रवा को अवरुदध कर हदया ै। य भी क सकते े ैं कक सडा ुआ अतीत ककसी भी िा में स योग न िीं कर सकता ै, य केवि बीमार की पीडा ी बढाता ै। रूहढवादी मक्स्तष्क को पररवतनश की जरूरत समझते े ुए स्वय िंको इसके लिए तैयार करना चाह ए। इसलिए में म सूस ोता ै कक दर्नश का पररिेत्र् एक प्वधचत्र नछद्रान्वेर्ी दूरूदलर्तशा और अदार्नशनक गुण का लमश्रण ोता ै। अतः भारतीय प्वचारकों को अपनी ऊजा शका इस्तेमाि पुराने प्वश्वासों के अस्थायी स वधनश को दूरू करनेतथा प्वज्ञान के साथ धम शको जोडने एव िंपुराने प्वश्वासों के आधार के प्वलभन्न प्रभावों को सगिंहित करने के लिए ोना चाह ए, परिंतु दुभाग्शयवर् कुछ पररषद इन समस्याओ िंके समाधान

तिार्ने के बजाय अपनेअनुकूि पुरातन प्वषयों में ी सिंग्न र ते े ैं। य प्वरे्षज्ञों का एक तरफ झुकु ुआ त्रि बन चुका ै। राष्र की धालमकश लरि्ा का प्वकास न िीं ो सका ै। ऐसा न िींदेखा गया ै कक आध्याक्त्मक प्वरासत पर कुछ िोगों का एकच्छत्र स्वालमत्व ै। यहद वतमशान किा की मृत्यु से इसेबचाना ै, तब प्वचारों को प्रसाररत करना ी ोगा। उपननषद, गीता, बौदध-वचन, जो कक मानव मन को समथ शकरते े ैं, यहद मानव पर अपना प्रभाव न छोड,ें तब य आश्चय श ी ोगा। इससेप िे ेकक ब ुत देर ो जाए, राष्रीय जीवन को भारतीय प्वचारों के लिए पुनव्यवशक्स्थत करना चाह ए। वैसेय कोई न िींबता सकता कक पुराने मजबूत पेडों पर फ़ू कब खखिेंगे ेया उनपर फि कब िगेंगे।

क्जन िोगों पर पक्श्चमी सस्कृिनत का अधधक प्रभाव न िींपडा ै, वे प्वचारों और व्यव ार के अथ शमें रूहढवादी ैं तथा कुछ ऐसे भी ैं, जो कक पक्श्चमी प्वचार की पदधनतयों में लर्क्षित ुए ैं, इन् ोंने तार्ा भरी सभ्यता को धाकर से मुक्त के दर्शन के लिए भी कते तथा ैं। य परिंपराओंकौ बरदाश्त न करना और किा की बुदधधमत्ता के प्रनत सदिें दरर्ाता ै। 'प्रगनतर्िीि' का य दृक्ष्टकोण आसानी सेसमझ में आ जाता ै। भारत की आध्याक्त्मक प्वरासत ने भारत की आक्रमणकाररयों और इसे ेनष्ट करनेवािों से रि़ा न िींकी थी। ऐसा मािूम पडता ै कक य वतमशान क्स्थनत के साथ त्रुहटपूण शभी थी या इसनेइसे ेधोखा हदया था। य सभी पक्श्चम की भौनतक उपिक्धधयों की नकि के प्रनत उत्सुक थे ेऔर इन् ोंने प्राचीन सभ्यता की जडों को नुकसान प ुँचाया, ताकक पक्श्चम से आनेवािी नवीनताओ िंको स्थान लमि सके। भारतीय प्वचार य ूँके प्वश्वप्वदयािायों में अध्ययन का स्थान अभी तक न िींपा सका ै और अभी भी प्वश्वप्वदयािाय के दर्नश र्ास्त्र के ित्र में य प्वषय म त्त्व ीन ै। मैकिो की दी गई लर्ि़ा नीनत का सास्कृिनतक म त्त्व एक तरफ से इस पर भार बढाए ुए ै। साथ- ी-साथ य पक्श्चमी सस्कृिनत को में न भूिने देनेके लिए भी सजग ै तथा इसनेमारी अपनी सस्कृिनत से में प्यार करने में भी मारी स ायता न िीं की। कुछ द तक मैकिो सफि ो गए, क्योंकक मने भारतीयों को अग्रेंजों से भी अधधक अग्रेंज बनाने के लिए लर्क्षित कर हदया ै। स्वाभाप्वक रूप सेऐसे िोग भारतीय सस्कृिनत के इनत ास में तीव्र प्वदेर्ी आिोचना करनेमें साथ न ी िंथे। इन् ोंनेभारतीय सस्कृिनत को अस मनत, त्रुहट और अधिंप्वश्वास के रूप में ी देखा। इनमें से कुछ िोगों ने य भी घोषणा कर दी कक यहद भारत उन्नत ोना चा ता ै, तब इिंग्िैंड उसकी 'आध्याक्त्मक माता' और ग्रीस उसकी 'आध्याक्त्मक नानी' ोनी चाह ए। चूँकक इनका धम शमें प्वश्वास न िीं ै, इसलिए वे ह दिंू ूधम शकी जग ईसाई धम श का प्रस्ताव न िींदेते े ैं। वतमशान युग के भ्रम और पराजय के लर्कार ये िोग भारतीय प्वचार के प्रनत प्रेम को राष्रवादी कमजोरी बतातें।

य भी एक प्वधचत्र घटनाक्रम ै कक जब भारत का पक्श्चम की नजरों में प्वकृत ोना समाप्त ो र ा ै, तब य अपने ी बेटें की आखूँों में व ी बनना र्ुरू ो र ा ै। पक्श्चम ने भारत के दर्नश को बेकार, इसकी किा को बचकाना, इसकी कप्वता को प्रेरणा ीन और इसके धम शको प्वकृत तथा नैनतकता को जगिंिी बताने की भरपूर कोलर्र् की थी। ककिंतु अब पक्श्चम को म सूस ो र ा ै कक उसकी सोच स ी न िींथी, जबकक ममें से कुछ का सोचना ै कक वे बबल्कुि स ी थे। य भी सच ै कक आज के इस युग में व्यक्क्त को पुरानी सस्कृिनत में न िींढकिा

जा सकता ै और उसे ेसदिं के खतरों सेभी न िींबचाया जा सकता, मगर में य न िीं भिूना चाह ए कक म एक बनी ुई नीविं पर बे तर इमारत बना सकते े ैं, बजाय इसके कक म पुरानी इमारत को ढ ाकर नई नैनतकता और

जीवन की इमारत बनाए।ूँ म अपनेजीवन के स्रोत सेअिग न िीं ो सकते ैं। दार्नशनक योजनाए ूँजीवन की उत्पाद ैं तथा मारे इनत ास की प्वरासत व भोजन ै, क्जस पर म ननभरश ैं।

रूहढवाहदयों को प्राचीन प्वरासत की भव्यता और आधुननक सस्क्ृनत की ईश्वरप्व ीनता में प्वश्वास ै और सुधारवादी भी प्राचीन प्वरासत की व्यथतशा और ताककशकता के स्वाभाप्वक मूल्यों पर यकीन करते े ैं। इन दृक्ष्टकोणों पर ब ुत कुछ क ा जा चुका ै, परिंतु भारतीय प्वचारों का इनत ास जब िीक से पढा गया, तब इसने में दोनों में ी त्रहुटया ूँबताईं। जो िोग भारतीय सस्क्ृनत को बेकार बताते े ैं, वे इससे अनजान ैं और जो िोग इसे ेपूरी तर सिीक बताकर इसकी प्रर्सिा करते े ैं, वे भी इससे अनलभज्ञ ैं। सुधारवादी और रूहढवादी दोनों ी पुरानी लर्ि और नई उम्मीद के लिए खडे े ैं। इन् ें एक-दूसूरे के पास आना चाह ए और एक-दूसूरे को समझना चाह ए। म इस ससिंार में अपनेआप अकेि ेन िींजी सकते, ज ा ूँवाई ज ाज, स्टीमर, रेिवेऔर टेिीग्राफ जैसी चीजें सभी िोगों को आपस में एक-दूसूरे से जोड र ी ैं। मारे प्वचारों की प्रकक्रया को दुननया की प्रगनत के साथ व्यव ार करना ी चाह ए। रुकी ुई व्यवस्था क्स्थर जि की भानूँत ाननकारक कीटाणु ी उत्पन्न करेगी, जबकक प्रवा मयी नहदयों का जि जीवन प्रदान करता ुआ प्रेरणा का स्रोत बनाएगा। अन्य िोगों की सस्क्ृनतयों को अपनाने में कोई बुराई न ी िै ै, में केवि इसके अच्छे तत्त्वों को बढाना और र्ुदध करके इसे ेअपनी अनुकूिता प्रदान करना ै। इन तत्त्वों को लमिाने की स ी पदधनत के बारे में गािंधी, टैगोर, अरप्वदिं घोष और भगवान दास ने लिखा भी ै। इनमें म म ान् ्सस्क्ृनत की झिक भी देख सकते ैं। भारतीय अतीत की आदर्वशादी मानवता के साथ इन् ोंनेपक्श्चमी प्वचारों की भी प्रर्सिा की ै। ये िोग प्राचीन जिस्रोत की र्ुदध नालियों के दवारा भूखी और प्यासी धरती को सीचिंना चा तेथे, मगर म जो भप्वष्य देखना चा ते ैं, व व्याव ाररक रूप से अक्स्तत्व में न िीं ै। राजनीनतक उत्सा का अभाव, जो कक भारत के बे तरीन मक्स्तष्क की ऊजा शको भी अपनेमें समेट चुका ै, परिंतु नए प्वश्वप्वदयािायों में भारतीय प्वचार के अध्ययन के बढते ेजोर के साथ, क्जसमें पुराने के साथ नए प्वचार भी र्ालमि ैं, य र्ुभारिंभ ो सकता ै। सरिंिण का बि, जो कक जीवन की ह मायत करता ै, व आनेवािीहदनों में ककसी तर की उपिक्धधयों की सभिंावना न िींरखता ै। आज भारतीय दर्नश के सामने समस्या य ै कक या तो इसे ेएक पथिं तक सीलमत करके ककसी िेत्र् तक ी प्रनतबधिंधत कर हदया जाए, क्जसका वतमशान तथ्यों से सबिंधिं न ो या कफर इसे ेजीविंत और वास्तप्वक बनाते े ुए मानवीय प्रगनत के साथ जोडकर आधुननक प्वज्ञान और भारतीय दार्नशनकों के आदर् शके बढते ेज्ञान के साथ लमिाया जाए। इन दोनों रूपों में भप्वष्यवाद वािे प्वचार के साथ बे तर ोगा। पुराने प्वचारों के साथ ननष्िा रखते े ुए दर्नश का लमर्न मारे दृक्ष्टकोण को प्वस्तृत करना ै। भारतीय दर्नश वतमशान के साथ केवि तभी न्यायोधचत ोगा, जब य जीवन को प्रगनतर्ीि बनाने में सिम ोगा। भारतीय दर्नश का प्वकास मारा उत्सा वधनश करता ै। मारे म ान् ्प्वचारक, जैसे ेयाज्ञवल्क्य, गागी, बुदध, म ावीर, गौतम, कप्पि, र्िंकर, रामानुज, माधव, वल्िभ और अनधगनत ऐसे िोगों ने इस राष्ट्र को वैचाररक समृदधध प्रदान की ै।

डॉ. एस. राधाकृष्णन

डॉ. एस. राधाकृष्णन ने ह दिंू ूधम शके केंद्रीय लसदधातिों, इसके दार्नशनक और • आध्याक्त्मक लसदधातिं, धालमकश अनुभव, नैनतक चररत्र और पारिंपररक धमों की व्याख्या की ै। ह दिंू ूधम शपररणाम न िींएक प्रकक्रया ै, प्वकलसत ोती परिंपरा ै, न कक ननक्श्चत र स्योदघाटन-जैसा कक अन्य धमों में ोता ै। उन् ोंनेईसाई धम,श इसिाम और बौदध धम शकी तुिना ह दिंू ूधम शके सदिंभ शमें की ै और इस बात पर बि हदया ै कक इन धमों का अनिंतम उददेश्य सावभशौलमक स्वय िंकी प्राक्प्त ै। धम शको िेकर राधाकृष्णन का प्वश्ेषिण परम बौदधधक और सतुिंलित ै तथा उनके व्याख्यानों को प्वश्व भर में ाहदशक प्रनतकक्रया लमिी ै। इस पुस्तक के िेखे इस म ान् ् दार्नशनक के मन को प्रनतबबबिंबत करते े ैं, क्जनका अलभवादन एक और प्ववेकोनदिं के रूप में ककया गया ै।

ह दिंू ूधम शका प्व िंगम हदग्दर्नश करानेवािी पिनीय पुस्तक।

भारत के प्रथम उपराष्ट्रपनत और दप्वतीय राष्ट्रपनत र े डॉ. सवपशल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 लसतबिंर, 1888 को तलमिनाडु में ुआ। वे 20वी िंसदी में भारत के तुिनात्मक धमर्शास्त्र और दर्नशर्ास्त्र के प्रख्यात प्वदवान् ्थे। वे भारतीय सस्ंकृनत के सविं ाक, प्रख्यात लरि्प्वद, म ान् ्दार्नशनक और एक आस्थावान ह दिंू ू प्वचारक थे। उनका जन्महदन भारत में 'लरि्क हदवस' के रूप में मनाया जाता ै। डॉ. राधाकृष्णन समस्त प्वश्व को एक लरि्ािय मानते ेथे। उनकी मान्यता थी कक लरि्ा के दवारा ी मानव-मक्स्तष्क का सदुपुयोग ककया जाना सभिंव ै। इन हदनों जब लरि्ा की गुणात्मकता का ह्रास ोता जा र ा ै और गुरु-लर्ष्य सबिंधिों को पप्वत्रता को ग्र ण िगता जा र ा ै, में प्वश्वास ै कक उनका पुण्य स्मरण कफर एक नई चेतना पैदा कर सकता ै।

सम्मान-पुरस्कार : भारत रत्न, टेंपिटन प्राइज, जमनश बुक रेड का र्ानिंत पुरस्कार और यूक्रेन का ऑडरश ऑफ मेररट।